नई सृष्टि का स्वरुप

द्वारा

ए. एल. एवं जॉयस गिल

Gill Ministries
www.gillministries.com

<u>लेखक के बारे में</u>

ए. एल. एवं जॉयस गिल विश्व विख्यात वक्ता, लेखक एवं शिक्षक हैं। ए. एल. की प्रेरिताई की सेवकाई उन्हें विश्व के पचास से अधिक देशों में ले गई है, जिसके द्वारा उन्होंने एक लाख से अधिक की भीड़ को प्रचाार किया एवं कई लाख लोगों को रेडियो एवं दूरदर्शन के द्वारा प्रचार किया है!

उनकी अत्यधिक रुप से बिकने वाली पुस्तक एवं पुस्तिकाओं की बीस लाख से अधिक प्रतियाँ संयुक्त राज्य में बिक चुकी हैं। उनके लेख, जिनका अनुवाद बहुत सी भाषाओं में हो चुका है, वे विश्व भर में विभिन्न बाईबल स्कूलों एवं सेमिनारों में उपयोग किये जाते हैं।

परमेश्वर के वचन के जीवन बदल देने वाले शक्तिशाली सत्य जो कि उनके सामर्थी प्रचार, शिक्षा, लेख एवं विडियो एवं ऑडियो टेप सेवकाई में पाए जाते हैं, उन्होंने दूसरों के जीवनों पर अमिट प्रभाव डाला है।

परमेश्वर की अद्‌भुत महिमा एवं उपस्थिति उनके स्तूति एवं आराधना के सेमिनारों में अनुभव की जाती है, जिसके द्वारा विश्वासी परमेश्वर के सच्चे एवं अन्तरंग आराधक बनने के रहस्यों को खोजते हैं। विश्वासियों के अधिकार विषय पर उनकी शिक्षाओं के द्वारा बहुत से लोगों ने विजय एवं साहस की नई एवं उत्साहजनक दिशाओं की खोज की है।

गिल लोगों ने बहुत से विश्वासियों को उनकी अपनी परमेश्वर प्रदत सेवकाईयों में आगे बढ़ने का प्रशिक्षण दिया है, जिसमें परमेश्वर की चंगाई की सामर्थ उनके अपने हाथों के द्वारा बहती है। बहुतों ने स्वाभाविक रुप से अलौकिक होना सीखा जब वे अपने दैनिक एवं सेवकाई जीवनों में पवित्र आत्मा के सभी नौ वरदानों का उपयोग करना सीख गए।

ए. एल. एवं जॉयस दोनों को धर्मविज्ञान की स्नातकोत्तर (मास्टर्स) उपाधियाँ (डिग्रियाँ) प्राप्त हैं। ए. एल. ने विजन क्रिश्चियन विश्वविद्यालय से धर्मविज्ञान में डॉक्टर ऑफ फिलोसफी की डिग्री भी अर्जित की हुई है। उनकी सेवकाई दृढ़ रुप से परमेश्वर के वचन पर आधारित, यीशु पर केन्द्रित, विश्वास में मजबूत एवं पवित्र आत्मा के द्वारा सामर्थवान है।

उनकी सेवकाई परमेश्वर के पिता रुपी हृदय के प्रेम का प्रदर्शन है। उनके प्रचार एवं शिक्षाएं सामर्थी अभिषेक के साथ होती हैं, जिनमें चिन्ह, चमत्कार, एवं चंगाई के आश्चर्यकर्म होते हें, जहाँ परमेश्वर की सामर्थ के प्रवाह में बहुत से लोग अचेत हो जाते हैं।

जो लोग उनकी सभाओं में उपस्थित होते हैं उनमें से बहुत से लोगों ने आत्म जागृति के चिन्हों को पवित्र हँसी, प्रभु के सम्मुख क्रन्दन की लहरों एवं परमेश्वर की अद्‌भुत सामर्थ एवं महिमा के प्रगटीकरण के द्वारा अनुभव किया है।

f'k{kdksa ,oa fo|kfFkZ;ksa ds fy,

यीशु ने कहा, "पूरा हुआ।" यीशु के द्वारा छुटकारे का कार्य पूरा हो चुका था तब भी हम बहुत से लोगों को पराजय में क्यों देखते हैं? क्यों बहुत से विश्वासी रोगों में जी रहे हैं? क्यों परमेश्वर के लोग दुष्टात्माओं की शक्तियों के बन्धन में हैं?

शैतान ने हमें धोखा दिया है! समय के साथ, हम अपने छुटकारे में सम्मिलत अद्भुत बातों के सत्य को खो चुके हैं। प्रेरित पौलूस ने लिखा है:

> **"इसलिए यदि कोई मसीह में हैं तो वह एक नई सृष्टि है ; पुरानी बातें बीत गईं ; देखो सब कुछ नया हो गया।" –2 कुरिन्थियों 5:17**

"नई सृष्टि का स्वरुप" नामक इस अध्ययन के जीवन को परिवर्तित कर देने वाले प्रकाशन विश्वासियों को दोष, दण्ड, व्यर्थता, हीनता एवं अयोग्यता की भावनाओं से स्वतंत्र करेंगे ताकि वे मसीह के स्वरुप के अनुरुप हो सकें। यह विश्वासियों को स्वतंत्र करेगा कि वे उन सब चीजों का आनन्द ले सकें, उन्हें कर सकें तथा उन्हें प्राप्त कर सकें जो होने, करने एवं प्राप्त करने के लिए वे परमेश्वर के स्वरुप में बनाए गए थे।

यह अध्ययन मसीह यीशु में एक नई सृष्टि होने के अर्थ के शक्तिशाली सत्यों को प्रगट करेगा। वे मौलिक सत्य हैं जो कि प्रत्येक विश्वासी के लिए "अत्यन्त आवश्यक" हैं।

नई सृष्टि से सम्बन्धित परमेश्वर के वचन के सत्यों से आप स्वयं को जितना अधिक भर देते हैं, उतना ही अधिक से सत्य आपके मस्तिष्क से आपकी आत्मा में उतरते चले जाएंगे। यह पुस्तिका आपको इन सत्यों के दूसरों में समाहित करने में उनयोग हेतू रुपरेखा प्रदान करेगी।

प्रभावी शिक्षण के लिए जीवन के व्यक्तिगत उदाहरणों की आवश्यक्ता होती है। लेखक ने उन्हें इस पुस्तक में नहीं रखा है ताकि शिक्षक अपने स्वयं के या दूसरों के भरपूर अनुभवों का उपयोग कर सकें जिनसे विद्यार्थी स्वयं को जोड सकें। हमेशा यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि यह पवित्र आत्मा है जो कि हमें सब बातें सिखाने के लिए आया है, इसलिए जब हम अध्ययन कर रहे हैं या जब हम सिखा रहे हैं, हमें हमेशा पवित्र आत्मा के द्वारा सामर्थ पाए हुए एवं अगुवाई पाया हुआ होना चाहिए।

यह अध्ययन व्यक्तिगत या समूह अध्ययनों, बाईबल स्कूलों, सण्डे स्कूलों एवं गृह समूहों के लिए सर्वोत्तम है। अध्ययन के दौरान शिक्षक एवं विद्यार्थियों को इस पुस्तिका की एक-एक प्रति रखना महत्त्वपूर्ण है। अधिक संख्या में लेने पर छूट उपलब्ध है।

अच्छी पुस्तकों पर हमेशा कुछ लिखा रहता है, उन्हें रेखांकित किया होता, उन पर मनन किया जाता है एवं उन्हें जीवन का हिस्सा बना लिया जाता है। हमने आपके नोट्स एवं टिप्पणियों के लिए स्थान छोड़ा हुआ है। इसका प्रारुप ऐसा बनाया गया है जिससे तुरन्त किसी विषय को ढूँढा जा सकता है ताकि आप उन पर पूर्निविचार कर सकें और आपको उन्हें पुन: ढूँढने में मदद मिल सके। इस विशेष प्रारुप से प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह सम्भव होता है कि जब वे एक बार इस सामग्री का अध्ययन कर चुके होते हैं तो वे दूसरों को भी इसकी मुख्य बातें सिखा सकने में सक्षम होते हैं।

पौलूस ने तीमुथियुस को लिखा:

> **"और जो बातें तुमने मुझसे बहुत से गवाहों के सम्मुख सुनी हैं उन्हें विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंप दो जो दूसरों के सिखाने के योग्य हो।" –2 तीमुथियुस 2:2ब**

MINDS (Ministry Development System) के प्रारुप में इस पाठ्यक्रम का स्वरुप व्यक्तिगत रुप से भाग लेने वाले बाइबल पाठ्यक्रम के रुप में किया गया है, जो किसी कार्यक्रम के प्रशिक्षण के लिए विशेष रुप से विकसित किया गया है। यह परिकल्पना जीवनों, सेवकाई, एवं विद्यार्थियों के भविष्य में अध्ययन में बहुगुणन के लिए तैयार किया गया है। पुराने विद्यार्थी, इस पुस्तिका के उपयोग के द्वारा इस पाठ्यक्रम को आसानी से दूसरों को सिखा सकते हैं।

विषय सूची

पाठ संख्या	पाठ	पृष्ठ
पाठ एक	उसके स्वरुप मे बनाए गए	7
पाठ दो	हमारे द्वारा पिता का स्वरुप	16
पाठ तीन	हमारे द्वारा पुत्र का हमारा स्वरुप	27
पाठ चार	नई सुष्टि का स्वरुप	39
पाठ पाँच	हमारे स्वयं के पुराने स्वरुप का बदलाव	47
पाठ छः	मसीह में हमारा स्वंरुप	59
पाठ सात	नई सृष्टि के अधिकार	71
पाठ आठ	नई सृष्टि के फायदे	79
पाठ नौ	दिव्य स्वभाव के सहभागी	88
पाठ दस	परमेश्वर का वचन एवं नई सृष्टि	100

पाठ एक

उसके स्वरुप मे बनाए गए

परिचय

'नई सृष्टि का स्वरुप' का अध्ययय हमें, हम मसीह मे कौन हैं इसका एक शक्तिशाली प्रकाशन प्रदान करेगा-एक नई सृष्टि होने का अर्थ क्या होता है। यह दोष, दण्ड, असक्षमता एवं हीनता की भावनाओं से स्वतंत्रता लाएगा। यह हमें मसीह यीशु के साथ एक होने का क्या अर्थ होता है उसके एक प्रेरणादायक, एवं जीवन परिवर्तित कर देने वाले प्रकाशन में हमें दृढता के साथ ले जाएगा।

हम यह जान पाएंगे कि परमेश्वर के महान छुटकारे के कार्य के द्वारा वह हमें क्या बनाने की मनसा रखता है। हम अपने बारे में निम्नलिखित प्रकाशन पाएंगे :

- नए जन्मे
- एक पुनः रचित आत्मा
- एक नई सृष्टि

प्रेरित पौलूस ने ये शब्द लिखे :

2 कुरिन्थियों 5:17-"इसलिए, यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गईं ; देखो सब कुछ नया हो गया!"

विश्वासियों के रुप में हम मनुष्य जाति की एक नई नस्ल हैं, एक "नए जन्मों" की जाति जिनमें परमेश्वर का जीवन है। हम मसीह में नर्ह सृष्टि हैं। इस अध्ययन में बहुधा विश्वासियों को "एक नई सृष्टि" के नाम से सम्बोधित किया जाएगा।

यह अध्ययन यीशु कौन है एवं हम उसमें कौन हैं इसका एक नया प्रकाशन प्रदान करेगा।

इस शक्तिशाली प्रकाशन के साथ हम विश्वासियों के रुप में स्वतंत्रता, अधिकार, दृढ़ता, सामर्थ, एवं अपने जीवन तथा सेवकाईयों मे विजय की एक प्रेरणादायक एवं नई दिशा में चलना प्रारम्भ करेंगे।

हम स्वयं को दृढ़तापूर्वक निम्नलिखित की घोषणा करते हुए पाएंगे:

"मैं जानता हूँ कि मैं मसीह में कौन हूँ!
मैं वही हूँ जो वो मेरे बारे में कहता है कि मैं हूँ!
मैं वो कर सकता हूँ जो वो कहता है कि मैं कर सकता हूँ!
मेरे पास वो हो सकता है जो वो कहता है कि मेरे पास हो सकता है!"

मनुष्य जाति-उसके स्वरुप मे बनाई गई

सृष्टि के रुप में हम क्या हैं, इसे समझने के लिए हमें यह समझने की आवश्यक्ता है कि स्त्री और पुरुष को जब पहली बार बनाया गया था तो क्या होने के लिए बनाया गया था। हमें यह समझना आवश्यक है कि जब परमेश्वर ने स्त्री एवं पुरुष को अपने स्वरुप में

बनाया तथा उसे पृथ्वी के ऊपर पूर्ण अधिकार दिया तो उसके पास एक उद्देश्य एवं योजना थी।

उत्पत्ति 1:26–28 "तब परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरुप के अनुसार अपनी ही समानता में बनाएँ ; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों ; और घरेलु पशुओं और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हें, अधिकार रखें।"

तब परमेश्वर में मनुष्य को अपने स्वरुप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरुप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया ; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।

और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उनसे कहा, "फूलों–फलों, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो ; और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।"

एक स्वरूप

हम परमेश्वर के स्वरुप में बनाए गए थे। नई सृष्टि के रुप में हम उसके पुत्र के स्वरुप में स्थापित किये जाते हैं। कोई भी स्वरुप कृति वास्तविक की एक दम समानता में होती है। वैबस्टर अनब्रिज्ड डिक्शनरी के अनुसार "स्वरुप" ("Image") शब्द का अर्थ है:

- एक नकल या किसी एक व्यक्ति का प्रतिनिधित्व
- किसी दर्पण से प्राप्त चित्र का दृश्य चित्रांकन
- किसी एक व्यक्ति के हू–ब–हू समान कोई और व्यक्ति ; एक प्रतिकृति, एक नकल, या किसी के समान
- एक स्पष्ठ प्रतिनिधित्व

परमेश्वर ने आदम की रचना ठीक अपनी समानता में की। उसने उसको इसलिए बनाया कि वह ठीक परमेश्वर की समानता मे हो–परमेश्वर के प्रतिबिम्ब का शारीरिक प्रगटीकरण, उसके परमेश्वर के समान प्राण मे, और आत्मा में, जो परमेश्वर के जीवन तथा श्वॉस के द्वारा जीवित था।

मनुष्य की सृष्टि इसलिए की गई थी वह पृथ्वी पर परमेश्वर का स्वरूप एवं महिमा बने।

1 कुरिन्थियों 11:7अ "पुरूष को अपना सिर ढाँकना उचित नहीं, क्योंकि वह परमेश्वर का स्वरुप और महिमा है।"

एक त्रिएक जन

परमेश्वर ने कहा, "आओ हम मनुष्य को अपने स्परुप में बनाएं।" उसने कहा "हमारे" क्योंकि यद्यपि परमेश्वर एक है, फिर भी तीन भिन्न व्यक्तियों में प्रगट हुआ है।

- परमेश्वर पिता
- परमेश्वर पुत्र
- परमेश्वर पवित्र आत्मा

स्त्री एवं पुरुष भी परमेश्वर के स्वरुप में त्रिएक जीव के रुप में रचे गए।

- ***हम एक आत्मा हैं।***

हमारी आत्मा हमारा परमेश्वर के प्रति जागरुक क्षेत्र है जो कि हमारे आत्मिक क्षेत्र से सम्बन्ध रखता है-हमारा एक ऐसा हिस्सा जो परमेश्वर के साथ सम्बन्ध एवं संगति रखता है।

- ***हम में प्राण होता है।***

  हमारा प्राण हमारा वह हिस्सा है जो हमारे मानसिक क्षेत्र से सम्बन्ध रखता है। ये हमारी भावनाएं, हमारी इच्छाएं एवं हमारी बुद्धिमत्ता होता है यह हमारा वह हिस्सा होता है जो सोचता एवं विचार-विमर्श करता है।

- ***हम एक शरीर मे रहते हैं।***

  हमारा शरीर हमारा भौतिक हिस्सा है-वह घर जिसमें हमारा प्राण एवं आत्मा रहती है।

जैसे परमेश्वर के तीन व्यक्ति अलग और विशिष्ठ हैं, और फिर भी वे एक परमेश्वर हैं, ठीक वैसे ही हमारी आत्मा, प्राण और शरीर मिलकर एक ऐसा वास्तविक व्यक्ति बनाता है जैसा कि परमेश्वर चाहता है कि हम हों।

अपनी पत्री मे प्रेरित पौलूस ने हमारी त्रीएकता के बारे में लिखा है,

1 थिस्लुनिकियों 5:23, "शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे, और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।"

हमारे पास हमारी नई सृष्टि के बारे में प्रकाशन होना चाहिए और उसी प्रकाशन के द्वारा परमेश्वर हमारे प्राणों एवं शरीरों को पुण: वैसा ही कर देगा जैसा होने के लिए वे बनाए गए थे। ऐसा होने के द्वारा हम प्रभु यीशु मसीह के द्वितीय आगमन पर "पूर्णत: शुद्ध किए गए" एवं "निर्दोष सुरक्षित रहेंगे!"

परमेश्वर के जीवन के साथ

हम जानते हैं कि परमेश्वर ने स्वयं अपने हाथों से आदम को अपने ही स्वरुप में सृजा और फिर उसके नथनों में जीवन का श्वॉस फूँक दिया।

उत्पत्ति 2:7-"तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वॉस फूँक दिया ; और आदम जीवित प्राणी बन गया।"

परमेश्वर का जीवन जीवित रहने की स्थिति से कहीं अधिक है। यह समस्त जीवन का स्रोत है।

- "जोई" (Zoe) जीवन

"जीवन" के लिए नए नियम में दो महत्वपूर्ण यूनानी शब्दों का प्रयोग हुआ है। "सूखे" ("Psuche") का अर्थ है प्राकृतिक या मानवीय जीवन। "जोई" ("Zoe") का अर्थ है जीवन एवं स्वयं परमेश्वर की प्रकृति! यह 'जोई' जीवन, अर्थात परमेश्वर का जीवन एक प्रकृति है जो प्रत्येक नए जन्में विश्वासी में डाली गई है

यह कितने उत्साह की बात है-हम परमेश्वर के जीवन एवं स्वभाव के द्वारा जीवित हैं। जब आदम और हव्वा ने पाप किया तो उन्होनें परमेश्वर के 'जोई' जीवन को

खो दिया, लेकिन जब हम नया जन्म पाते हैं, तब हमारी आत्मा को परमेश्वर के जीवन के द्वारा जीवित बना दिया जाता है।

सिर्फ परमेश्वर के जीवन मे ही सृजन करने की शक्ति पाई जाती हैं मनुष्य की सृष्टि के दौरान, पृथ्वी की धूल जीवित प्राणी बन गई क्योंकि उसमें परमेश्वर का जीवन फूँका गया था।

यूहन्ना 1:3 ,4 – "सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।"

➢ ***परमेश्वर की ज्योति के साथ***

परमेश्वर का जीवन ज्योति है; तथा यह ज्योति, या ज्येतिर्मय महिमा आदम और हव्वा के पाप करने से पहले उनकी ज्योति बन गई।

1 यूहन्ना 1:5 – "जो समाचार हम ने उस से सुना और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है कि परमेश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं।"

यह बहुत अधिक सम्भव है कि पतन से पूर्व आदम और हव्वा परमेश्वर की ओर से इस ज्योति के वस्त्र पहने हों जो कि परमेश्वर की ज्योतिर्मय महिमा थी।

➢ ***परमेश्वर की सिद्धता के साथ***

हम जानते हैं कि आदम और हव्वा के शरीर में पूर्ण स्वास्थ्य सामर्थ एवं शक्ति पाई जाती थी क्योंकि ये परमेश्वर के जीवन के हिस्से हैं।

परमेश्वर के जीवन का श्वॉस उनके रक्त के द्वारा प्रत्येक कोशिका में प्रवाहित हो रहा था और उन्हें सम्पूर्ण स्वास्थ्य एवं अनन्त जीवन प्रदान कर रहा था। आदम और हव्वा को हमेशा के लिए जीवित रहने हेतू बनाया गया था। जब तक उनमें परमेश्वर का जीवन था वे मर नहीं सकते थे।

आदम और हव्वा का प्राण (मस्तिष्क, भावनाएं एवं इच्छाएं) स्वभाव में परमेश्वर की तरह थीं। उनके प्राणों में परमेश्वर का जीवन था, तथा उनके मन, इच्छाएं एवं भावनाएं परमेश्वर के साथ एक थीं।

उनकी आत्माएं सिद्ध अर्थात परमेश्वर के साथ एक थीं।

प्रभुत्व दिया गया

जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा की सृष्टि की तो परमेश्वर ने उनके बारे में पहली बात यह कही कि, "प्रभुता रखें।"

उत्पत्ति 1:26,– "फिर परमेश्वर ने कहा," हम मनुष्य को अपने स्वरुप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ ; और वे समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।"

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को सम्पूर्ण अधिकार एवं प्रभुत्व दिया कि वे पृथ्वी पर शासन करें। परमेश्वर ने पृथ्वी के अलावा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पर शासन करने के लिए अधिकार और प्रभुत्व अपने पास रखा। यहाँ पर उसने यह अधिकार अपनी नई सृष्टि को दिया जिसे उसने ठीक अपनी तरह होने के लिए सृजा था।

सृजन की शक्ति के साथ

जैसे परमेश्वर की शक्ति ने सम्पूर्ण विश्व की सृष्टि की, ठीक उसी तरह आदम और हव्वा को भी कल्पना करने, विश्वास करने एवं सृष्टि करने की शक्ति दी गई थी।

क्योंकि उनकी इच्छाएं परमेश्वर के समान ही थीं, इसलिए उनके अन्दर पाए जाने वाले परमेश्वर के सृजनात्मक जीवन का गलत उद्देश्यों के लिए दुर्पयोग होने का कोई खतरा नहीं था। इस पृथ्वी पर परमेश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि पूर्ण एवं सिद्ध थी तथा उनको जिन्हें पहले ही सिद्ध बनाया गया था, परमेश्वर के द्वारा बहुत अधिक बढ़ने का निर्देश दिया गया था।

उप्पत्ति 1:28,–"और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उनसे कहा, "फूलो–फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।"

परमेश्वर के साथ संगति

जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया तो उनकी परमेश्वर के सर्वोत्तम संगति थी। वह उनसे आमने–सामने बात किया करता था। वे साहस के साथ परमेश्वर के सम्मुख जा सकते थे। उनके अन्दर दोष, दण्ड या हीनता की कोई भावना नहीं थी। उनकी परमेश्वर के साथ श्रेष्ठ संगति थी।

परमेश्वर ने आदम में अपने भरोसे को दर्शाया जब वह जानवरों को उसके पास ले आया कि वह उनके नाम रखे।

उत्पत्ति 2:19,–"और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भाँति के पक्षियों को रचकर आदम के पास ले आया कि देखे कि वह उनका क्या क्या नाम रखता है; और जिस जिस जीवित प्राणी का जो जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो गया।"

स्वतंत्र इच्छाशक्ति

परमेश्वर ने आदम और हववा को चुनाव करने की क्षमता–एक स्वतंत्र इच्छा–एक स्वतंत्र इच्छा शक्ति भी दी। उसने उन्हें रोबोट की तरह नहीं बनाया जिनमें परमेश्वर के पक्ष या विपक्ष में चुनने की क्षमता न हो। उनमें आज्ञा मानने या न मानने के चयन की योग्यता थी।

यह चुनाव एक विशेष पेड़ के बारे में परमेश्वर के निर्देशों पर केन्द्रित था, जो भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष था जो कि अदन की वाटिका में पाया जाता था। परमेश्वर ने कहा कि यदि वे उस वृक्ष के फल को खाएंगे, वे निश्यच मर जाएंगे।

उत्पत्ति 2:16,17,–"और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, "तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"

धर्मशास्त्र प्रगट करता है कि आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा न मानने का चयन किया। यह पाप था।

उत्पत्ति 3:6 – अतः जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य भी है; तब उसने उसमें से तोड़ कर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया।"

पाप के द्वारा सम्पूर्ण मानवता की बहुत बडी क्षति हुई।

संगति खो गई

परमेश्वर अपनी सिद्ध पवित्रता एवं धार्मिकता के कारण आदम और हव्वा के साथ और अधिक संगति न रख सका। उनका पाप उनके एवं परमेश्वर के बीच रुकावट बन गया। उनके दोष एवं दण्ड ने उन्हें परमेश्वर से छिपने के लिए मजबूर कर दिया।

उत्पत्ति 3:8, – "तब यहोवा परमेश्वर, जो दिन के ठण्डे समय वाटिका मे फिरता था, का शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए।"

उन्होंने अपनी सबसे बहुमूल्य सम्पति, अपने सम्बन्ध एवं परमेश्वर के साथ सिद्ध संगति को खो दिया।

परमेश्वर प्रदत् जीवन खो गया

जब आदम और हव्वा ने मना किए हुए फल को खाया, तो वे आत्मिक रुप से मर गए। उनमें अब परमेश्वर का जीवन नहीं रहा था।

रोमियों 5:12, – "इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत मे आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।"

उनकी आत्माएं आत्मिक रुप से मृत हो गईं। उनकी आत्माएं अकार्य हो गईं। जो परमेश्वर की आत्मा का श्वॉस परमेश्वर ने आदम में फूँका था, वह वहाँ नहीं था।

परमेश्वर की महिमा खो गई

परमेश्वर की महिमा जो कि आदम और हव्वा का वस्त्र था वह अचानक चली गई।

रोमियों 3:23, – "क्योंकि सब ने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं...।"

उन्होंने अचानक अनुभव किया कि वे नंगे हैं। उत्पत्ति 3:7अ, – "तब उन दोनों की आँखें खुल गईं, और उन्होनें जाना कि वे नंगे हैं।"

आत्मिक दृष्टि का खो जाना

जब आदम और हव्वा आत्मिक रुप से मर गए तो उनके प्राण परमेश्वर के लिए जीवित न रहे। उनके विचार अब परमेश्वर के विचार नहीं थे। उनकी दृष्टि का श्रोत उनकी आत्मा से जा चुका था, जो कि अब मृत थी, और अब वे वही देखते थे जो उनकी स्वाभाविक देह उन्हें दिखाती थी।

उन्होंने अपने प्राकृतिक क्षेत्र में अपनी पाँच इन्द्रियों के द्वारा कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। उनके लिए वास्तविकता और सत्य वही था जो वे देख, सुन, सूँध, चख या छू सकते थे।

उत्तम स्वास्थ्य खो दिया

आदम और हव्वा की शिराओं से होकर अब परमेश्वर का जीवन नहीं बह रहा था। अब वे बीमारी रोग और ह्रास के अधीन थे। जिस क्षण उन्होंने पाप किया, उनकी उम्र बढ़ने लगी और वे शरीरिक रुप से मरने शुरु हो गए।

अधिकार खो दिया

आदम और हव्वा ने इस पृथ्वी पर अपना अधिकार एवं प्रभुत्व खो दिया। उन्होंने इसे शैतान को सौंप दिया। अब वे उसके राज्य में रह रहे थे, आशाहीनता के साथ उसके अधीन थे जो "चुराने, घात करने, और नाश करने" आया था।

पुनः नए न किए हो गए

एक पुनः नया न किया मन, एवं एक ऐसे विश्वासी का मन जो परमेश्वर के वचन के द्वारा नया न किया गया हो, वे अक्सर दुष्ट कल्पनाओं से भरे होते हैं।

नीतिवचन 6:16, 17, 18,–"छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन् सात हैं जिस से उसको घृणा हैः अर्थात् घमण्ड से चढी हुई आँखें झूठ बोलने वाली जीभ, और निर्दोष का लहू बहाने वाले हाथ, अनर्थ कल्पना गढ़ने वाला मन, बुराई करने को वेग से दौडने वाले पाँव...।"

वे उन बातों से भरे हैं जिनसे परमेश्वर घृणा करता है।

- घमण्ड
- झूठ बोलने वाली जीभ
- निर्दोष का खून बहाना
- दुष्ट युक्ति करना
- मूर्खता के लिए दौडे चले जाना

प्रेरित पौलूस ने भी अभक्ति एवं अधर्मी लोगों का वर्णन किया है।

रोमियों 1:18–22,–"परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को धर्म से दबाए रखते हैं। इसलिए कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है।

उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं। इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बडाई और धन्यवाद नहीं किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहाँ तक कि उन का निबुद्धि मन अन्धेरा हो गया। वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख हो गए।"

छुड़ाने वाले की प्रतिज्ञा

प्रथम प्रतिज्ञा

आदम और हव्वा अदन की वाटिका में खड़े थे:

- आशाहीनता के साथ क्योंकि उनका परमेश्वर के साथ सम्बन्ध और संगति खत्म हो गई थी।
- उनके अधिकार छीन लिए गए थे।
- उनका सिद्ध ज्ञान एवं स्वास्थ्य उनसे छीन लिया गया था।

लेकिन फिर भी जब परमेश्वर ने शैतान से बात की, तो उसने मानव जाति के छुटकारे के लिए प्रतिज्ञा की जो कि स्त्री के वंश के द्वारा उनके बदले में किए गए छुटकारे के कार्य के द्वारा होगा।

उत्पत्ति 3:15,– "और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करुँगा ; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।"

अब्राहम के वंश के द्वारा

छुटकारा देने वाले की प्रतिज्ञा को पुन: नया किया गया जब परमेश्वर ने कहा कि विश्व की समस्त जातियाँ अब्राहम के द्वारा आशीष पाएंगी।

उत्पत्ति 18:18,– "अब्राहम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्थी जाति उत्पन्न होगी, और पृथ्वी की सारी जातियाँ उसके द्वारा आशीश पाएँगी।"

परमेश्वर ने अपनी इस वाचा को इसहाक और याकूब के लिए पुन: दोहराया। उसने प्रतिज्ञा की कि पृथ्वी की सारी जातियाँ उनके वंश के द्वारा आशीश पाएँगी। एक छुटकारा देने वाला आने वाला था।

दाऊद की संतान के द्वारा

परमेश्वर ने दाऊद से भी उसके वंश के सम्बन्ध में वाचा की प्रतिज्ञा की। यह भी छुटकारा देने आने वाले यीशु मसीह के सन्दर्भ में थी।

भजनसंहिता 89:34–36अ– "मैं अपनी वाचा न तोडूँगा, और जो मेरे मुँह से निकल चुका है, उसे न बदलूँगा। एक बार मैं अपनी पवित्रता की शपथ खा चुका हूँ ; मैं दाऊद को कभी धोखा न दूँगा। उसका वंश सर्वदा रहेगा . . .।"

यशायाह के द्वारा भविष्यवाणी की गई

यशायाह 9:6,7अ– "क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है: और प्रभुता उसके काँधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अन्नतकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी और शान्ति का अन्त न होगा, इसलिए वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर उस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा।"

हमारे बदले में

पाप और मृत्यु आदम और हव्वा के विद्रोह का नतीजा थे। सिर्फ अन्तिम आदम के हमारे बदले में आने के द्वारा ही यह सम्भव हो पाया कि हम अपने दण्ड़ों से आजाद किए गए। यशायाह तिरेपन हमें छुटकारा देने आने वाले की एक अद्‌भुत तस्वीर दिखाता है।

यशायाह 53:4,5,–"निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया ; तौ भी हमने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया ; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं।

आदम और हव्वा ने पतन के द्वारा जो कुछ खो दिया था वह मसीह के द्वारा हमारे बदले में किए छुटकारे के कार्य के द्वारा वापस लौटा दिया जाएगा।

पुनर्विचार के लिए प्रश्न

1. जब आदम और हव्वा को बनाया गया था तो उनमें परमेश्वर के समान इतने अधिक गुण क्यों थे?

2. आदम और हव्वा के अन्दर ऐसा क्या था जो उन्हें परमेश्वर द्वारा बनाए गए अन्य प्राणियों से इतना अलग करता था?

3. उन बातों की सूचि बनाओ जो मानवजाति ने अपने पतन में खो दी तथा जिन्हें नई सृष्टि में वापस लौटा दिया जाएगा।

पाठ दो

हमारे द्वारा पिता का स्वरुप

परिचय

अपनी नई सृष्टि के स्वरुप को समझने के लिए, हमारे पास इसका प्रकाशन होना चाहिए कि परमेश्वर पिता कौन है। क्योंकि हम उसके स्वरुप में बनाए गए इसलिए जब तक हमारे पास पिता का एक सही स्वरुप नहीं होगा, हम यह नहीं समझ पाएँगे कि हमें क्या होने के लिए बनाया गया था।

पौलूस प्रेरित ने लिखा, कि जैसे हम प्रभु की महिमा को देखते हैं, हम उसी स्वरुप में रुपान्तरित हो जाएँगे। प्रकाशन रुपान्तरण लेकर आता है।

2 कुरिन्थियों 3:18,–"परन्तु जब हम सब के उधाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रुप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।"

इस पाठ में हम पिता की महिमा देखने जा रहे हैं। हमारे पास पिता का जो गलत स्वरुप होगा उसे हम अस्वीकार करने जा रहे हैं। हम पवित्र आत्मा को अनुमति देंगे कि परमेश्वर के वचन के प्रकाशन के द्वारा, वह हम पर हमारे प्रेमी स्वर्गीय पिता का सही स्वरुप प्रगट करे।

आत्मा के तीन चलन

- यीशु का लोगों के बीच

लोगों के बीच यीशु के कार्यों के द्वारा बहुतों ने ताजा प्रकाशन प्राप्त किया तथा यीशु के व्यक्तित्व के साथ एक अन्तरंग सम्बन्ध एवं संगति में आए।

- करिश्माई नवीनीकरण

करिश्माई नवीनीकरण के द्वारा बहुत से लोग पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व के साथ अंतरंग सम्बन्ध एवं संगति में आए।

जैसे–जैसे लोगों ने पवित्र आत्मा की अगुवाई प्राप्त की, उन्होंने अपनी पुरानी भजन पुस्तिका एक तरफ रख दी तथा यीशु की स्तुति के बाईबल आधारित तरीकों में प्रवेश करने का आनन्द ढूँढ लिया।

दाऊद ने इसे निम्नलिखित को लिखने के द्वारा हम पर प्रगट किया,

"भजन 100:4,–"उसके फाटको में धन्यवाद के साथ तथा उसके आँगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो। उसका धन्यावाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो।"

- पिता को जानना

यीशु के शीघ्र वापस आने से पूर्व, इस वर्तमान समय परमेश्वर के चलन में, हम पिता के साथ अन्तरंग सम्बन्ध तथा संगति मे आगे बढ़ने वाले हैं। हम उसके आराधक बनने जा रहे हैं।

हम परमेश्वर के सम्मुख आँगन में गाते, हाथों को उठाते, ताली बजाते, चिल्लाते, उछलते, एवं नाचते रहे हैं। लेकिन, अब परमपवित्र स्थान में-परदे के अन्दर पिता की उपास्थिति में प्रवेश करने की अत्यन्त व्याकुल कर देने वाली इच्छा है।

अब हम आँगन में ही रह कर संतुष्ट नहीं है। हम पिता के चेहरे को खोजने, उसकी आँखों में देखने, हमारे चारों और उसकी बाहों को महसूस करने, तथा आराधना में उसके साथ बहुत अधिक निकटतम होने की तीव्र इच्छा रखते हैं।

यूहन्ना 4:23,–"लेकिन वह समय आता है, और अब भी है जब सच्चे आराधक पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे ; क्योंकि परमेश्वर ऐसे ही आराधकों को ढूंढ रहा है।"

पिता सच्चे आराधकों को ढूँढ रहा है, जो आत्मा और सच्चाई से आराधना करने में समय बिताएंगे, जो परम पवित्र स्थान में प्रवेश करेंगे।

हमारे पृथ्वी पर के पिता

स्वर्गीय पिता के बारे में हमारा स्वरुप अक्सर हमारे पृथ्वी पर के पिताओं के गुणों के द्वारा स्थापित होता है। हमारे पृथ्वी पर के पिताओं के साथ हमारे सम्बन्ध हमारे स्वर्गीय पिता के साथ हमारे सम्बन्धों को प्रभावित करते हैं।

अत्यधिक व्यस्त

जब उनके बच्चे बढ़ रहे थे तो बहुत से पिता इतने व्यस्त थे कि उनके पास उनके बच्चों के साथ बिताने के लिए समय नहीं था। उनके पास इसके लिए बहुत अच्छे कारण रहे होंगे, मगर इसने बहुतों में यह भावना डाल दी है कि, "परमेश्वर मेरे लिए बहुत व्यस्त है।"

सख्त अनुशासन रखने वाला

बहुत से पिताओं ने अपने बच्चों पर बिना प्रेम दिखाए सख्त अनुशासन का उपयोग करते हुए बड़ा कठोर व्यवहार किया है। ये बच्चे अक्सर यह महसूस करते हैं कि उनका स्वर्गीय पिता एक सख्त असहमति का भाव अपने चेहरे पर लिए उनकी ओर नीचे देख रहा है, मानों कि उसके हाथ में एक गदा है और वह बस इस बात का इन्तजार कर रहा है कि कौन रेखा से बाहर जाता है।

प्रेम की कमी

कई ऐसे घरों में पले-बढ़े हैं जहाँ उनके पिताओं के द्वारा उन पर बहुत कम ध्यान दिया या प्रेम दिखाया गया था। चाहे वे कितनी ही कोशिश कर लें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, ऐसा लगता है कि वे अपने पिताओं से कभी भी सहमति या ध्यान प्राप्त नहीं कर पाए।

इन लोगों के लिए उनके स्वर्गीय पिता का स्वरुप ऐसा होता है जो उन से अलग विचार रखता है। वे सोचते हैं कि परमेश्वर उनकी उपलब्धियों का ख्याल नहीं रखता और वास्तव में वह उनसे प्रेम नहीं करता।

गरीबी

अन्य लोगों का पालन-पोषण ऐसे परिवारों में हुआ जहाँ उनके पिता या तो सक्षम नहीं था या फिर किसी कारण उनकी समुचित आय नहीं थी कि जिससे वे जीवन की मूल आवश्यक्ताओं के लिए परिवार की जरुरतें पूरी कर सकें। वे गरीबी मे पले-बढ़े।

ऐसे लोग अक्सर परमेश्वर को एक "गरीबी के स्वरुप" में देखते हैं। उन्हें यह विश्वास करने में कठिनाई होती है कि परमेश्वर उनकी प्रत्येक आवश्यक्ता की पूर्ति कर सकता है।

दुर्व्यवहार

बहुत से बच्चों के साथ उनके पृथ्वी पर के पिताओं के द्वारा दुर्व्यवहार किया गया है। कुछ लोगों के साथ भावनात्मक दुर्व्यवहार किया गया, कुछ के साथ शारीरिक तथा कुछ ने यौन अत्याचार की पीडा को सहा है।

इसने उन्हें रोके रखा कि वे अपने स्वर्गीय पिता पर पूर्णत: विश्वास करें या उसके महान प्रेम या लगाव को प्राप्त कर सकें। वे स्वयं को परमेश्वर के दोषी महसूस करते हैं या उससे गुस्सा होते हैं, तथा वे अपने जीवन के लिए उस पर पूरी तरह से भरोसा नहीं कर पाते हैं।

हमारा स्वर्गीय पिता

प्रेम

हमने अपने पृथ्वी पर के पिताओं से कितनी भी ठेस, तिरस्कार, या दुर्व्यवहार पाया हो इसके बावजूद भी हमें उन्हें माफ कर देना चाहिए तथा परमेश्वर से चंगाई प्राप्त करनी चाहिए ताकि हम परमेश्वर के उमण्डने वाले प्रेम को जान सकें, प्राप्त कर सके तथा उसका आनन्द उठा सकें।

1 यूहन्ना 3:1अ–"देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ।"

पौलूस प्रेरित ने लिखा कि परमेश्वर के प्रेम से हमें कोई अलग नहीं कर सकता।

रोमियों 8:38,39,–"क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएँ, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊँचाई, न गहराई, और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से जो प्रभु मसीह यीशु में हैं, अलग कर सकेगी।"

पिता हमारे लिए खुश होता है

एक सख्त, ख्याल न रखने वाले पिता की बजाय हमारे पास एक स्वर्गीय पिता है जो हम से इतना प्रेम करता है कि वह हमारे साथ खुशी के गीत गाते हुए आनन्दित होता है।

नबी सपन्याह ने परमेश्वर का वर्णन निम्न प्रकार से किया है:

सपन्याह 3:17,–"तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, वह उद्धार करने मे पराक्रमी है ; वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा, वह अपने प्रेम के मारे चुपका रहेगा ; फिर ऊँचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा।"

जिस इब्रानी शब्द का उपयोग सपन्याह ने मगन होने के लिए किया है, उसका प्राथमिक अर्थ "फूट पड़ना" या "उछल पड़ना" है। परमेश्वर अपनी सन्तानों के रुप में हम में इतना खुश है कि वह अपने उद्वेलित करने वाले प्रेम के आनन्दमय भाव में ऊपर-नीचे उछल कर नाचता है।

यह पिता का एक कैसा अलग स्वरुप है। परमेश्वर हमारे लिए बहुत अधिक व्यस्त नहीं है। वह कोई सख्त, प्रेमरहित अनुशासनकर्ता नहीं है। उसकी रुचि हमें दण्ड देने में नहीं है। वह गाते हुए हमारे कारण आनन्दित होता है। वह हमारे कारण खुशी में ऊपर नीचे उछल रहा है।

हृदय पिता की ओर मोडे गए

जैसा कि पुराने नियम में दिया गया है, आज परमेश्वर नबियों का उपयोग कर रहा है कि सन्तानों का हृदय अपने पिताओं की तरह मोड़ दे।

मलाकी 4:5,6अ,-"देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूँगा। वह माता-पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, तथा पुत्रों के मन को उनके माता-पिता की ओर फेरेगा।"

परमेश्वर पुत्र और पुत्रियों के हृदयों को उनके पृथ्वी पर के पिताओं की ओर तथा परमेश्वर के पुत्र एवं पुत्रियों के हृदयों को उनके स्वर्गीय पिता की ओर फेर रहा है।

संगति में तीन रुकावटें

पाप

जिस क्षण उन्होनें पाप किया उससे पहले आदम और हव्वा की परमेश्वर के साथ बहुत अच्छी संगति थी, एक पवित्र और धर्मी परमेश्वर पाप के साथ संगति नहीं रख सकता था।

उद्धार के समय हमारे पाप क्षमा किए गए और हटा दिए गए। परमेश्वर के साथ हमारी संगति और सम्बन्ध की शुरुआत होती है। यदि हम पाप करें तो यद्यपि हमारा परमेश्वर से सम्बन्ध तो बना रहता है मगर हमारी उसके साथ संगति टूट जाती है। यह संगति सिर्फ उससे अपने पापों का अंगीकार करने के द्वारा ही पुन: स्थापित होती है।

1 यूहन्ना 1:9,-"यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने मे विश्वासयोग्य और धर्मी है।"

तिरस्कार

बहुतों को उनके पृथ्वी पर के पिताओं के द्वारा तिरस्कृत किया गया था। हो सकता है उनका जन्म अनचाहे या अनियोजित गर्भधारण के कारण हुआ है। हो सकता है पिता विपरीत लिंग के बच्चे की चाह रखता हो, या बच्चा होने की वजह से वह अपनी पिता की अपेक्षाओं के अनुरुप न कर पाया हो।

चाहे किसी व्यक्ति ने वास्तविक तिरस्कार सहा हो या अनिश्चित तिरस्कार की भावनाएं रही हों, उस व्यक्ति के जीवन में बड़े भावनात्मक निशान रह जाते हैं।

इस प्रकार के लोग अक्सर महसूस करते हैं कि उनका स्वर्गीय पिता भी उनका तिरस्कार कर रहा है। उसका प्यार और स्वीकृति ग्रहण करने में उन्हें कठिनाई होती है। अपने स्वर्गीय पिता के निकटतम व्यक्तिगत सम्बन्ध में आने तथा उसका एक सच्चा आराध बनने में उन्हें कुछ न कुछ बात हमेशा रोकती रहती है।

जिस व्यक्ति के अन्दर तिरस्कार की भावना है, उन्हें उन लोगों को क्षमा कर देना चाहिए जिन्होंने उनका तिरस्कार किया हो तथा फिर अपने मनों में परमेश्वर की चंगाई की सामर्थ को ग्रहण करना चाहिए।

भय

पिता की उपस्थिति में आने के भय ने बहुतों को उसका सच्चा आराधक बनने से रोका हुआ है। जबकि परमेश्वर ने हमें भय की बजाय, लेपालकपन का आत्मा दिया है, जिससे हम उसके समीप आ सकते हैं और उसे "हे अब्बा, हे पिता" पुकार सकते हैं।

रोमियों 8:15 – "क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं।"

"अब्बा" बहुत अधिक प्रिय एवं अपने पिता के बहुत ही निकट व्यक्तिगत सम्बन्ध में होने का प्रगटीकरण है। इसका अनुवाद "डैडी" भी किया जा सकता है।

2 कुरिन्थियो 6:18 – "मैं तुम्हारा पिता हूँगा और तुम मेरे बेटे और बेटियाँ होंगे। यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है।"

यह पिता का उद्वेलित प्रेम ही था जिसके कारण उसने हमें अपनी सन्तानों के रुप में गोद लिया है।

1 यूहन्ना 3:1अ – "देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ!"

परमेश्वर के अद्‌भुत प्रेम की समझ हमारे सभी डरों को दूर कर देती है।

दाऊद, हमारा उदाहरण

दाऊद एक ऐसा व्यक्ति था जिसका हृदय परमेश्वर के अनुसार था। वह आराधना में अपने स्वर्गीय पिता की गहन निकटता में चले जाने की इच्छा रखता था।

भजन 27:4 – "एक वर मैंने यहोवा से माँगा है, उसी के यत्न में लगा रहूँगा ; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊँ, जिससे उसकी मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूँ, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूँ।"

दाऊद ने अपने जीवन के प्रत्येक दिन में परमेश्वर की उपस्थिति में बास करने की इच्छा की थी। उसने पिता की उपस्थिति में प्रवेश करने तथा उसकी मनोहरता पर दृष्टि लगाए रखने की इच्छा की थी।

➢ स्तुति एवं आराधना भेंट चढ़ाई

भजन 27:6ब – "मैं यहोवा के तम्बू में जयजयकार के साथ बलिदान चढ़ाऊँगा ; और उसका भजन गाऊँगा।"

दाऊद जानता था कि यहोवा के "आँगनों" में उसकी उपस्थिति मे कैसे स्तूतिगान एवं नृत्य किया जाए। बल्कि वह तो और अधिक करने की इच्छा रखता था। वह इच्छा करता था कि पिता की बिल्कुल उपस्थिति में पहुँच जाए तथा उसके चेहरे को खोजे।

भजन 27:8 – "जब तू ने कहा, "मेरे दर्शन का खोजी हो।" इसलिए मेरा मन तुझसे कहता है, "ये यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी रहूँगा।"

➢ परमेश्वर से तिरस्कार का भय

जबकि दाऊद पिता की अधिक आराधना करने की इच्छा रखता था और वह गहन आराधना में पिता की उपस्थिति में प्रवेश करने लगा, लेकिन अचानक तिरस्कार के भय से वह पीछे हटने लगा!

भजन 27:9 – "अपना मुख मुझ से न छिपा ; अपने दास को क्रोध करके न हटा, तू मेरा सहायक बना है। हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर मुझे त्याग न दे, और मुझे छोड़ न दे।"

➢ पृथ्वी पर के पिता के द्वारा तिरस्कार

दाऊद ने अपने पृथ्वी पर के पिता के द्वारा तिरस्कार सहा था, और अब लडकपन में तिरस्कार का वही भय उसे अपने स्वर्गीय पिता की उपस्थिति में बिना भय के प्रवेश करने से रोक रहा था।

जब दाऊद एक जवान पुरुष था, तो शमुएल नबी अगले राजा का अभिषेक करने के लिए बेतलेहम आया। दाऊद के पिता ने अपने अन्य सभी पुत्रों को इस आशा के साथ इकट्ठा किया था, कि उनमें से एक का अभिषेक राजा के रुप में किया जाएगा। दाऊद को उस महत्वपूर्ण दिन मे शमुएल के सम्मुख उपस्थित होने के लिए नहीं बुलाया गया था।

यह ऐसा समय रहा होगा जब दाऊद ने अपने पृथ्वी पर के पिता के द्वारा गहरा तिरस्कार सहा होगा। इसने दाऊद के हृदय में डर उत्पन्न कर दिया कि स्वर्गीय पिता के द्वारा भी उसका तिरस्कार किया जाएगा।

जब वह गहरी आराधना के क्षणों में प्रवेश करता था उस वक्त वह जितना अधिक अपने स्वर्गीय पिता की उपस्थिति में आने, उसके चेहरे की खोज करने, और उसकी सुन्दरता को निहारने की इच्छा रखता था, उतना ही तिरस्कार का भय उसके मन को जकड़ लेता था।

➢ तिरस्कार से आजादी पाई

दाऊद ने महसूस किया कि वह अपने माता-पिता के द्वारा तिरस्कार किया गया है। उसने समस्या को समझा और उस तिरस्कार की भावना के विरुद्ध एक सशक्त घोषणा की।

भजन 27:10 – "मेरे माता–पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है, परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा।"

उस समय दाऊद परमेश्वर की उपस्थिति में हियाव के साथ चला। उसने परमेश्वर के चेहरे की ओर देखा प्रेम को महसूस किया तथा उसके पिता की स्वीकृति ने उसकी आत्मा को सराबोर कर दिया।

यीशु अपने पिता को प्रगट करता है।

इस पृथ्वी पर यीशु के समय में उसके मुख्य उद्देश्यों में से एक अपने पिता को प्रगट करना था। जब यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई अन्त की ओर आ रही थी, अपनी गिरफ्तारी, मुकद्मे तथा क्रूस पर चढ़ाए जाने से ठीक पहले, यीशु ने यूहन्ना के अध्याय चौदह से सत्रह के बीच पचास बार सुसमाचार में परमेश्वर का चिक्र किया।

उसने अपने शिष्यों से बार–बार कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे पिता को जानो।"

"मुझे जानना–पिता को जानना"

यदि हम यीशु को जानेंगे तो हम पिता को जानेंगे। जितना अधिक हम सुसमाचारों के द्वारा यीशु को जानने में समय बिताएंगे उतना ही अधिक हम पिता को जानेंगे।

यूहन्ना 14:7 – "यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते ; और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है।"

सुसमाचारों में हम यीशु के प्रेम और तरस को देखते हैं जब वह निरन्तर लोगों तक पहुँचता और उन्हें छूता है, उनकी जरुरतें पूरी करता है, उनके शरीरों को चंगा करता है, तथा उनके प्राणों को बहाल करता है। यह पिता के प्रेम का एक प्रदर्शन था।

यूहन्ना 14:9 – "जिसने मुझे देखा उसने पिता को देखा है।"

पिता का प्रेम

जब यीशु ने बच्चों को अपनी गोद में बिठाया तथा उन्हें अपनी बाहों में लिया, जब उसने अपने बच्चों के लिए पिता के प्रेम को दिखाया।

मति 19:14 – "यीशु ने कहा "बालकों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों का है।"

यह क्या ही अद्भुत तस्वीर है कि पिता हमसे प्रेम करता है कि वह हमें अपने समीप ले आएगा और अपनी बाहों में हमें ले लेगा।

जब यीशु ने अपने चारों ओर के लोगों की सेवकाई की तब उसने अपने पिता के प्रेम को दर्शाया।

यूहन्ना 14:23 – "यीशु ने उसको उत्तर दिया, "यदि कोई मुझ से प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को माने और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे और उसके साथ वास करेंगे।"

यह कितना अद्भुत प्रकाशन है। इसे ऊँची आवाज में कहें।

"मेरा स्वर्गीय पिता मुझसे प्रेम करता है!
वह यीशु के साथ आकर मेरे साथ रहना चाहता है।
मेरा पिता मेरे साथ अपना घर बनाना चाहता है!"

➢ देने वाला पिता

यीशु ने कहा कि हम हियाव के साथ अपने पिता से हमारी जरुरतों को माँग सकते हैं।

यूहन्ना 16:23 "मैं तुम से सच सच कहता हूँ? यदि पिता से कुछ माँगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।"

हम यीशु के नाम में इस लिए नहीं माँगते कि पिता यीशु से प्यार करता है और वह सिर्फ उसके लिए ही कुछ करता है। बल्कि यीशु के नाम मे इसलिए माँगते हैं क्योंकि यीशु के बलिदान के द्वारा ही पिता के साथ हमारा सम्बन्ध पुन: स्थापित हुआ है।

➢ पिता का घर

यीशु ने हमें पिता के घर के बारे मे बताया है। उसने बताया कि वह जाकर पिता के घर में हमारे लिए एक स्थान तैयार करेगा।

यूहन्ना 14:2 – "मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुमसे कह देता ; क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूँ।"

भविष्य में हमें पिता के घर में रहना है। परिवार ऐसे ही रहता है। स्वर्गीय पिता के साथ हमारे निकटतम सम्बन्ध होंगे।

"मैं तुम्हें साफ बताऊँगा"

यीशु हमें अपने पिता के बारे में खोलकर बताना चाहता है।

यूहन्ना 16:25 – "मैंने ये बातें तुम से दृष्टान्तों में कही है, परन्तु वह समय आता है कि मैं तुम से फिर दृष्टान्तों में नहीं कहूँगा। परन्तु खोलकर तुम्हें पिता के विषय में बताऊँगा।"

यीशु ने इन चार अध्यायों में जो पचास बार अपने पिता का जिक्र किया है ये उनमें से सिर्फ कुछ ही है। यीशु ने अपनी बड़ी इच्छा की कि हम में से प्रत्येक उसके पिता के साथ निकटतम सम्बन्ध मे आएगा।

उडाऊ पुत्र

अक्सर उडाऊ पुत्र का दृष्टान्त सुसमाचारीय सन्देशों में मन फिराव एवं संगति के रुप में उपयोग किया जाता है। हमने समझ लिया है कि हम पिता के पास वापस आ सकते हैं चाहे हम उससे कितनी ही दूर क्यों न हों।

विद्रोह करके, उडाऊ पुत्र ने अपना घर छोड़ दिया था और अपनी सारी सम्पत्ति गलत जीवन में उड़ा दी थी। और फिर जब भारी आकाल पड़ा, तो वह सुअर चराने लगा और सुअरों की फलियाँ खाने की चाह रखने लगा।

पुत्र

हम में से बहुत से इस पुत्र के समान हो सकते हैं। हम स्वर्गीय पिता से दूर हुए तिरस्कार से डरे हुए या अयोग्यता, पीड़ा और दोष की भावना को हम में महसूस किया होगा या महसूस कर सकते हैं।

लूका 15:17–20–"जब वह अपने आपे में आया तब कहने लगा, 'मेरे पिता के कितने ही मज़दूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ।

मैं अब उठकर अपने पिता के पास वापस जाऊँगा और उससे कहूँगा कि पिता जी मैने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। अब इस योग्य न रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ मुझे अपने एक मजदूर के समान रख ले। तब वह उठकर अपने पिता के पास चला।"

उसने कहा, "मैं अब इस योग्य न रहा।" जैसा कि आज बहुत से विश्वासी महसूस करते हैं, इस जवान व्यक्ति ने अयोग्य महसूस किया। उसके पास स्वयं का अयोग्य स्वरुप था। लेकिन अपने उसी ही स्वरुप के साथ वह घर वापस आया।

पिता

यह दृष्टान्त हमारे स्वर्गीय पिता का एक अद्भुत प्रकाशन है।

परमेश्वर न्यायाधीष समान नहीं है।

वह अपने पुत्र और पुत्रियों के द्वारा

क्षमा माँगने की प्रत्तीक्षा नहीं करता रहता।

उस पिता ने क्या किया?

लूका 15:20ब "वह अभी दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौडकर उसे गले लगाया और बहुत चूमा।"

तिरस्कार से अपना मूँह हमारी ओर से फेर लेने की बजाय, यह हमारा इन्तजार कर रहा है कि हम उसके पास आएं। वह अपनी बाहों में हमें ले लेना चाहता है तथा अपने प्रेम की बहुतायत और अधिकता के कारण हमें चूम लेना चाहता है।

पद 21–"पुत्र ने कहा, "पिता जी मैंने स्वर्ग और तेरे विरुद्ध पाप किया है और अब मैं इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ।"

पिता ने इस बात पर कोई चर्चा नहीं की कि पुत्र ने क्या किया था या वह उस समय क्या कह रहा था।

पद 22–24–"परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा, "झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहनाओ, और उसके हाथों में अंगूठी और पावों मे जूतियाँ पहिनाओ। और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खाएं और आनन्द मनाएं। क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है: खो गया था, अब मिल गया है: और वे आनन्द करने लगे।"

पुत्र की तस्वीर

पिता जानता था कि उसे अपने पुत्र की स्वयं की तस्वीर को बदलने की जरुरत है। उसने उसे सर्वोत्तम वस्त्र पहनाए। उसने उसकी ऊँगलियों में अपनी अंगूठी पहनाई तथा उसके पैरों में नए जूते पहनाए।

एक बार जब हम यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण कर लेते हैं तो हमारा स्वर्गीय पिता हमे पुत्र एवं पुत्रियों की तरह देखता है। हम उसकी धार्मिकता के वस्त्र पहने हुए हैं। हमारे पास हमारी ऊँगलियों में उसके अधिकार की अंगूठी है।

प्रेम के साथ वह कह रहा है, "ओह, मैं कितना अधिक यह चाहता हूँ कि वे जानें कि वे मसीह यीशु में कौन है। वे मेरे पुत्र के साथ एक हैं! वे मसीह यीशु में परमेश्वर की धार्मिकता हैं!"

प्रेरित पौलूस ने इसके बारे में लिखा।

2 कुरिन्थियों 5:21 – "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।"

हमारी नई सृष्टि का स्वरुप

जब हम यीशु को अनुमति देते हैं कि वह अपने पिता को हम पर प्रगट करें तो स्वर्गीय पिता का कोई भी सीमित या विकृत स्वरुप जो हमारे पास होता है वह बदल जाएगा।

हम दाऊद के समान प्रभु की सुन्दरता को देखेंगे। हम उसके आराधक बन जाऐंगे। हम अपने चारों ओर उसकी स्वीकृति को महसूस करेंगे। जैसे जैसे हम प्रभु की महिमा को देखेंगे, पिता के बारे में हमारा स्वरुप बदल जाएगा, साथ ही हमारी अपने बारे में स्वयं की पुरानी तस्वीर बदल कर नई सृष्टि के स्वरुप में हो जाएगी।

बहुत से लोग परमेश्वर के चेहरे को खोजने की बजाय उसके हाथों को खोज रहे होते हैं। वे अपनी जरुरतों को पूरा करने के लिए उसके समीप आने में अपना समय व्यतीत कर रहे हैं।

परिवर्तित

➢ ***पिता की खोज करने के द्वारा***

इसके बजाय हमें परमेश्वर के चेहरे की खोज करने एवं उसकी महिमा को देखने में समय बिताने के लिए परमेश्वर के समीप आना चाहिए। तब हम उसके स्वरुप में रुपान्तरित हो जाऐंगे।

2 कुरिन्थियों 3:18 – "परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रुप में अंश–अंश करके बदलते जाते हैं।"

भजनकार दाऊद के समान ही प्रेरित पौलूस ने भी वैसे ही विचारों को प्रगट किया है।

भजन 17:15 – "परन्तु मैं तो धर्मी होकर तेरे मुख का दर्शन करुँगा, जब में जागूँगा तब तेरे स्वरुप से सन्तुष्ट हूँगा।"

➢ ***पिता की आराधना के द्वारा***

अपनी ओर देखते हुए और इच्छा रखते हुए कि हमारे जीवनों में परिवर्तन हो जाए, हम इस प्रकार उसकी समानता मे बदलते नहीं हैं। हम उस की समानता में तब बदलते हैं जब हम अपने पिता के साथ गहन प्रेम एवं जो कुछ वह है इसमें उसकी आराधना करने में समय बिताते हैं तो हम परमेश्वर के स्वरुप मे बदल जाते हें।

जब हम परमेश्वर के चेहरे की खोज करते हुए समय बिताते हें तो हम यह जानेंगे कि हमारे चेहरे परमेश्वर की महिमा से चमक रहे हैं। मूसा की तरह जब वह सिनै पर्वत पर परमेश्वर की उपस्थिति में समय बिताकर लौटा, तो हम भी परमेश्वर की महिमा से चमक उठेंगे।

लूका ने लिखा।

लूका 11:36 – "इसलिए यदि तेरा सारा शरीर उजियाला हो और उसका कोई भाग अन्धेरा न रहे तो सब का सब ऐसा उजियाला होगा जैसा उस समय होता है जब दीया अपनी चमक से तुझे उजाला देता है।"

एक बार फिर हम वही बन जाएँगे जो होने कि लिए परमेश्वर ने मानवता की रचना की थी जब उसने कहा, "आओ हम मनुष्य को अपने स्वरुप में बनाएं।"

पुनर्विचार के लिए प्रश्न

1. हमारे बचपन के अनुभवों के द्वारा हमारे स्वर्गीय पिता से सम्बन्धिक हमारा स्वरुप किस तरह प्रभावित होता है?

2. हमारे द्वारा बनाया गया हमारे स्वर्गीय पिता का स्वरुप परमेश्वर के वचन मे बताए गए पिता के सच्चे स्वरुप में कैसे बदल सकता है?

3. 2 कुरिन्थियों 3:18 के अनुसार हम परमेश्वर के स्वरुप के अनुरुप कैसे बदल सकते हैं?

पाठ तीन

हमारे द्वारा पुत्र का स्वरुप

परमेश्वर का पुत्र

नई सृष्टि के रुप में हम क्या हैं इसका पूर्ण प्रकाशन पाने कि लिए, हमें परमेश्वर के पुत्र के स्वरुप का प्रकाशन रखना जरुरी है।

प्रेरित पौलूस ने लिखा कि हम परमेश्वर के पुत्र के स्वरुप में होने के लिए पहले से ठहराए गए पूर्व निर्धारित किए गए एवं नियुक्त किए गए हैं।

रोमियों 8:29अ – "क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरुप में हों।"

जब हम उसके पुत्र के स्वरुप के अनुरुप होते हैं तो हम अपनी क्षमता को पूरा करने लगते हैं तथा एक नई सृष्टि के प्राणियों के समान जीवन बिताने लगते हैं। हम जानते हैं कि यीशु पिता तथा पवित्र आत्मा के साथ एक है तथा जितने भी गुण उनमें हैं–उतने ही हम में भी है।

परमेश्वर है

प्रेरित यूहन्ना परमेश्वर के पुत्र के बारे में हमें चार मुख्य बातें बताता है।

- वह सर्वदा विद्यमान था।
- वह परमेश्वर का जीवित वचन है।
- वह सब वस्तुओं का रचियेता है।
- वह मनुष्य बना और हमारे मध्य में डेरा किया।

यूहन्ना 1:1 – 3 ,14 – "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि मे परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई।

और वचन देहधारी हुआ और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे मध्य डेरा किया।"

आदम और हव्वा की सृष्टि की

यूहन्ना इस बात को स्पष्ट करता है कि सब कुछ परमेश्वर के पुत्र के द्वारा रचा गया। आदम और हव्वा को उसके द्वारा रचा गया।

उत्पति 1:27 – "तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरुप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरुप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया ; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।"

छुड़ाई गई मनुष्य जाति को पुन: रचित होना है वह उसके स्वरुप में हो जिसने आदम और हव्वा को अपने स्वरुप में बनाया।

परमेश्वर का पुत्र

परमेश्वर के समान उसने हमें अधिकार दिए

यीशु इस पृथ्वी पर एक कुँवारी स्त्री के द्वारा मनुष्य के रुप में उत्पन्न हुआ था। वह अभी भी परमेश्वर था, मगर उसने परमेश्वर के रुप में अपने अधिकारों को त्याग दिया था तथा इस पृथ्वी पर एक मनुष्य के रुप में आया था। वह सच्ची मानवता, लेकिन समाप्त न हो सकी ईश्वरीयता था।

फिलिप्पियों 2:5 – 8 – "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो: जिसने परमेश्वर के स्वरुप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरुप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रुप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ क्रूस की मृत्यु भी सह ली।"

यह समझना बड़ा महत्वपूर्ण है कि यीशु ने परमेश्वर के रुप में अपने अधिकारों को एक तरफ रख दिया था। उसने अपने आप को मनुष्य के रुप में बना दिया था। जो कुछ भी यीशु ने इस पृथ्वी पर जीवित रखते हुए कार्य किए एवं सेवा की वह उसने मनुष्य की तरह की ना कि एक ईश्वर की तरह।

गलत विचार धारा

यदि हम यीशु को पृथ्वी पर रहते हुए परमेश्वर की सामर्थ में कार्य करते हुए चित्रित करते हें तो हम समझ नहीं पाते हैं कि हम उसके स्वरुप के समान कैसे हो सकते हैं।

"हां!" हम कहेंगे, "यीशु बीमारों को चंगा कर सकता था दुष्टात्माओं को निकाल सकता था, तथा तूफान को शान्त कर सकता था। आखिकार, वह परमेश्वर का पुत्र था। वह सर्वशक्तिमान था। इस से हमें क्या?"

यदि यीशु परमेश्वर के रुप मे कार्य कर रहा था तो वह हमारे लिए नमूना कैसे बन सकता था? यदि यीशु अलौकिक रुप में जीवित रहा एवं सेवकाई की, तो हमारा बहाना होगा कि हम तो मनुष्य मात्र हैं।

हम सोच सकते हैं, "कि एक मात्र उम्मीद हमारे पास यह है कि हम परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह अलौकिक रुप से कार्य करे ताकि हम अपने संघर्षो, बीमारियों या आर्थिक समस्याओं से छुटकारा पा जाएं।"

यदि हम यीशु को ऐसे रुप में चित्रांकित करें जैसे कि वह इस पृथ्वी पर मनुष्य के रुप में आया हो और उसने अपने ईश्वरीय अधिकारों को एक तरफ रख दिया हो तथा उन्हीं अधिकारों को अपने पास रखा हो जो परमेश्वर ने मनुष्य को दिए थे-तो हम स्वयं को भी वही सब करते हुए देख सकते हैं जो कुछ यीशु ने किया।

पृथ्वी पर अधिकार

यीशु ने कहा,

यूहन्ना 5:24,25 – "मैं तुम से सच सच कहता हूँ जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस

पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन मे प्रवेश कर चुका है। मैं तुम से सच सच कहता हूँ वह समय आता है, और अब है जिसमें मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएँगे।"

वे जो परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे वे जीएँगे।

फिर यीशु आगे कहता है,

यूहन्ना 5:26,27 – "क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उसने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे ; वरन उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है इसलिए कि वह मनुष्य का पुत्र है।"

इस अनुच्छेद से यह स्पष्ठ है कि यीशु ने इस पृथ्वी पर रहते हुए जिस अधिकार का उपयोग किया वह परमेश्वर के पुत्र के रुप में उसका अधिकार नहीं था। वह मनुष्य के पुत्र के रुप में उसका अधिकार था।

यीशु अद्वीतीय रुप से हमारे लिए नमूना होने के लिए उपयुक्त था। नई सृष्टि के रुप में इस पृथ्वी पर हमारे लिए परमेश्वर प्रदत अधिकार को पुनः स्थापित किया गया है। हमें उसी अधिकार में कार्य करना है जैसे यीशु ने मनुष्य के पुत्र के रुप में कार्य किया। जब हम पवित्र आत्मा पाते हें तो हम उसी सामर्थ में कार्य कर सकते हैं जैसा कि यीशु ने उसके ऊपर पवित्र आत्मा आने के बाद किया।

अब जब हम सुसमाचारों को पढ़ते हें तो हम देखते हैं कि यीशु वास्तव मे हमारे लिए नमूना एवं आदर्श था। हम ठीक उसी सामर्थ और अधिकार में कार्य कर सकते हैं: जो यीशु ने इस पृथ्वी पर रहते हुए किया। मनुष्य जाति नई सृष्टि के रुप में उसी अधिकार में जी सकती है जिसमें रहने के लिए परमेश्वर ने उन्हें बनाया था जब उसने उनसे कहा था, "वे सब वस्तुओं पर प्रभुता रखें!"

अन्तिम आदम था

यीशु अन्तिम आदम के रुप में आया।

1 कुरिन्थियों 15:45 – "ऐसा ही लिखा भी है, कि "प्रथम मनुष्य, अर्थात आदम जीवनदायक आत्मा बना।"

जो कुछ करने के लिए आदम को बनाया था – वह सब यीशु ने किया। परमेश्वर ने कहा, "वे अधिकार रखें" – यीशु ने दुष्टात्माओं पर, जीवित वस्तुओं पर, निर्जीव वस्तुओं पर अधिकार प्राप्त किया। वह अधिकार में चला।

मति 7:28,29 – "जब यीशु ये बातें कह चुका, तो ऐसा हुआ कि भीड़ उसके उपदेश से चकित हुई। क्योंकि वह उन के शास्त्रियों के समान नहीं परन्तु अधिकारी की नाई उन्हें उपदेश देता था।"

- *हमारी मानवीयता मे सहभागी हुआ*

यीशु लहू और माँस की तरह हमारी मानवीयता में सहभागी हुआ।

इब्रानियों 2:14अ – "इसलिए जब लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उन के समान उन का सहभागी हो गया।"

➢ *परीक्षाओं का अनुभव किया*

जिस तरह हम परीक्षाओं का अनुभव करते हें ठीक उसी तरह उसने भी परीक्षाओं का अनुभव किया।

इब्रानियों 4:15 – "क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके, वरन वह सब बातों में हमारी नाई परखो तो गया, तौ भी निष्पाप निकला।"

यद्यपि उसके सामने वैसी ही परीक्षाएं थीं जैसी किसी भी मनुष्य के जीवन मे होती हैं, लेकिन यीशु निष्पाप निकला जैसा कि आदम और हव्वा को भी इसी तरह होने के लिए बनाया गया था।

➢ *उसके कार्य-हमारे कार्य*

यीशु वह सब होने और करने के लिए आया जो कुछ करने और होने के लिए उसने मनुष्यजाति को बनाया था। उसने परमेश्वर के रुप में अपने अधिकारों को एक तरफ रख दिया तथा इस पृथ्वी पर मनुष्य के रुप में रहा तथा सेवकाई की।

यूहन्ना 14:12 – "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन् इन से भी बडे काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।"

यदि यह सम्भव नहीं होता तो यीशु ने यह न कहा होता कि, "जो कोई विश्वास करेगा वह इन से भी बड़े-बड़े कार्य करेगा।

➢ *उसकी सामर्थ-हमारी सामर्थ*

यीशु के सारे कार्य एवं सेवकाइयाँ पवित्र आत्मा की सामर्थ में किए गए थे।

लूका 3:22अ – "और पवित्र आत्मा शारीरिक रुप में कबूतर की नाई उस पर उतरा।"

अपने बपतिस्में के समय पवित्र आत्मा उसके ऊपर आने से पूर्व यीशु के चमत्कारों का कोई वर्णन नहीं है? यह यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई का प्रारम्भ था।

यीशु ने कहा उसका पवित्र आत्मा के द्वारा अभिषेक सुसमाचार प्रचार करने, बीमारों को चंगा करने तथा दृष्टात्माओं को निकालने के लिए हुआ है।

लूका 4:18,19 – "कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करुँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ। और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ।

जब यीशु इस पृथ्वी को छोड़ने की तैयारी कर रहा था, उसने पवित्र आत्मा के आगमन के बारे में बात की, और उसने कहा पवित्र आत्मा उसके अनुयाईयों को सामर्थ देगा।

प्रेरितों के कार्य 1:8अ – "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तो तुम सामर्थ पाओगे।"

हमारे पास वह सामर्थ है जो यीशु के जीवन में कार्य कर रही थी जब वह इस पृथ्वी पर सेवकाई कर रहा था।

लूका ने भी इन्हीं शब्दों- "सामर्थ" एवं "पवित्र आत्मा" का उपयोग किया-जब उसने यीशु के जीवन के बारे मे लिखा।

प्रेरित 10:38 – "कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया ; वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा ; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।"

यीशु आया

➢ *पिता को प्रगट करने के लिए*

परमेश्वर का पुत्र यीशु, पिता का हू ब हू स्वरुप है।

यीशु ने कहा,

यूहन्ना 10:30 – "मैं और मेरा पिता एक हैं।"

उसने यह भी कहा,

यूहन्ना 14:6,7 – "मार्ग और सत्य और जीवन में ही हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता। यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते ; और अब उसे जानते हो, और उसे देखो भी है।"

इब्रानियों का लेखक कहता है कि यीशु परमेश्वर के तत्व की छाप है।

इब्रानियों 1:3अ – "वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है. . ."

पौलूस ने लिखा कि मसीह अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरुप था।

कुलुस्सियों 1:15 – "वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरुप और सारी सृष्टि में पहलौठा है।"

परमेश्वर के स्वरुप के अनुसार सारी सृष्टि में यीशु पहलौठा था। इम उसके स्वरुप के अनुसार होने के लिए नई सृष्टि के रुप में नया जन्म पाया है।

➢ *पिता की इच्छा पूरी करने कि लिए*

जब यीशु इस पृथ्वी पर आया तो उसने अपनी इच्छा को पिता के आधीन कर दिया। जब वह पृथ्वी पर चला-फिरा तो उसने अपने पिता की इच्छा को पूरा किया।

यूहन्ना 6:38 – "क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं वरन अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से उतरा हूँ।"

➢ *शैतान के कार्यों को नष्ट करने के लिए*

जहाँ कहीं भी यीशु ने सेवकाई की उसने शैतान के कार्यों को नष्ट किया। यूहन्ना कहता है कि उसका पृथ्वी पर आने का एक मुख्य कारण यही था।

1 यूहन्ना 3:8ब – "परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ कि शैतान के कामों को नाश करे।"

पाप का दण्ड

आदम और हव्वा के पाप ने उन्हें पवित्र परमेश्वर से अलग कर दिया जो कि पाप के साथ नहीं रह सकता था। परमेश्वर अपने प्रेम में पाप को नजर अन्दाज नहीं कर सकता था क्योंकि वह एक न्यायी भी है। एक पवित्र और न्यायी परमेश्वर के द्वारा पाप को बरदास्त नहीं किया जा सकता।

परमेश्वर ने कहा है

उत्पत्ति 2:17ब – ". . . क्योंकि जिस दिन तू इसमें से खाएगा, तू निश्चय मर जाएगा।"

आदम और हव्वा ने परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को खो दिया। जब उन्होंने पाप किया तो परमेश्वर का आत्मा उनके साथ ना रह सका। आदम और हव्वा अपनी सन्तानों वह न दे सके जो अब उनके पास नहीं था और उसके स्थान पर एक पाप का स्वभाव आ चुका था। आदम के पाप का स्वभाव उसकी सन्तानों में चला गया।

1 कुरिन्थियों 15:22 – "ओर जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह मे सब जिलाए जाएँगे।"

पिता के बीज के द्वारा पाप का स्वभाव एक पीढी से दूसरी में चला गया। क्योंकि पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति का एक पिता होता है, प्रेरित पौलूस ने लिखा है,

रोमियों 3:23 – "क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हो गए हैं।"

पाप का दण्ड आत्मिक मृत्यु था, और यह शारीरिक मृत्यु में परिणित हो गई।

रोमियो 6:23 – "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।"

रोमियो 5:12 – "इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया . . ."

यीशु का जन्म

यीशु इस पृथ्वी पर आया, पवित्र आत्मा से गर्भित हुआ, तथा एक कुँवारी से जन्मा और हमारा विकल्प बन गया। चमत्कारी विकल्प बन गया। चमत्कारी रुप से गर्भित होने के कारण यीशु में पाप का स्वभाव नहीं था। उसके अन्दर पिता का स्वभाव था, जो मनुष्य जाति ने खो दिया था।

मति 1:20ब – " हे यूसुफ! दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहाँ ले आने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है।"

मति 1:23 – "देखो, एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा, "जिसका अर्थ है – परमेश्वर हमारे साथ।"

परमेश्वर के प्रेम की योजना

मनुष्य जाति के विषय में परमेश्वर की योजना को समझा नहीं जा सकता। यूहन्ना और पौलूस दोनों ने इसके बारे में लिखा है।

यूहन्ना 3:16 – "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो बल्कि अनन्त जीवन पाए।"

रोमियों 5:8 – "परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।"

परमेश्वर की मनुष्य जाति के लिए महान प्रेम की योजना में अपने इकलौते पुत्र यीशु को इस पृथ्वी पर भेजना तथा उसका एक सिद्ध मनुष्य के रुप में जीवन बिताना एवं उसके बाद उसके पुत्र के द्वारा मनुष्य जाति के पाप के दण्ड को अपने ऊपर उठा लिया जाना भी शामिल था!

1 पतरस 3:18 – "इसलिए कि मसीह ने भी, अर्थात अधर्मियों के लिए धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुँचाए ; वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया।"

यीशु ने हमारा स्थान लिया। जो सारा न्याय हम पर आना था, वह उसने अपने ऊपर उठा लिया। वह हमारे लिए पाप बन गया ताकि हम उस की धार्मिकता को प्राप्त कर लें। उसने हमारे पापों को सह लिया ताकि हमें उन्हें सहना ना पड़े।

2 कुरिन्थियों 5:21 – "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।"

उसने हमारी बीमारियों, रोगों, एवं पीडाओं को उठा लिया ताकि हमें उन्हें उठाना ना पड़े।

यशायाह 53:45 – "निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों (दण्ड को) को उठा लिया ; तौ भी हम ने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ (जैसे की कोढ़ से) समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतू कुचला गया ; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोडे खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ।"

यीशु – हमारा छुडानेवाला

पुराने नियम के प्रारम्भिक लेखों में अय्यूब ने छुटकारा देने आने वाले के बारे में भविष्यवाणी की।

अय्यूब 19:25 – "मुझे तो निश्चय है, कि मेरा छुडाने वाला जीवित है और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा।"

दाऊद ने लिखा,

भजनसंहिता 19:14 – "मेरे मूँह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहण योग्य हों, हे यहोवा परमेश्वर मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करने वाले।"

यशायाह ने छुटकारा देने वाले के बारे में बार-बार लिखा।

यशायाह 44:6 – "यहोवा, जो इस्राएल का राजा है, अर्थात सेनाओं का यहोवा जो उसका छुड़ाने वाला है, वह यों कहता है, मैं सब से पहिला हूँ, और मैं ही अन्त तक रहूँगा ; मुझे छोड़ कोई परमेश्वर है ही नहीं।"

दासता से छुडाए गए

पूरे पुराने नियम में आर्थिक तंगी में पड़ा हुआ व्यक्ति अपने आपको या अपने परिवार को दास होने के लिए बेच सकता था। यह व्यक्ति या अन्य परिवार जन परिवार के किसी सम्बन्धी द्वारा या उनके स्वयं के द्वारा ही "छुडाए" जा सकते थे यदि उनके पास पर्याप्त धन होता था। कभी कभी वे अपनी सेवकाई के वर्षों की संख्या के आधार पर या किसी असामान्य साहसिक कार्य के कारण स्वतंत्र किए जाते थे।

धर्मशास्त्र नया जन्म न पाई हुई मनुष्य जाति को पाप एवं उनके स्वामी शैतान के आशाहीन दासों के रुप में देखता है।

उसके लहू के द्वारा

मनुष्य जाति को किसी भी नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं छुडाया जा सकता-ना ही चांदी या सोना-ना ही किसी कार्य के द्वारा। उनके छुटकारे का दाम परमेश्वर के अनन्त पुत्र जो मनुष्य बन गया उसका लहू था। यह अनन्त मूल्य वाला लहू था, यह इतना सामर्थी लहू था जो कि समस्त मानव जाति के पापों को धोने के लिए पर्याप्त था।

1 पतरस 1:18,19 – "क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बापदादों से चला आता है उस से तुम्हारा छुटकारा चान्दी, सोने अर्थात नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ।"

स्वतंत्र होने कि लिए

इस पद मे यूनानी भाषा से अनुवाद किया गया "छुड़ाए गए" शब्द स्वतंत्र करने या दाम देकर दुड़ाने पर ज़ोर देता है। हम जो कि पहले सृष्टि के द्वारा उसके अपने थे, अब खरीदे जाने के द्वारा छुटकारा देने वाले के हो गए।

यूहन्ना 8:36 – "सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।"

यीशु ने ना सिर्फ हमें छुटकारा दिया, बल्कि उसने हमें स्वतंत्र किया है। उसने अपने ही बहुमूल्य लहू से हमें खरीदा है। हम उसकी सम्पत्ति हो गए हैं, तथा उसके पास हमें स्वतंत्र करने का कानूनी अधिकार है।

राजा एवं याजक होने कि लिए

निम्नलिखित पद में “छुड़ाए गए” के रुप में अनुवाद किया गया मूल शब्द “एगोराज़ो (agorazo)” का अर्थ है “बाजार में खरीदने के लिए जाना।” यीशु ने हमें दासता से खरीदा है ताकि हमें उसमें राजा एवं याजक बना सके।

प्रकाशितवाक्य 5:9,10 – “और वे यह नया गीत गाने लगे, कि तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरे खोलने के योग्य है ; क्योंकि तू ने वध होकर अपने लहू के द्वारा हर एक कुल, और भाषा, और लोग और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है। और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया ; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।”

सम्पूर्ण अनन्तकाल के लिए

संयुक्त शब्द “एगोराज़ो (agorazo)” का अनुवाद गलातियों 3:13 में “छुड़ाए गए” किया गया है, जिस का अर्थ है “कभी ना वापस किए जाने के लिए खरीदे गए।”

गलातियों 3:13 अ – “मसीह ने हमें व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया है . . .”

हमारे लिए किए गए छुटकारे के कार्य के द्वारा हम पाप की गुलामी से, इतने प्रभावी एवं पूर्ण रुप से खरीदे गए कि हम इस बात के लिए सुनिश्चित हो सकते हैं कि हम गुलामों के बाजार में वापस नहीं कि जाएंगे।

यह बात विशेषकर उन लोगों के लिए बड़ा अर्थ रखती थी जो रोमी लोगों के दिनों में अपने स्वामियों द्वारा बोली लगाकर बार बार बेच दिए जाते थे।

यीशु हमारी पहचान

उसके साथ एक हुए

जिस क्षण हमने यीशु पर उद्धारकर्ता के रुप में विश्वास किया, एक चमत्कार हुआ। परमेश्वर पवित्र आत्मा ने हमें उसके साथ एक कर दिया। हम उसके अंग बन गए।

1 कुरिन्थियों 12:13,14 – “क्योंकि हम सब क्या यहूदी हो, क्या यूनानी हो, क्या दास हो, क्या स्वतंत्र हो, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपत्तिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया। इस लिए कि देह में एक ही अंग नहीं परन्तु बहुत से हैं।”

यीशु मसीह के छुटकारे के कार्य का कारण यही नहीं था कि एक दिन हम उसके साथ स्वर्ग में हों। पतरस ने लिखा कि यीशु ने एक मार्ग प्रदान किया कि जिससे हम धार्मिकता में जीवन बिताएं।

1 पतरस 2:22,24 – “न तो उसने पाप किया, और न उसके मूँह से छल की कोई बात निकली . . . वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिससे हम पापों के लिए मरकर धार्मिकता में जीवन बिताएं, उसी के मार खाने से तुम चंगे हो गए।”

हमारे किए पाप बना

यीशु मसीह अपने छुटकारे के कार्य में हमारे लिए पाप “बन गया” उसने स्वेच्छा से हमारे पापों को क्रूस के ऊपर अपने शरीर पर ले लिया।

2 कुरिन्थियों 5:21–"जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमे होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।"

हमारे लिए श्राप बना

जो श्राप मानवजाति पर पाप के कारण आया था उसे यीशु ने अपने ऊपर ले लिया।

गलातियों 3:13 –"मसीह ने जो हमारे लिए शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया (क्योंकि लिखा है, "जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।)"

हमारे पापों को उठा ले गया

क्रूस पर यीशु "परमेश्वर का वह मेमना बना जो जगत के पापों को उठा ले जाता है।" वह हमारे पापों को पृथ्वी की गहाईयों में हमेशा के लिए ले गया, ताकि उन्हें परमेश्वर के द्वारा स्मरण ना किया जाए।

यूहन्ना 1:29–"दूसरे दिन उसने यीशु को अपनी ओर आते देख कर कहा, "देखो, यह परमेश्वर का मेमना है जो जगत का पाप उठा लिया जाता है।"

भजनसंहिता 88:3 ,6,7,–"क्योंकि मेरा प्राण क्लेश से भरा हुआ है, और मेरा प्राण अधोलोक के निकट पहुँचा है।"

"तूने मुझे गड्हे के तल ही मे अन्धेरे और गहिरे स्थान में रखा है। तेरी जलजलाहट मुझ ही पर बनी हुई है और तू ने अपने सब तरंगों से मुझे दुख दिया है।

हम उसकी मृत्यु में उसके साथ एक हुए।

रोमियों 6:6–"हम जानते हें कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, और हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।"

जीवित किए गए

हमारे पापों को पृथ्वी की गहराईयों में सौंप कर, वह मृत्यु, नरक एवं कब्र पर विजयी होकर जी उठा वह "मृतकों में से जी उठो में पहलौठा" बना।

कुलुस्सियों 1:18–"वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है ; वही आदि है, और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।"

वह आत्मा के द्वारा "जीवित किया गया"।

1 पतरस 3:18–"इसलिए कि मसीह ने भी, अर्थात अधर्मियों के लिए धर्मी ने, पापों के कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुँचाए ; वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया।"

जब यीशु को जीवित किया गया, तब हमें भी उसके साथ जीवित किया गया।

इफिसियों 2:5,6 – "जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)। और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया . . .।"

जब यीशु को जिलाया गया, तो उसे पिता का सम्पूर्ण जीवन और स्वभाव वापस लौटाया गया। वह एक बार फिर धर्मी बनाया गया।

रोमियों 3:26 – "वरन इसी समय उसकी धार्मिकता प्रगट हो कि जिससे वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे उसका भी धर्मी ठहराने वाला हो।"

हमारी धार्मिकता बना

उद्धार के समय हमें यीशु की धार्मिकता दी गई। ठीक वैसे ही धर्मी बन गए जैसे यीशु धर्मी है।

पौलूस ने लिखा,

2 कुरिन्थियों 5:21 – "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।"

अब हम जो धर्मी बनाए गए हैं, "हमें धार्मिकता के लिए जीना है।"

पतरस ने लिखा,

1 पतरस 2:24अ – "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिए मर कर धार्मिकता के लिए जीवन बिताएँ।"

मसीह में नई सृष्टि होने के नाते अब हम पापी नहीं रहे। हमें धर्मी बनाया गया है।

2 कुरिन्थियों 5:17 – "इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं ; देखो सब बातें नई हो गई हैं।"

हमें और अधिक दोष और दण्ड में जीने की आवश्यकता नहीं। हमें धर्मी बनाया गया है।

हमें पाप के ऊपर ध्यान नहीं लगाना है बल्कि हमें धार्मिकता के प्रति ध्यान लगाना है।

हमें शैतान को अनुमति नहीं देनी है कि वह हमें नीचा करे और हरा दे।

हम जानते हैं कि "हम यीशु मसीह में परमेश्वर की धार्मिकता हैं।" हम दोष और दण्ड से आजाद हैं।

रोमियों 8:1 – "अतः अब जो मसीह में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं।"

हम मसीह यीशु में नई सृष्टि हैं। हमारी आत्माएं उसी तरह धर्मी हैं जैसे परमेश्वर धर्मी है। प्रत्येक दिन हमारे प्राण और आत्माएं उसके पुत्र के स्वरुप के अनुरुप किए जाते हैं!

विचार विमर्श के लिए प्रश्न

1. यूहन्ना 5:24-27 के अनुसार जब यीशु इस पृथ्वी पर था तो उसने किस अधिकार के साथ कार्य किया।

2. हमारे बदले में छुटकारा देने वाले के रुप में यीशु के कार्य का वर्णन करो।

3. हमारे लिए "मसीह में, परमेश्वर की धार्मिकता"बन जाना कैसे सम्भव है?

पाठ चार

नई सृष्टि का स्वरुप

मसीह में

प्रेरित पौलूस के अनुसार जब हम यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रुप में ग्रहण करते हैं, हम मसीह में हैं। हम नई सृष्टि हैं। हमारे जीवनों में सब कुछ नया हो जाता है।

2 कुरिन्थियों 5:17 – "अतः यदि कोई मसीह में है तो वह एक नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गईं ; देखो सब कुछ नया हो गया।"

जिस समय हम यीशु को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण करते हैं पवित्र आत्मा हमें यीशु मसीह से जोड़ देता है। हम अनन्तकाल तक के लिए उसके साथ एक हो जाते हैं।

पुरानी बातें बीत गईं

जब हम "मसीह में" हो जाते हैं तो पुरानी बातें बीत जाती हैं। इसका अर्थ है हमारा जो हिस्सा पहले कायम था, वह आगे को कायम नहीं रहता। जिस हिस्से को "पुरानी वस्तुएँ" कहा गया है वह मर जाता है। इसके साथ ही एक नया जन्म होता है–एक नया आत्मिक जन उत्पन्न होता है।

सब वस्तुएं नई हो गईं

एक नया विश्वासी वैसा ही व्यक्ति नहीं बना रहता, जैसा कि वह पहले हुआ करता था। वह व्यक्ति अब आगे को जीवित नहीं रहता। वह व्यक्ति मर चुका है। सब वस्तुएं नई हो गई।

यह कितनी चौकाने वाली बात होगी जब हम एक नए जन्में बच्चे को दिखा रहे हो और कौई पूछे, "इस बच्चे का अतीत नहीं है?"

आप जवाब देंगे, "बच्चा तो अभी पैदा हुआ है। इसका कोई अतीत नहीं है।"

इसी तरह से ही जब हम नया जन्म पा जाते हैं तो शैतान हमें हमारी पुरानी असफलताएँ और पाप याद दिलाने आता है। हमारे जीवन का वह पुराना हिस्सा जाता रहा। वह है ही नहीं। नई सृष्टि के रुप में हमारा कोई अतीत नहीं है जिस पर दोष लगाने के लिए शैतान उसे ले आए। पौलूस ने लिखा, "पुरानी बातें बीत गईं। सब बातें नई हो गई हैं!"

नया जन्म

जब यीशु ने निकोदिमुस से बातें की उसने कहा तुझे नया जन्म पाना अवश्य है।

यूहन्ना 3:7 – "अचम्भा न कर कि मैंने तुझसे कहा, "तुझे नए सिरे से जन्म लेना अवश्य है।"

पहली बार तो निकोदिमुस ने सोचा यीशु उसके शरीर के नए जन्म लेने की बात कर रहा है। जब यीशु ने इसे स्पष्ट किया कि मनुष्य जाति के जिस हिस्से को नए जन्म का अनुभव पाने की आवश्यक्ता है वह शरीर या प्राण नहीं है। वह मनुष्य का आत्मा है।

यूहन्ना 3:5,6 – "यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है ; और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है।"

एक नया आत्मा

उद्धार के समय, हमारा नया बना आत्मा सिद्ध होता है। उस समय से ज्यादा सिद्ध एवं धर्मी यह कभी नहीं हो सकता।

आत्मा हमारा वह हिस्सा है जो हमेशा जीवित रहेगा। यह वह भाग है जो परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति सजग रहता है। विश्वासी का आत्मा वह भाग है जो परमेश्वर के साथ संगति कर सकता है, क्योंकि यह उतना ही धर्मी होता है जितना धर्मी परमेश्वर है।

"पत्थर का हृदय" जा चुका है। परमेश्वर ने हमें "मॉस का हृदय दिया है।" उसने हमें एक ऐसा हृदय दिया है जो कि कोमल, दयालु और प्रेमी है। उसने हमें एक ऐसा हृदय दिया है जो धार्मिकता के लिए जीना चाहता है।

यहेजकेल 11:19 – "मैं उनका हृदय एक कर दूँगा, और उनके भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा, और उनकी देह में से पत्थर का सा हृदय निकालकर उन्हें मॉस का हृदय दूँगा।"

हमारी आत्माएं यीशु में सिद्ध है। परमेश्वर हमारे मनों के नया कर देने के द्वारा हमारे प्राणों को बहाल कर देना चाहता है। परमेश्वर हमारे शरीरों को पूर्ण स्वास्थय देना चाहता है। उद्धार की घटना से हम एक नई सृष्टि बन जाते हैं। शरीर (हड्डियाँ, मॉस और खून) तथा प्राण (बुद्धि, इच्छा और भावनाएं) पूरी तरह नहीं बदले थे लेकिन आत्मा उद्धार के समय नई एवं सिद्ध हो गई।

पौलूस ने फिलिप्पियों को कुछ बड़ी ही रुचिकर बातें लिखीं- "अपने उद्धार के कार्य को पूरा करो"

फिलिप्पियों 2:12 – "इसलिए हे मेरे प्रियों, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और काँपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ।"

हम जानते हें कि उद्धार मुफ्त है ; और यह पद अन्य से विपरीत लगता है जब तक कि हम यह न समझें कि उद्धार के समय हमारी आत्माएं मसीह में सिद्ध बना दी गई हैं। उसी समय से हमारी आत्माएं परमेश्वर की आत्मा के साथ मिलकर कार्य करती हैं कि हमारे मनों एवं शरीरों को मसीह के स्वरुप के अनुरुप बना सकें। वे प्रतिदिन बदलती रहती हैं। हमारा उद्धार हमारे मनों और शरीरों पर कार्य करता रहता है।

पौलूस आगे लिखता है,

फिलिप्पियों 2:13 – "क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।"

मसीह यीशु में हमारा आत्मिक मनुष्यत्व क्या है इसे जानना बहुत महत्वपूर्ण है। हमें यह समझना जरुरी है कि हमारी फिर से बनाई गई आत्मा परमेश्वर की दृष्टि में पूर्णतः धर्मी एवं सिद्ध है।

इस प्रकाशन तथा यीशु के द्वारा हमारे बदले मे किए गए छुडौती के कार्य की समझ रखने के द्वारा हम अपने प्राणों एवं शरीरों के स्वास्थ्य में आगे बढ़ना प्रारम्भ करते हैं।

जब हम परमेश्वर के वचन को पढ़ते सुनते, मनन करते, विश्वास करते, बोलते, एवं उस पर कार्य करते हैं तो हमारे मन नए होते जाते हैं और इससे हमारे प्राण उन्नति करते हैं।

रोमियों 12:2 – "इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल – चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।"

जैसे कि हमारे प्राणों को बदल दिया गया है – उसके स्वरुप में कर दिया गया है – इससे हम उन्नति करेंगे, एवं हमारे शरीर स्वस्थ रहेंगे। यूहन्ना ने इसके बारे में लिखा है।

3 यूहन्ना 1:2 – "हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है कि जैसे तू आत्मिक उन्नति कर रहा है वैसे ही तू सब बातों में उन्नति करे और भला चंगा रहे।"

परमेश्वर की धार्मिकता

परमेश्वर कितना धर्मी है?

- परमेश्वर अपने अस्तित्व एवं अपने सारे मार्गों में पूर्णतः धर्मी है।
- उसकी धार्मिकता पाप की अनुपस्थिति या पाप न करने की योग्यता से कहीं अधिक है।
- यह पूर्ण एवं अनन्त भलाई है जो पाप को देख नहीं सकती या पाप के साथ वास नहीं कर सकती।
- परमेश्वर पाप करने की योग्यता के बिना है।

परमेश्वर अपनी धार्मिकता में आदम और हव्वा एवं उसकी सन्तानों के पाप को नज़र अंदाज न कर सका, यद्यपि अपने प्यार में वह ऐसा करना चाहता होगा।

रोमियों 3:25,26 – "उसे परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहले किए गए और जिन पर परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता के कारण ध्यान नहीं दिया। उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे। वरन् इसी समय उसकी धार्मिकता प्रगट हो कि जिससे वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे उसका भी धर्मी ठहराने वाला हो।"

परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास के द्वारा प्रगट होती है।

रोमियो 1:17 – "क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिए प्रगट होती है, जैसा लिखा है, "विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।"

हमारी धार्मिकता

हम अपने स्वयं की कार्यों के द्वारा धर्मी नहीं बनाए जा सकते। यशायाह नबी ने हमारी धार्मिकता क एक स्पष्ट तस्वीर पेश की है।

यशायाह 64:6अ – "हम तो सब के सब अशुद्ध मनुष्य के से हैं, और हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चिथडों के समान हैं।"

हम कितना भी कठिन से कठिन क्यों न करें फिर भी वह परमेश्वर की दृष्टि में मैले चिथडों के समान ही होगा। एक नई सृष्ठि बनने से पहले हमने जितने भी अचछे कार्य किए हैं वे सब मैले चिथडों के ढेर में जुड़ गए हैं।

बदले में प्राप्त धार्मिकता

जब यीशु क्रूस पर मरा तो उसने हमारे सारे पापों को उठा लिया – हमारी अधार्मिकता को अपने ऊपर ले लिया। उसने बदले में हमें अपनी धार्मिकता दे दी। कितनी अद्भुत अदला – बदली है।

हमारे पाप उस पर डाल दिए गए।

उसकी पूर्ण धार्मिकता हम पर डाल दी गई।

जिस क्षण हमने यीशु मसीह में अपने उद्धारकर्ता के रुप में विश्वास किया हमारी आत्माएं "परमेश्वर की धार्मिकता" बन गई।

रोमियो 3:22 – ". . . परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करने वालों के लिए है।"

"विश्वास" शब्द का अर्थ है यीशु के हमारे बदले में किए गए छुटकारे के कार्य पर भरोसा करना, सहमत होना या आश्वस्त होना। पौलूस ने कहा है कि जब हमने नया जन्म पाया एवं एक नई सृष्टि बन गए, तो हम यीशु में परमेश्वर की धार्मिकता बन गए।

2 कुरिन्थियों 5:21 – "जो पाप से अज्ञान था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमे होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।"

जब हम परमेश्वर की धार्मिकता बन जाते हैं तो इसका अर्थ सिर्फ यह नहीं कि अब हम आगे को पापी नहीं रहते। इसका अर्थ सिर्फ यही नहीं कि हमारे सारे पाप माफ कर दिए गए हैं – यह बडी अद्भुत बात है। जब हम परमेश्वर की धार्मिकता बन जाते हैं, तो इसका अर्थ है हमारी आत्माएं उतनी ही धर्मी हो जाती हैं जितना कि परमेश्वर स्वयं धर्मी है।

हमें धर्मी घोषित किया गया है।

हमने परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त किया है।

पूराना अधर्मी स्वरुप

हम इतने धर्मी हैं जितना कि धर्मी परमेश्वर है यह बात कुछ लोगों को स्वीकार करने में कठिनाई होती है। हमे सही अर्थ वाले शिक्षकों के द्वारा कुछ हटकर सिखाया गया है।

बहुत से मसीह लोग यह न जानते हुए कि वे मसीह यीशु मे कौन हैं अपना सम्पूर्ण जीवन दोष और दण्ड मे पिसते हुए बिताते हैं

विश्वास के द्वारा हमें यह बात स्वीकार करनी चाहिए कि हम परमेश्वर की धार्मिकता हैं। जितना अधिक हम परमेश्वर के प्रति संवेदनशील होते हैं, उतना ही अधिक हम पाप के प्रति संवेदी होने की बजाय धार्मिकता के प्रति संवेदी हो जाते हैं।

- *आगे को पापी नहीं*

हमें अपने आप को “अनुग्रह से बचाए गए पापियों” की जरह ही नहीं देखते रहना चाहिए। अब हम आगे को पापी न रहे। हम नई सृष्टि हैं।

बहुत से लोग पाप करते हुए स्वयं को पाते हैं क्योंकि उनसे लगातार कहा जाता रहा था कि वे पापी हैं।

उन्होंने एक के बाद एक पाप पर शिक्षा सुनी। उनके विचार निरन्तर पाप पर बने रहे।

उन्हें धार्मिकता का प्रकाशन नहीं मिला इसलिए पाप अब भी उनके जीवनों में शासन करता है। परमेश्वर की धार्मिकता के प्रकाशन के द्वारा हम धार्मिकता के प्रति संवेदी हो जाते हैं। हम स्वयं को वैसा ही देखते हैं जैसा हमें परमेश्वर देखता है। हम स्वयं को उतना ही धर्मी देखते हें जितना धर्मी परमेश्वर हमें देखता है। अत: पाप हमारे शरीरों मे राज्य नहीं करता। हम आगे आदतन पाप नहीं करते रहते।

हम पाप को ऐसे देखते हैं जैसे परमेश्वर पाप को देखता है। हमारे लिए इसका आकर्षण नहीं होता क्योंकि हमें परमेश्वर की धार्मिकता का प्रकाशन मिल चुका होता है।

उसके स्वरुप में ढलते जाना

मसीह यीशु में एक नई सृष्टि के रुप में जब हम परमेश्वर की धार्मिकता में निरन्तर चलते रहते हैं तो हम अपने मनों के नए हो जाने के कारण बदलते जाते हैं। यह एक प्रक्रिया है। हम प्रतिदिन उसके पुत्र के स्वरुप में ढलते जाते हैं।

रोमियों 8:29 – “क्योंकि जिन्होंने उन्हें पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरुप में हों ताकि वह बहुत भाईयों मे पहलौठा ठहरे।”

पाप को मानें

यदि विश्वासियों के रुप में हम कोई पापमय कार्य करते हैं तो हमें अपने बाकी जीवन भर हार, दोष एवं दण्ड में जीवन जीने की आवश्यक्ता नहीं है।

जिस क्षण हम यह महसूस करते हैं कि हमने पापमय कार्य किया है हमें उस पाप को परमेश्वर के सम्मुख मान लेना चाहिए तथा विश्वास के साथ उसकी क्षमा को प्राप्त करना चाहिए। तब हम दोष एवं दण्ड से मुक्त होकर धार्मिकता में चलते रहेंगे।

1 यूहन्ना 1:9 – "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है।"

मान लेने का मतलब है हमारे पाप के बारे में परमेश्वर के साथ सहमत होना। हमें परमेश्वर की तरह पाप से घृणा करनी चाहिए। हम परमेश्वर के जितना समीप होते हैं, उतना ही अधिक हम धार्मिकता के प्रकाशन में चलते हैं, उतना ही कम हम पाप के प्रति परीक्षा में पड़ते हैं।

फिर से वापस आना सीखें

जब हम अपने जीवनों के किसी क्षेत्र में स्वयं को असफल पाते हैं तो तुरन्त फिर से वापस सीखें। ठीक उसी मुक्केबाज की तरह जिसे घूँसा मारकर नीचे गिरा दिया जाता है, हमें वहीं गिरे पडे हुए अपने पर दुख महसूस नहीं करना है। इसके बजाय हमे जमीन से तुरन्त उठकर अपने पैरों पर खड़ा होना सीखना है (हमें वापस आकर आगे बढ़ते जाना चाहिए।

जब हम पाप कर चुके होते हैं तो हमें स्वयं को दोष, दण्ड, एवं हार के विचारों के हवाले नहीं कर देना है। बल्कि हमें तुरन्त अपने पापों का अंगीकार करना चाहिए तथा परमेश्वर की क्षमा का पूर्ण आश्वासन प्राप्त करना चाहिए। एक जीतने वाले मुक्केबाज की तरह हमें पुण: उछलकर वापस आना चाहिए और जीत की तरफ आगे बढ़ते जाना चाहिए।

बदलते चले जाएं

हमारी आत्माओं में परमेश्वर की धार्मिकता पाई जाती है, लेकिन हमें प्रतिदिन अपने शरीरों को एक जीवित बलिदान के रुप में परमेश्वर को समर्पित करते रहना है।

रोमियों 12:1 – "इसलिए हे भाईयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावना हुआ बलिदान करके चढाओ, यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।"

हमारी आत्माओं में परमेश्वर की धार्मिकता है, लेकिन हमारे प्राणों को परमेश्वर के वचन के प्रकाशन के द्वारा हमारे मनों के नए होते जाने के कारण बदलते जाना है।

रोमियों 12:2 – "इस संसार के सदृश्य न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।"

हियाव बाँधे

नई सृष्टि में परमेश्वर की धार्मिकता के प्रकाशन के द्वारा हम परमेश्वर के सिंहासन के सम्मुख दृढ़ता के साथ जा सकते हैं। हम जान सकते हें कि परमेश्वर हमारी सुनेगा।

इब्रानियों 4:16 – "इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहसन के निकट हियाव बाँधकर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएँ जो आवश्यक्ता के समय हमारी सहायता करता है।"

हम भरोसे एवं हियाव के साथ परमेश्वर के निकट आ सकते हैं क्योंकि हम उसके अनुग्रह को समझते हैं। हम जानते हैं यीशु ने हमारे बदले में क्या किया है। हम जानते हें कि हमें क्षमा कर दिया गया है। हम जानते हें कि हम यीशु मसीह में एक नई सृष्टि हैं। हम जानते हें कि हम परमेश्वर की धार्मिकता हैं।

जीवत रहें

एक नई सृष्टि के रुप में हमारे अन्दर एक नया जीवन होता है। यह नया जीवन स्वयं मसीह का की अपना जीवन होता है।

इफिसियों 2:4,5अ–"परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस से उसने हम से प्रेम किया, जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया. . ."

जो पुराना मनुष्यत्व इस दुनिया की रीत के अनुसार चलता है वह अब आगे को कायम न रहा। एक नया आन्तरिक मनुष्य जीवित कर दिया गया है।

इफिसियों 2:1–3 –"उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों मे मरे हुए थे। जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है। इनमें हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर और मन की इच्छाएं पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की संतान थे।"

भरपूर रहें

नई सृष्टि के रुप में हमारी आत्माएं परमेश्वर की परिपूर्णता से भरपूर हैं। वह जो कुछ है–उसने हमें उससे भरपूर कर दिया है। उसके पास जो कुछ है उसकी बहुतायत का माप हमारा हो चुका है।

इफिसियों 3:19 –"और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।"

व्याख्यात्मक बाईबल में कहा गया है

". . . आप परमेश्वर की पूर्णता से पूरी तरह भर जाएं अर्थात दिव्य उपस्थिति की भपूरी को प्राप्त करें, और एक ऐसा शरीर बन जाएं जो पूर्णतः स्वयं परमेश्वर की उपस्थिति से भरपूर एवं उमण्ड रहा हो।"

नई सृष्टि के रुप में हम और आगे को खाली नहीं रहे। इसके बजाय हम परमेश्वर से भरे हुए हैं। हम उसकी भपूरी से उमण्ड रहे हैं।

जितना अधिक हम परमेश्वर की धार्मिकता की भूख और प्यास रखते हैं, उतना ही हम स्वयं को यहाँ तक की अपने प्राणों एवं शरीरों में भी परमेश्वर की धार्मिकता को भरा हुआ पाएंगे।

मति 5:6 –"धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे एवं प्यासे हैं क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।"

उसके प्रेम को प्राप्त करे

यह जानना कितना ही अद्‌भुत है कि परमेश्वर हम पर क्रोधित नहीं है! वह हमें प्रेम करता है। यहां तक कि जब हम उसके शत्रु ही थे, उसने हमे प्रेम किया।

यूहन्ना 15:12,13द,– "मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे। जो आज्ञा में तुम्हें देता हूँ, यदि उसे मानो तो तुम मेरे मित्र हो।"

माँस के एक नए हृदय के साथ एक नई सृष्टि के रुप में हमें जो आज्ञा वह देता है हम उसे तुरन्त पूरा करने के लिए तत्पर रहते हैं।

➢ परमेश्वर के मित्र बनें

यह जानकर कितनी खुशी होती है कि परमेश्वर हम पर क्रोधित नहीं है। वह अब हमसे कह रहा है, "तुम मेरे मित्र हो!" हम, जो कभी उसके शत्रु थे, अब मसीह के द्वारा उसके साथ हमारा मेल हो चुका है। अब हम उसके मित्र हैं और वह हमारा मित्र है। परमेश्वर के मित्र के रुप में, हमारे पास मेल-मिलाप की सेवकाई है। हम चाहते हैं कि दूसरे लोग हमारे मित्र से मिलें, और हमारी तरह, परमेश्वर के मित्र बन जाएं।

➢ उसके साथ मेल-मिलाप कर लें

नई सृष्टि के रुप में हमारा उसके साथ मेल-मिलाप हो चुका है।

2 कुरिन्थियों 5:17,18,– "इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं। ये सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया, और मेल-मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है!"

पुनः विचार के लिए प्रश्न

1. एक नई सृष्टि होने का क्या अर्थ है?

2. परमेश्वर की धार्मिकता का वर्णन करो।

3. नई सृष्टि की धार्मिकता का वर्णन करो।

<u>पाठ पाँच</u>

अपने स्वयं के पुराने स्वरुप की अदला–बदली

चुनाव हमारा है

जब हम इन पाठों की श्रंखलाओं का अध्ययन करते हैं, तो हम ऐसे स्थान पर पहुँचेंगे जहाँ हमें चयन करना अवश्य होगा। क्या हम परमेश्वर के वचन के प्रकाशन पर विश्वास करेंगे या हम परम्परागत शिक्षाओं से चिपके रहेंगे जो हम वर्षों से सुनते रहे हैं?

क्या हम प्रेरित पौलूस से सहमत होंगे जब वह लिखता है,

"यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गईं; देखो सब कुछ नया हो गया?" (2 कुरिन्थियों 5:17)

हम क्या होने के लिए बनाए गए थे, अपने स्वर्गीय पिता, तथा यीशु मसीह के हमारे स्थान पर किए गए छुटकारे के महान कार्य के बारे में हमने अध्ययन किया है। अब विवेक के साथ परमेश्वर ने जो कुछ हमारे लिए रखा है उसमें आगे बढ़ने का निर्णय लेने का समय है।

स्वयं के पुराने स्वरुप को उतार फैंकना

स्वयं का एक अच्छा स्वरुप रखना महत्वपूर्ण है। शैतान हमें यह आश्वासन न दे सके कि हम परमेश्वर की आशीषों को पाने के योग्य नहीं हैं। यदि ऐसा हुआ तो हम जीवन को हार के साथ बिताएंगे। यदि हम हारा हुआ जीवन जीएंगे, तो हम सफलता पूर्वक शैतानी शक्तियों से नहीं लड़ पाएंगे। हम विजयी मसीही जीवन नहीं जी पाएंगे तथा दूसरों को प्रभावी तरीके से सुसमाचार नहीं सुना पाएंगे।

हम में से कई लोगों को प्रयास करके पुराने मनुष्य को–पुरानी आदतों को उतार फैंकने की तथा हमारे मनों के नए हो जाने के द्वारा नई सृष्टि के स्वरुप को पहन लेने की आवश्यक्ता है।

पौलूस पुराने मनुष्य को उतार फैंकने के बारे में लिखता है। यह हमारी इच्छा के द्वारा किया गया कार्य है।

इफिसियों 4:22,23 – "कि तुम पिछले चाल–चलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो। और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नए बनते जाओ।"

नए मनुष्यत्व को पहन लेना

जब हम पुराने मनुष्यत्व को उतार देते हैं तो हमें अपने मनों में नया हो जाना चाहिए। यह नयापन हमारे अन्दर तभी आ सकता है जब हमारे मन परमेश्वर के वचन के प्रकाशन के द्वारा विश्वास में नए हो जाऐंगे।

पौलूस अगले पद में आगे लिखता है।

इफिसियों 4:24 – "और नए मनुष्यत्व को पहन लो जो परमेश्वर के अनुरुप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है।"

जब हम पुराने मनुष्यत्व, अपने पुराने स्वरुप, उस पुराने व्यक्ति को उतार फैंकते हैं, तथा अपने मनों को परमेश्वर के वचन के अनुसार नया कर लेते हैं तो हम नए मनुष्य, एक नई सृष्टि को पहन रहे होते हैं।

नई सृष्टि अब आगे को इसी बात पर सीमित नहीं रहती कि एक व्यक्ति अपनी पाँच ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा क्या अनुभव करता है। नई सृष्टि विश्वास के क्षेत्र में रहती है। नई सृष्टि जानती है कि यह परमेश्वर के अनुसार उसकी धार्मिकता और पवित्रता में सृजी गई है।

नई सृष्टि अब अपने आपको पापी के रुप में नहीं देखती रहती है। वे जानते हैं कि उनकी आत्माएं उतनी धार्मिक एवं पवित्र है जितना की परमेश्वर है। वे जानती हैं कि उनके प्राण एवं शरीर पुत्र के स्वरुप में उसकी स्वभाविक एवं प्रायोगिक धार्मिकता एवं पवित्रता में प्रतिदिन बढ़ रहे हैं।

पुराने दृढ़गढ़

जब हम बढ़ रहे थे तो शैतान ने हमारे मनों में विभिन्न दृढ़गढ़ बना दिए थे। अब जबकि हम प्रोढ़ हो चुके हैं तो हम सोचते हैं कि हम कोई विशेष कार्य को नहीं कर सकते, क्योंकि बचपन में हमसे कहा गया था कि हम नहीं कर सकते। नाश करने वाले शब्द किसी एक समयान्तराल तक बार-बार बोले जाने के कारण वे दृढ़गढ़ बन जाते हैं, जिनको तोड़ा जाना अवश्य है।

असक्षमता

शायद आप से कहा गया था, “अरे, इसे करने की कोशिश मत करना ; आप का बड़ा भाई इसका ख्याल रखेगा। आप सोचने लगे, मैं उतना सक्षम नहीं हूँ जितना की मेरा भाई सक्षम है।

हीनता

एक अध्यापक ने कहा होगा, “मुझे समझ नहीं आता तुम्हारे साथ यह समस्या क्यों है, बाकी कक्षा को इस बारे में कोई समस्या नहीं है।” तुरन्त आपको विचार आया होगा कि “मैं उतना तेज नहीं हूँ जितनी की पूरी कक्षा।”

बदलाव रहित

शायद हम ने उस बात पर विश्वास कर लिया जो उन्होंने हमारी जातीय पृष्ठभूमि के बारे में कहीं या लोगों के उस समूह के बारे में कहीं जिससे हमारी पहचान है। ये विचार शायद हमारे जीवनों पर गहरा निशान बन गए हों।

यदि आप के बाल लाल हैं तो आपने सुना होगा कि “लाल बाल वाले गर्म-मिजाज होते हैं।”

एक अन्य न बदलने वाली बात यह हो सकती है कि “मैं हमेशा चिन्ता करता था, इसलिए मैं भी वैसा ही हूँ।”

हमने अपनी जाति एवं जातीय पृष्ठभूमि के बारे में बहुत सी बातें सुनी और उन पर विश्वास कर लिया होगा कि हम हमारे आस पास के लोगों की तरह नहीं है हमारी उनसे तुलना नहीं। “आयरिश ऐसे ही होते हैं . . .” या “जरमनी लोग हमेशा ऐसे ही होते हैं . . .”

नई सृष्टि का प्रकाशन हमें हीनता या असक्षमता के उन विचारों से आजाद करेगा जिन्होंने अतीत मे हमारे जीवनों पर एक छाया डाल दी होगी।

पूर्व धारणा

नई सृष्टि का प्रकाशन हमें पूर्व धारणाओं से आजाद करेगा। हम प्रत्येक जाति के सह विश्वासियों को मसीह में एक नई सृष्टि के रुप में देखने लगेंगे।

निम्नलिखित पद में पौलूस ने नई सृष्टि के बारे में अपने प्रकाशन में लिखा है

2 कुरिन्थियों 5:6अ–“अतः अब से हम किसी को शरीर के अनुसार नहीं समझेंगे...”

पौलूस ने गलातियों में यह भी लिखा,

गलातियों 3:26–28–“क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है। अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतंत्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।”

जब हम यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता ग्रहण करते हैं, तो हमारा नया जन्म एक नए परिवार, में होता है। हमें अपने जीवनों में पूर्व धारणा के दृढगढ़ों को नहीं रहने देना चाहिए। हमें प्रत्येक विश्वासी को नई सृष्टि तथा अविश्वाससी को सम्भावित नई सृष्टि के रुप में देखना चाहिए।

हमें स्वयं को तथा अन्य विश्वासियों को ऐसे ही देखना चाहिए जैसे परमेश्वर हमें देखता है। एक नए रुप से सृजे गए आत्मिक प्राणियों के रुप में हम अब अपने वंश या जातीय समूह के नहीं रहे। हम नए परिवार, परमेश्वर के परिवार मे जन्में हैं। हम किसी अन्य व्यक्ति को अब उसकी त्वचा के रंग के आधार पर सम्मान नहीं देंगे। हम स्वयं को एवं अन्य लोगों को यीशु मसीह की सृष्टि के रुप में ग्रहण करेंगे।

दृढगढों को गिरा देना

शैतान हमारे पुराने हीनताओं असक्षमताओं तथा पूर्व धारणाओं के भावों को हमें बन्धनों में जकड़े रखने के लिए उपयोग करेगा। यही समय है इन दृढगढों को नष्ट कर देने का।

उन्हें नष्ट कर दें

यदि परमेश्वर ने इस अध्ययन के दौरान आप पर कुछ दृढगढों को प्रगट किया है तो आप उन्हें अभी तोड़ सकते हैं। सिर्फ जोर से यह बोलें,

“शैतान मैं तुझे यीशु के नाम से बाँधता हूँ।
मैं इस दृढगढ-(उसका नाम)-को अभी नकार देता हूँ,
यीशु के नाम में। मैं इसे रहने नहीं दूँगा।
परमेश्वर अपने वचन के द्वारा जो प्रकाशन देता है कि मैं कौन हूँ,
मैं क्या कर सकता हूँ या मसीह यीशु में एक
नई सृष्टि होने के कारण मैं क्या पा सकता हूँ,
इसके विरुद्ध उठने वाले प्रत्येक विचार एवं

कल्पनाओं को मैं बाहर कर देता हूँ।"

पुराने नाकारात्मक विचारों को बोलने एवं सोचने की आदत को तोड़ने में समय लग सकता है। लेकिन जब भी ये विचार हमारे मनों में आते हैं, हमें तुरन्त उन्हें नकार देना, बाहर कर देना चाहिए तथा उस प्रकाशन का अंगीकार करना चाहिए जो परमेश्वर का वचन नई सृष्टि के बारे में प्रगट करता है। ऐसा करने से आदत जल्द छूट जाएगी एवं आप आजाद हो जाएंगे। यह सोचना और बोलना प्रारम्भ करें,

"परमेश्वर का वचन कहता है मैं एक नई सृष्टि हूँ।
मैं परमेश्वर का परिवार हूँ और परमेश्वर के
परिवार में कोई . . . . . . नहीं है। पुरानी बातें बीत गई हैं।
मैं मसीह में एक नई सृष्टि हूँ।"

श्रापों को तोड़ दें

शैतान पुरानी पीढ़ियों के पापों के द्वारा हम पर कोई श्राप डालने में सफल हो गया होगा। उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति आत्महत्या करता है, तो आत्म हत्या की आत्मा उस परिवार में तब तक रहती है जब तक कि उसकी ताकत को यीशु के नाम में तोड़ न दिया जाए।

जब कोई व्यक्ति हत्या करता है तो हत्या की आत्मा उस परिवार को पीढ़ी दर पीढ़ी प्रताडित करती रहती है।

कुछ ऐसे पीढ़ी दर पीढ़ी के श्राप या पीढ़ी पर पीढ़ी की आत्मा होती है जो कुछ बीमारियों को अनुमति देती है कि वे हमारे शरीरों पर लग जाएँ। "अरे, हाँ, हृदय की समस्या हमारे परिवार मे चलती है।" या "हमारे परिवार की सभी स्त्रियों को केन्सर होता है।"

पीढ़ियों के श्राप को तोड़ना उतना ही आसान है जितना कि अपने मन को दृढगढ़ को तोड़ना आसान है।

कहें

" शैतान मैं तुझे यीशु के नाम से बाँधता हूँ!
मैं . . . . , ...तथा . . . . .
के श्रापों को तोड़ देता हूँ।
मैं आज्ञा देता हूँ कि पीढ़ियों के समस्त श्राप एवं पीढ़ी दर पीढ़ी
चलने वाली प्रत्येक दुष्टआत्मा मेरे जीवन से अभी टूट जाए।
मैं एक नई सृष्टि हूँ। मैं परमेश्वर की एक सन्तान हूँ।
मैं एक नए परिवार का हिस्सा हूँ तथा परमेश्वर के
परिवार मे कोई बन्धन कोई श्राप, तथा कोई बीमारी नहीं है।"

जब उस बन्धन, ज्ञाप या बीमारी के लक्षण या विचार आप में आने का प्रयास करते हैं, तो उन्हें डॉट दें। यदि आप पहले से ही लक्षणों को स्वीकार करते रहें हैं तो तुरन्त उनहें डॉट दें तथा परमेश्वर का वचन आपकी आजादी के बारे मे जो कहता है दृढता के साथ उसकी घोषणा करना आरम्भ कर दें।

दरिद्र तस्वीर

अपनी एक दरिद्र तस्वीर बनाए रखना पाप है। हमें उनके समान नहीं बनना है जिनके बारे में प्रेरित पौलूस लिखता है।

रोमियो 1:21,22 – "इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद नहीं किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे यहाँ तक कि उनका निबुद्धि मन अन्धेरा हो गया। वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए।"

हम वही हैं जो परमेश्वर हमारे बारे में कहता है कि हम हैं। क्योंकि यीशु हमें इन बातों से आजाद करने के लिए मर गया, तो फिर उन्हीं को पकड़े रहना परमेश्वर का अपमान है।

हीन भावना

बहुत से विश्वासियों में अपनी योग्यताओं को लेकर असुरक्षा की भावना होती है। वे अपाहिज बना देने वाले असफलता के भय से पीड़ित हैं।

परमेश्वर का वचन कहता है,

फिलिप्पियों 4:13 – "जो मुझे सामर्थ देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।"

2 तीमुथियुस 1:7 – "क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है।"

हमें निरन्तर घोषणा करते रहना चाहिए,

"मसीह जो मुझे सामर्थ्य देता है
उसके द्वारा मैं सब कुछ कर सकता हूँ।
मैं जानता हूँ कि परमेश्वर ने मुझे सामर्थ्य
प्रेम और संयम की आत्मा दी है।"

बाहरी रुप

बहुत से लोग अपने बाहरी रुप के बारे में नाकारात्मक सोचते हैं, वे साचे या कहते भी हैं, कि "मैं बहुत मोटा हूँ ," "मैं बहुत दुबला हूँ ," "काश कि मेरे बाल किसी और रंग के होते," "काश यह इतना सीधा न होता।" वे अपने बाहरी रुप के बारे में शर्माते या बहुत अधिक आत्म केन्द्रित रहते हैं।

सवेक्षण से यह प्रगट हुआ है कि लगभग सभी सुन्दर मॉडलस एवं मूवी स्टार्स को यह महसूस होता है कि उन्हें अपने बाहरी रुप में कुछ बदलने की जरुरत है।

हमारे समाज में बाहरी रुप पर अत्यधिक जोर दिया जा रहा है। लेकिन परमेश्वर का वचन बताता है कि हम आत्मिक जन है हमें परमेश्वर के स्वरुप मे बनाया गया है। हमें ऐसा बनाया गया था कि हम ठीक परमेश्वर की तरह ही दिखें। हमारी सुन्दरता हमारे हृदय का आन्तरिक मनुष्यत्व है–जो वास्तविक व्यक्ति है–हमारी आत्मा जो अन्दर से है। हम अपने सिरों को ऊपर उठा सकते हैं और यीशु के तेज को हमारे चेहरों से चमकते दें।

जब शमुएल नबी बेथलेहेम में यिशै के पुत्रों में से एक को अगला राजा बनने के लिए अभिषेक करने हेतू आया, तो उसने देखा कि सबसे बड़ा बेटा बड़ा आकर्षक है। ओहदों का सम्मान सामान्य रुप से सबसे बड़े बेटे को मिलता है, और उसका पहला विचार यही था कि इसी को शायद परमेश्वर ने राजा होने के लिए चुना है। लेकिन प्रभु ने उसे रोक दिया।

1 शमुएल 16:7 – "परन्तु यहोवा ने शमुएल से कहा, "न तो उसके रुप पर दृष्टि कर और न उसके कद की ऊँचाई पर, क्योंकि मैं ने उसे अयोग्य जाना है, क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रुप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।"

शिक्षा की कमी

कई लोग शिक्षा की कमी के कारण असुरक्षित महसूस करते हैं; जबकि परमेश्वर का वचन प्रगट करता है कि मसीह में हमारे पास समस्त बुद्धि और ज्ञान का भण्डार है। वास्तविक ज्ञान परमेश्वर को जानना है।

कुलुस्सियों 2:2,3 – "ताकि उनके मनों में शान्ति हो और वे प्रेम से आपस में गठे रहें, और वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें, और परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात मसीह को पहचान लें। जिसमें बुद्धि और ज्ञान के भण्डार छिपे हुए हैं।"

तिरस्कार की भावनाएं

ऐसा क्यों है कि आज बहुत से विश्वासी तिरस्कार और तिरस्कार की भावना से पीड़ित हैं और उनके मनों मे गहरे भावनात्मक घाव हैं।

परमेश्वर ने कहा,

इफिसियो 1:5 – 7 – ". . . हमें अपने लिए पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंत–मेंत दिया। हम को उस में उस के लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों को क्षमा उस के उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।"

यदि "हम उस प्रिय में सेंत-मेंत स्वीकार किए गए हैं" तो हमें तिरस्कार की भावनाओं को अपने विरुद्ध नहीं आने देना चाहिए। मसीह यीशु में हमारे ग्रहण किए जाने के ज्ञान में हमें सुरक्षित रहना चाहिए।

पिता परमेश्वर हमें उतने ही प्रेम के साथ ग्रहण करता है जितने प्रेम के साथ वह अपने पुत्र यीशु को ग्रहण करता है। हमें तिरस्कार के विचारों को निकाल देना चाहिए तथा तब तक वचन पर मनन करना चाहिए जब तक हमें हमारे ग्रहण किए जाने का पूर्ण अनुभव एवं आश्वासन न हो जाए। क्योंकि परमेश्वर हमें ग्रहण करता है, अतः हम भी अपने आप को ग्रहण कर सकते हैं।

झूठी नम्रता

अक्सर कई वर्षो के बाद एक आत्मिक घमण्ड विकसित हो जाता है जिसे गलती से नम्रता कहा जाता है।

हम इन शब्दों वाला गीत गाते हैं "मैं बेचारा एक खोया हुआ पापी अनुग्रह से बचाया गया।" यह सही नहीं है। हम जब एक बार बचा लिए गए तो अब हम "बेचारे खोए हुए पापी" नहीं रहे।

कई वर्षों तक हमने एक पुराना प्रचलित गीत गाया है जिसमें एक पंक्ति इस प्रकार है "मैं कैसा कीडे समान हूँ।" परमेश्वर हमें इस तरह से नहीं देखता है। यह परमेश्वर के वचन के विपरीत है। हम मिट्टी के लाचार कीडे नहीं हैं। हम नई सृष्टियाँ हैं। हम मसीह में हैं। हम उसके स्वरुप में ढाले गए हैं।

अपने स्वयं का एक अनुपयुक्त स्वरुप हमारे जीवनों में उतनी ही पराजय ला सकता है जितना की घमण्ड।

ऐसा सोचना कि हम कितने अयोग्य हैं हमें नम्रता का प्रदर्शन लगे, लेकिन यह हमारे जीवनों पर हार के दृढगढ़ों को बना देता है जो हमें मसीह यीशु में हमारी पूर्ण क्षमता का अनुभव करने से रोकता है।

सच्ची नम्रता

सच्ची नम्रता परमेश्वर के अनुग्रह को पहचानने के द्वारा आती है। नम्रता यह पहचानना है कि पिछले दिनों में, जब हम परमेश्वर के शत्रु थे, परमेश्वर के महान प्रेम के अयोग्य थे, उसने हमें छुडाया ताकि हम वह सब बन सकें जो होने के लिए उसने हमें बनाया था।

सच्ची नम्रता परमेश्वर के बारे में अच्छा सोचना है। ये जानना कि हम जो कुछ भी हैं तथा हम जो कुछ भी कर सकते हैं यह उसकी हमारे प्रति महान दया एवं बनुग्रह के कारण है।

यह सही है कि हम जितने हैं उसे अधिक हमें अपने बारे में नहीं सोचना चाहिए," लेकिन हमें जो हम हैं उससे नीचा भी नहीं सोचना चाहिए

यदि हम स्वयं को यीशु के समान बनते हुए तथा यीशु के कार्यों को करते हुए देखना चाहते हैं, तो हमें अपनी पुरानी अयोग्य "नहीं कर सकता" वाली तस्वीर को हटा देना चाहिए तथा उनके स्थान नई सृष्टि की तस्वीरों को लगा देना चाहिए।

दासत्व की तस्वीर को बदलना

बहुत से लोग अपनी तस्वीर एक दास के रुप में रखते हैं। वे स्वयं को एक दास के समान गरीबी में जीवन बिताते हुए देखते हैं। उन्होंने स्वयं को इस योग्य नहीं पाया कि स्वयं को परमेश्वर की आशीषों और सम्पन्नता को प्राप्त करते हुए देख सकें। उन्होंने स्वयं को राजा की सन्तान के रुप में नहीं देखा।

इस्राएलियों का उदाहरण

मिस्र में, इस्राएल की सन्तानों ने सैकड़ों साल तक गुलामी के अतिरिक्त कुछ नहीं जाना। परमेश्वर के द्वारा उसके बेटे और बेटी के रुप में नए-नए छुडाए गए होने के नाते उन्हें इस बात के प्रकाशन की आवश्यक्ता थी कि वे परमेश्वर के प्रतिज्ञा किए गए लोगों के रुप में कौन हैं।

➢ *सोना, चाँदी*

उनके स्वरुप को जो उन्होने अपने बारे में सोचा हुआ था जो दासत्व और गरीबी का था, परमेश्वर उसे परमेश्वर की छुडाई हुई सन्तान के नए रुप में बदलना चाहता था। उस ने उन से कहा कि वे इस्राएलियों से सोने और चाँदी के गहने तथा कीमती कपड़े माँग लें।

उन्हें उन सोने और चाँदी के गहनों को अपने से दूर सन्दूकों में नहीं रखना था। और उन्हें मरुस्थल में यात्रा करने के कारण सुन्दर वस्त्रों को सम्भाल कर नहीं रखना था। परमेश्वर ने सोना, चाँदी और वस्त्रों को अपने बेटे-बेटियों को पहनाने के लिए कहा था।

निर्गमन 3:21-22अ-"तब मैं मिस्रियों से अपनी प्रजा पर अनुग्रह करवाऊँगा ; और जब तुम निकलोगे तब छूछे हाथ न निकलोगे। वरन तुम्हारी एक-एक स्त्री अपनी अपनी पडोसिन, और उनके घर में रहने वाली से सोले-चाँदी के गहने, और वस्त्र माँग लेगी, और तुम उन्हें अपने बेटों और बेटियों को पहिनाना।"

इस्राएल के पुत्र एवं पुत्रियाँ-परमेश्वर के चुने हुए लोग-मिस्र से गुलामी के गन्दे वस्त्रों में बाहर नहीं निकले। जो वस्त्र एवं जूते उनकी प्रतिज्ञा की हुई भूमि में पहुँचने तक नहीं फटे, वे बड़े कीमती वस्त्र और गहने थे।

परमेश्वर उनकी पुरानी स्वयं की छवि को दूर कर रहा था। वह उनकी अपनी पुरानी छवि को तोड़ रहा था।

➢ *पहुँच*

बाद मे जब मिलाप वाले तम्बू को बनाने का समय आया तो इस्राएल की सन्तानों के पास इतना अधिक सोना और चाँदी था कि उन्होंने बहुत ज्यादा दिया। कारीगरी ने मूसा से कहा कि वह लोगों को और अधिक देने से रोके।

निर्गमन 36:5-7-"और उन्होंने मूसा से कहा, "जिस काम को करने की आज्ञा यहोवा ने दी है उसके लिए जितना चाहिए उससे अधिक वे ले आए हैं।"

तब मूसा ने साारी छावनी में इस आज्ञा का प्रचार करवाया, "क्या पुरुष, क्या स्त्री, कोई पवित्र स्थान के लिए और भेंट न लाए।" इस प्रकार लोग और भेंट लाने से रोके गए, क्योंकि सब काम बनाने के लिए जितना सामान आवश्यक था, उससे अधिक बनाने वालों के पास आ चुका था।"

जिस तरह से परमेश्वर ने इस्राएलियों की अपने बारे में जो दवि थी उसे बदल दिया, उसी तरह से वह हमारी अपनी पुरानी स्वयं के बारे में गरीबी एवं पाप के प्रति दासत्व की छवि को बदल देना चाहता है। वह चाहता है कि हम अपने उद्धार के आनन्द को महसूस करें।

हम अपनी स्वयं की उस पुरानी छवि से कैसे छुटकारा पा सकते हें जो परमेश्वर को बिल्कुल अच्छी नहीं लगती?

हम हीनता असुरक्षा, असक्षमता की भावना, दोष, दण्ड, तथा अयोग्यता के बन्धन से कैसे छुटकारा पा सकते हैं?

हम अपने जीवनों में इन पराजय के विचारों एवं कल्पनाओं से कैसे निपट सकते हैं?

परमेश्वर का वचन इसका जवाब देता है।

2 कुरिन्थियों 10:5 – "हम कल्पाओं का और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहचान के विरोध मे उठती है, खण्डन करते हैं, और हर भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।"

कल्पनाएं मस्तिष्क में होती हैं। हमें अपने मस्तिष्कों को नियंत्रित करना है तथा प्रत्येक ऐसे विचार को निकाल बाहर करना है जो परमेश्वर के वचन के विरुद्ध है।

युद्ध हमारे मस्तिष्कों में, हमारे प्राणों में, हमारी इच्छाओं में, हमारी भावनाओं में होता है। इसी क्षेत्र में इस युद्ध को जीता या हारा जा सकता है। हमारा मस्तिष्क परमेश्वर के वचन के द्वारा नया किया जाना चाहिए।

हमें प्रत्येक विचार को कैद करके मसीह की आज्ञाकारिता में लाना है। हमें नियंत्रण करना है तथा अपने विचारों को उस ज्ञान का आज्ञाकारी बनाना है जो हम मसीह में हैं।

एक सर्प की तरह

यदि कोई विषैला सर्प पेड़ से गिर कर हमारी बाँह पर लिपट जाए तो हम वहाँ यूँही खडे रहेंगे जब की वह अपने जहरीले दाँतों को हमारी त्वचा में गडाने की तैयारी में है। नहीं! हम तुरन्त अपनी बाँह को इतने जोर से और तेजी से नीचे झटक देंगे जितना कि हम कर सकते हैं। यह एक तुरन्त, निर्णय पूर्वक, एवं बलपूर्ण क्रिया होगी। उसके काटने से पहले हम उसे नीचे गिरा देंगे।

इसी तरह से हमें अधिक से अधिक घृणा के साथ, पुरानी पहचान के विचारों एवं कल्पनाओं को निकाल देना चाहिए। हमें चिल्लाना चाहिए "मैं इस विचार को यीशु के नाम से तिरस्कृत करता हूँ।"

"जब हमारा पुराना मस्तिष्क कहता है,"
तुम उसे नहीं कर सकते तुम इतने शर्मीले हो।"
हम कहें
"मैं यीशु के नाम में इस विचार को
तिरस्कृत करता हूँ। मसीह जो मुझे सामर्थ देता है
उसके द्वारा सब कुछ कर सकता हूँ।"
जब आपका, पुराना मस्तिष्क कहे, "तुझे कैंसर है।"
हम कहें
"मैं इस विचार को यीशु के नाम से तिरस्कृत करता हूँ।

परमेश्वर का वचन कहता है, मेरे डेरे के निकट
कोई महामारी नहीं आएगी।
मैं जानता हूँ कि यीशु के कोडे खाए जाने से मैं चंगा हो गया हूँ।"

सामर्थी हथियार

हमारे जीवनों में जो दृढगढ़ हैं उन्हें तोड़ने के लिए हमारे पास सामर्थी हथियार हैं प्रेरित पौलूस ने लिखा,

2 कुरिन्थियों 10:4अ – "क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शरीरिक नहीं, पर गढों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।"

जब हम उन विचारों और कल्पनाओं को निकाल देते एवं उनका तिरस्कार करते हैं जो परमेश्वर के ज्ञान के विरुद्ध होते हैं, तो हम उनकी सामर्थ को अपने ऊपर से नाश करते हैं।

अपनी पुरानी छवि को उतार फेंकना

अपने पुराने स्वरुप को उतार फैकने की प्रक्रिया को प्रेरित पौलूस ने कुलुस्सियों की पत्री में वर्णन किया है।

कुलुस्सियों 3:9,10 – "एक-दूसरे से झूठ मत बोलो, क्योंकि तुमने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है, जो अपने सृजनहार के स्वरुप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है।"

जब हम परमेश्वर के वचन के प्रकाशन के द्वारा, "पुराने मनुष्यत्व को उतार देते हैं," तो हमें "नए मनुष्यत्व को पहन लेना है" जो सृजनहार के स्वरुप में ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया होता जाता है।

अपने मस्तिष्कों को नया करना

उद्धार के समय अपनी इच्छा के एक सामान्य कार्य के द्वारा, जिस तरह से हमारे प्राण करते हैं, उसे हम नहीं बदल सकते हैं यह सिर्फ पहला कदम है। हम जब परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं तो उसके द्वारा हम अपने सृजनहार के स्वरुप में अपने मस्तिष्कों को बदलते हैं।

रोमियों 12:2 – "इस संसार के सदृश न बनो ; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।"

पौलूस लिखता है मनुष्य परमेश्वर की महिमा तथा स्वरुप है।

2 कुरिन्थियों 3:18 – "परन्तु जब हम सब के उघाडे चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रुप मे अंश अंश करके बदलते जाते हैं।"

यदि हम परमेश्वर के स्वरुप में बनाए गए थे, तथा एक नई सृष्टि के रुप में हमे फिर से परमेश्वर के स्वरुप में बहाल किया गया है, तो फिर अपने बारे में नाकारात्मक बातें बोलते रहना परमेश्वर का अपमान है।

जैसा हम अतीत में कहते थे वैसा हमें अपने बारे में नहीं कहना चाहिए। हम नई सृष्टि है। हम महिमा से महिमा में बदले गए हैं।

एक टिड्डे की छवि को दूर करना

"नहीं कर सकता" वाली एक छवि

यदि हम एक विजयी सफल मसीही जीवन जीना चाहते हैं तो हमें "नहीं कर सकता" वाली छवि को "कर सकता" वाली छवि में बदल देना चाहिए। हमें यह समझने की आवश्यक्ता है कि हम वह कार्य कर सकते हैं जो परमेश्वर कहता है कि हम कर सकते हैं।

बारह जासूसों का उदाहरण

परमेश्वर ने इस्राएलियों को कनान की भूमि देने का वायदा किया था। एक दिन आया जब परमेश्वर ने बारह गोत्रों में से एक-एक व्यक्ति को चुन कर उस देश में भेजने की आज्ञा दी कि वे जाकर उस देश का पता लगाएं तथा उनके बारे में खबर लाएं। चालिस दिनो के बाद वे अपनी जानकारी लेकर वापस लौटे।

गिनती 13:27, 28अ 30-33 – "उन्होंने मूसा से कहा, "जिस देश में तू ने हमें भेजा था उसमें हम गए, उसमें सचमुच दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, और उसकी उपज में से यही है।" "परन्तु उस देश के निवासी बलवान हैं; और उनके नगर गढवाले हैं और बहुत बड़े हैं।"

हम योग्य हैं

"पर कालेब ने मूसा के सामने प्रजा के लोगों को चुप कराने के विचार से कहा," हम अभी चढ के उस देश को अपना कर लें ; क्योंकि निःसन्देह हम में ऐसा करने की शक्ति है।"

हम योग्य नहीं हैं

"पर जो पुरुष उसके संग गए थे, उन्होंने कहा, "उन लोगों पर चढ़ने की शक्ति हम में नहीं है ; क्योंकि वे हम से बलवान है।" और उन्होंने इस्राएलियों के सामने उस देश की जिसका भेद उन्होंने लिया था यह कहकर निन्दा भी की, "वह देश जिस का भेद लेने को हम गए थे ऐसा है, जो अपने निवासियों को निगल जाता है ; और जितने पुरुष हम ने उसमें देखे वे सब के सब बड़े डील डौल के हैं।"

"फिर हम ने वहाँ नपीली जातिवाले अनाकवंशियों को देखा और हम अपनी दृष्टि में उनके सामने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे।"

फर्क है परमेश्वर का

यहोशू और कालेब के पास परमेश्वर कौन था इसका सही प्रकाशन था। उन्होंने ऐसे बात की जैसे नई सृष्टि के लोगों को बोलना चाहिए। उन्होंने कहा, "हम अभी चढ़ के उस देश को अपना कर लें ; क्योंकि निःसन्देह हम में ऐसा करने की शक्ति है।"

उन्होंने आगे कहा,

गिनती 14:8,9 – "यदि यहोवा हम से प्रसन्न हो, तो हम को उस देश में, जिस में दूध और मधु की धाराएँ बहती है, पहुँचा कर उसे हमें दे देगा।"

"केवल इतना करो कि तुम यहोवा के विरुद्ध बलवा न करो ; और न उस देश के लोगों से डरो, क्योंकि वे हमारी रोटी ठहरेंगे ; छाया उनके ऊपर से हट गई है, और यहोवा हमारे संग है ; उन से न डरो।

बाकी दस लोगों ने भी वही परिस्थितियाँ देखी थीं जैसी यहोशू और कालेब ने देखी थी। लेकिन, उनकी आँखें परमेश्वर की महानता पर नहीं लगी हुई थीं। उन्होंने अपनी स्वाभाविक योग्यताओं को देखा और स्वयं को टिड्डियों की तरह पाया। उनकी नज़र में उनकी अपनी छवि "टिड्डियों" के समान थी।

हमारा चुनाव

आज हमें अपनी टिड्डियों वाली छवि को हटा देना है और उसके स्थान पर नई सृष्टि को लाना है। यहोशू और कालेब के समान हमें अपने विश्वास को परमेश्वर की महानता में रखना है तथा कहना है, "हम सब देश को ले लेने के बिल्कुल योग्य हैं।"

हम में से बहुतों के लिए हमारा अपना पुराना स्वरुप, एक नई सृष्टि के रुप मे परमेश्वर ने हमारे लिए जो रखा है, जो हम कर सकते हैं और जो हम हैं उसे प्राप्त करने में एक बड़ी बाधा बन जाता है।

हमे अपनी परिस्थितियों के पहाड़ों से हिम्मत के साथ कहना है, "वहाँ से हट कर समुन्द्र में जा गिर।"

मति 21:21 – "यीशु ने उनको उत्तर दिया, "मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि तुम विश्वास रखो और सन्देह न करो, तो न केवल यह करोगे जो इस अंजीर के पेड़ से किया गया है, परन्तु यदि इस पहाड़ से भी कहोगे, 'उखड जा, और समुद्र में जा पड', तो यह हो जाएगा।"

हमारे युद्ध के हथियार परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं कि वे दृढगढों को ढा दें। हमारे पुराने स्वरुप के गढ लडखडाकर गिर जाएंगे। हम सब वही बन जाएंगे जो परमेश्वर कहता है कि हम हैं। नई सृष्टि के रुप में हमारा पुराना अपना स्वरुप जाता रहेगा और सारी बातें, साथ ही हमारा नए रुप में प्राप्त स्वरुप भी नया हो जाएगा।

2 कुरिन्थियों 5:17 – "इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो सब बातें नई हो गई हैं।"

पुनः विचार के लिए प्रश्न

1. वे कौन से पुरानी स्वयं की छवि के दृढगढ हैं जिन्हें आप ने इस अध्ययन के परिणाम स्वरुप अपने जीवनों से हटा दिया है?
2. कुलुस्सियों 3:9,10 के आधार पर पुराने मनुष्यत्व को उतार फैंकने तथा नए मनुष्यतत्व को पहन लेने की प्रक्रिया का वर्णन करों।
3. जैसा की रोमियों 12:2 में वर्णन किया गया है उसके अनुसार हम अपने मनों को प्रभावशाली रुप में कैसे नया बना सकते हैं?

<u>पाठ छः</u>

मसीह में हमारा स्वरुप

मसीह में हमारा परिवार

नया जन्म

जिस क्षण हम यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता ग्रहण करते हैं, हम एक नए परिवार में "नया जन्म" पाते हैं।

यीशु ने निकेदिमुस से कहा,

यूहन्ना 3:7,–"इससे अचम्भित न हो कि मैंने तुझ से कहा कि तुझे नए सिरे से जन्म लेना अवश्य है।"

यीशु ने निकेदिमुस को यह स्पष्ट कर दिया कि वह शरीर से जन्म लेने के बारे में बात नहीं कर रहा है, लेकिन "नया जन्म" पाने का अर्थ है आत्मा से जन्म पाना।

यूहन्ना 3:5,6–"यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है।"

यीशु को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण करने से पहले, जबकि हम अपने शरीरों (हड्डी, माँस और लहू) तथा अपने प्राणों (बुद्धि भावनाएं, तथा इच्छाओं) मे जीवित थे, परन्तु हम आत्मा में मरे हुए थे उद्धार के छण में हमने आत्मिक रुप से "नया जन्म" पाया था। हमारी आत्मा नई हो गई। हम यीशु मसीह मे नई सृष्टि बन गए।

हमारा जन्म एक नए परिवार, परमेश्वर के परिवार में हुआ। जब हमने परमेश्वर के परिवार मे जन्म पाया तो हम परमेश्वर की सन्तान हो गए।

परमेश्वर की सन्तान

प्रेरित यूहन्ना ने लिखा,

1 यूहन्ना 3:1अ–"देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ।"

यदि हम समझ जाएं कि हम संसार के सबसे सामर्थी, सबसे प्रवीण, सबसे बुद्धिमान पिता की सन्तान हैं तो हमें यह अनुभव होगा ही कि हमारे जीवन पदवियाँ, अधिकार तथा भविष्य पूरी तरह से बदल गए हैं।

परमेश्वर के पुत्र एवं पुत्री के रुप मे एक नए पारीवारिक सम्बन्ध को समझना, जिस तरह से हम सोचते हैं उसे पूरी तरह बदल सकता है।

पौलूस ने लिखा,

रोमियों 8:14–"क्योंकि जितने परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं वे परमेश्वर की सन्तान हैं।"

जब हम यीशु मसीह को अपना प्रभु एवं उद्धारकर्ता ग्रहण करते हैं, हम उसकी सन्तान बन जाते हैं

यूहन्ना 1:12 – "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।"

"अधिकार" शब्द का अर्थ है कानूनी अधिकार। एक बार जब हम विश्वास कर लेते हैं तो हम हमारे पास परमेश्वर के बेटे या बेटी बनने का कानूनी अधिकार होता है।

परमेश्वर के वारिस

परमेश्वर ने न सिर्फ हमें अपनी सन्तान बनाया है बल्कि यीशु के साथ उसी के समान प्रतिफलों सहित हमें विरासत भी दी है। हम यीशु के साथ संगी वारिस हैं।

रोमियो 8:17अ – ". . .और यदि हम सन्तान हैं तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के संगी वारिस हैं, . ."

पिता की सम्पत्ति एवं धन माप से परे है, और जो कुछ पिता का है वह उस के पुत्र का है।

यह कितनी अधिक खुशी की बात है कि परमेश्वर के परिवार में जन्म पाने के द्वारा हम यीशु मसीह के साथ संगी वारिस बन गए हैं। उसकी सारी सम्पति हमारी सम्पति हो गई है।

स्वर्ग का सारा धन यीशु का है, और उसके संगी वारिस होने के नाते स्वर्ग का सारा धन हमारा भी है।

इफिसियों 1:3 – "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी हैं।"

अपनी विरासत को हासिल करना

यीशु में विश्वास के द्वारा हम परमेश्वर के परिवार में जन्म लेते हैं, तथा परमेश्वर के पुत्र एवं पुत्री बन जाते हैं। परमेश्वर की सन्तान के रुप में हमें एक प्रतिज्ञा की हुई विरासत मिलती है।

गलातीयों 3:26 – "क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो।"

यहेजकेल 46:16 – "परमेश्वर यहोवा यों कहता है: यदि प्रधान अपने किसी पुत्र को कुछ दे तो वह उसका भाग होकर उसके पोतों को भी मिले, भाग के नियम अनुयार वह उनका भी निज धन ठहरें।"

नई सृष्टि होने के नाते हमे अपनी सम्पति को हासिल करना चाहिएं हमें उसे हासिल कर लेना चाहिए जो नियम अनुसार हमारा भाग हैं

अपने लाभों को प्राप्त करना

अपने स्वर्गीय पिता के पुत्र एवं पुत्री होने के लाभों को जानना कितनी अद्‌भुत बात है। यह अनुभव करना कितना उत्तेजनापूर्ण है कि हमें इस कार्य के लिए स्वर्ग में जाकर इसका आनन्द उठाने का इन्तजार करने की आवश्यक्ता नहीं है।

प्रेरित पौलूस ने लिखा,

फिलिप्पियों 4:19 – "मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा।"

एक नई सृष्टि के रुप, परमेश्वर के परिवार में "नया जन्म" पाने के द्वारा हम अभी अपने भाग में आए हुए का आनन्द उठाना प्रारम्भ कर सकते हैं।

इस पृथ्वी पर परमेश्वर की सन्तान, नई सृष्टि तथा संगी वारिस होने के नाते हमें परमेश्वर से हमारी जरुरतें पूरी करने के लिए गिडगिडाने और माँगने की जरुरत नहीं है। जो कुछ परमेश्वर का है वो तो पहले ही हमारा ही है। हमें जो कुछ करना है वो यह है कि इस बात को जानें कि हम परमेश्वर की सम्पन्नता को विश्वास एवं आज्ञाकारिता के द्वारा कैसे प्राप्त कर सकते हैं

- *धन प्राप्त करने की शक्ति*

मूसा ने इस्राएली लोगों से निम्नलिखित बातें कहीं,

व्यवस्थाविवरण 8:18 – "परन्तु तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना क्योंकि वही है जो तुझे सम्पत्ति प्राप्त करने की सामर्थ इसलिए देता है, जो वाचा उसने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बाँधी थी उसको पूरा करे, जैसा आज प्रगट है।"

- *देने का स्वभाव*

यह पिता का स्वभाव है कि वो दे।

यूहन्ना ने लिखा,

यूहन्ना 3:16अ – "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा. . . कि उसने. . . दे दिया. . ."

क्योंकि हम अपने पिता की सन्तान हैं, यह हमारे नए स्वभाव में होना चाहिए कि हम देने वाले बनें।

यीशु ने कहा,

लूका 6:38 – "दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा। लोग पूरा नाप दबा दबा कर और हिला कर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।"

- *आशीषों का भण्डार गृह*

जब हम विश्वास एवं आज्ञाकारिता में परमेश्वर को देते हैं तो हम परमेश्वर को एक माप देते हें जिसके द्वारा वो हमें आशीष देता है। इस तरह हमारी सारी आवश्यक्ताएं अनन्त भण्डार गृह हमारे उस भाग में से पूरी होती हैं।

मलाकी की पुस्तक में हम पढ़ते हैं, मलाकी 3:10 – "सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे ; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिए खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूँ कि नहीं।"

यह जानना कितना अद्भुत है कि नई सृष्टि के रुप मे और परमेश्वर के पुत्र एवं पुत्रियों की तरह हम अपनी आशीषों को कैसे प्राप्त करें।

नई सृष्टि के रुप में, हम न सिर्फ परमेश्वर के परिवार का हिस्सा बन जाते हैं, बल्कि नए जन्म के चमत्कार के द्वारा हम मसीह की देह का हिस्सा बन जाते हैं।

प्रेरित पौलूस ने लिखा,

1 कुरिन्थियों 12:27 – "इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग अलग करके उसके अंग हो।"

सारे विश्वासी, मिलकर मसीह की देह बनाते हैं। हम व्यक्तिगत रुप से उस शरीर के अंग हैं।

हम महत्वपूर्ण अंग है

परमेश्वर ने प्रत्येक विश्वासी के लिए अपनी देह में एक विशेष स्थान रखा है। उसने हमें एक निश्चित कार्य पूरा करने के लिए रखा है।

पद 18 – "परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है।"

- *एक दूसरे की जरुरत है*

मसीह की देह मे प्रत्येक विश्वासी को दूसरे अंग की जरुरत है। पद 21,22 - "आँख हाथ से नहीं कह सकती, "मुझे तेरी आवश्यक्ता नहीं," और न सिर पाँवों से कह सकता है, मुझे तुम्हारी आवश्यक्ता नहीं।" परन्तु देह के वे अंग जो दूसरों से निर्बल लगते हैं, बहुत ही आवश्यक हैं।"

पद 26 – "इसलिए यदि एक अंग दुख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुख पाते हैं; और यदि एक अंग की बडाई होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं।"

परमेश्वर की देह का प्रत्येक अंग महत्वपूर्ण है! जिस तरह से मनुष्य के शरीर में ख्याल रखने, मदद करने तथा रचना करने की योग्यता पाई जाती है, उसी तरह से मसीह की देह में यह योग्यता पाई जाती है।

मसीह में हमारा स्थान

जिस समय हमारा उद्धार हुआ पवित्र आत्मा ने हमें यीशु मसीह में बपतिस्मा दिया। नए जन्म के चमत्कार के द्वारा हम यीशु के साथ अन्तरंगता से जुड गए। हम उसके साथ एक हो गए।

1 कुरिन्थियों 12:13 – "क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो क्या यूनानी हो, क्या दास हो, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा, एक देह होने के लिए बपत्तिस्मा लिया, और सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।"

बपत्तिस्मा शब्द का अर्थ है:

- *किसी के साथ पूरी तरह एक जैसा हो जाना*

उद्धार के समय हम यीशु मसीह के साथ पूरी तरह एक हो जाते हैं।

जब कोई सफेद रंग का कपड़ा लाल रंग के बर्तन में डुबोया जाता है तो वह कपड़ा उस रंग को अपने ऊपर ले लेता है। जब इसे उस रंग में "बैपटाईज" किया जाता है तो यह बिल्कुल उस रंग के जैसा हो जाता है। ठीक इसी तरह जब उद्धार के समय

पवित्र आत्मा हमें यीशु में बपत्तिस्मा देती है तो हमारी आत्माएं परमेश्वर के पुत्र के स्वभाव को ले लेती हैं। हम पूरी तरह उसके समान-तुरन्त उसके साथ जुड गए-उसके शरीर के अंग-उसके साथ एक हो जाते हैं।

"जो कुछ यीशु है, वो हम हैं! जो कुछ यीशु का है, वो हमारा है। जो कुछ हम हैं तथा हमारे पास है इसलिए है कि हम उसमें हैं"

जैसा इफिसियों में सिखाया गया

पौलूस ने "मसीह में" हमारे स्थान एवं सम्पत्ति का जिक्र इफिसियों को लिखी अपनी पत्री के पहले तीन अध्यायों में बार बार किया है।

➢ *आत्मिक आशीषों से आशीषित*

उसने लिखा कि हमें मसीह में सब प्रकार की आत्मिक आशीषें दी गई हैं

इफिसियों 1:3 – "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी हैं।"

स्वर्ग की सभी बड़ी महिमान्वित, तथा सन्तुष्ट करने वाली आत्मिक आशीषें हमारे लिए उपलब्ध हैं कि हम उन्हें प्राप्त करें तथा प्रतिदिन के जीवन में उनका आनन्द उठाएं।

➢ *उसमें चुने गए*

पिता ने यीशु को चुना। वह एक चुना हुआ है। क्योंकि हम उसमें हैं, अब हम उसके चुने जाने में हैं।

इफिसियों 1:4 – "जैसा उसने जगत की उत्पत्ति से पूर्व उसमें हमें चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।"

परमेश्वर ने हमें हम कैसे दिखते हैं, हमारी योग्यताओं, या हमारी अपनी कीमत के आधार पर नहीं चुना। उसने हमें इसलिए चुना क्योंकि पूर्व अनन्तकाल में ही उसने हमें मसीह में देख लिया था।

➢ *उसमें पहले से ठहराए गए*

हम उसमें पहले से ठहराए गए क्योंकि हम उसमें हैं।

इफिसियों 1:5 – "और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिए पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा उसके लेपालक पुत्र हों।"

हमें इसलिए परमेश्वर के साथ अनन्तकाल बिताने के लिए नहीं चुना गया है कि वह औरों से अधिक हमें पसन्द करता है। पिता यूगों के मध्य से नीचे झाँक कर मसीह में हमें देख सकता था। उसने हमें चुना क्योंकि उसने यीशु को चुना, और हम उसमें एक हैं।

हमारा भाग एवं हमारा पहले से ठहराया जाना यीशु मसीह में हमारे स्थान की वजह से है।

इफिसियों 1:11 – "उसी में जिसमें हम भी उसी मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बने।"

➢ *उसमें ग्रहण किए गए*

हम उस प्रिय पुत्र में ग्रहण किए गए हैं। पिता के द्वारा मसीह में होने के कारण हमें ग्रहण किया गया है।

इफिसियों 1:6 – "कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंत–मेंत दिया।"

उसके अनुग्रह का सारा धन इसीलिए है कि हम मसीह में हैं

इफिसियों 1:7 – "हम को उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।"

➢ *उसमे मोहर लगाए गए*

जैसे के उसने हमें अन्तरंगता के साथ एक–साथ जोडा है, तथा हमें यीशु मसीह के साथ अनन्तता में एक किया है।

इफिसियों 1:13 – "और उसी ने तुम पर भी, जब तुम ने सत्य का वचन सुना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रत्तिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी।"

➢ उसके साथ बैठे हैं

क्योंकि हम उसके साथ एक हैं, इसलिए हम उसके साथ स्वर्गीय स्थानों में बेठे हैं।

इफिसियों 2:6 – "और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों मे उसके साथ बैठाया।"

यद्यपि स्थिति के आधार पर हम अपने शरीर में इस पृथ्वी पर रह रहे हैं, लेकिन मसीह में हम स्वर्ग मे बैठे हुए हैं। जब यीशु ने छुटकारे का कार्य पूरा कर दिया, तो वह पिता के दाहिने हाथ जा बैठा।

भजन संहिता 110:1 – "मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, "तू मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ।"

पौलूस ने हम पर यह बात प्रगट की कि हम उसके साथ एक स्थान पर बैठे हुए हैं। इस पृथ्वी पर किए गए उसके सम्पूर्ण कार्य का हम पूरा आनन्द ले रहे हैं। इस जीवन के तूफानों के मध्य में भी हम एक–एक छण उस विश्राम का आनन्द ले रहे हैं जो कि विश्वास के द्वारा प्रत्येक विश्वासी के लिए उपलब्ध है।

➢ *उसमे अच्छे कार्य*

हमें मसीह यीशु में अच्छे कार्यो के लिए बनाया गया है।

इफिसियों 2:10 – "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।"

आदम और हव्वा को एक उद्देश्य के साथ बनाया गया था, और मसीह में हम भी उसी उद्देश्य के लिए बनाए गए हैं। हम यहाँ इस पृथ्वी पर उसके कार्यों को करने के

लिए सृजे गए हैं। हम इस पृथ्वी पर मसीह की देह हैं जो उसके स्थान पर कार्य कर रहे हैं।

जब यीशु जीवित था और इस पृथ्वी पर सेवकाई कर रहा था, तो उसने अपने विश्वासियों से कहा,

यूहन्ना 14:12 – "मैं तुम से सच–सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।"

यीशु मसीह में विश्वासी के रुप में, हम यीशु की देह हैं। हम इस पृथ्वी पर उसकी टाँगे, उसके पैर उसकी बाहें हैं। मसीह यीशु की देह होने के नाते हम उसके कार्य को आज आगे जारी रख रहे हैं।

मसीह की देह:

- *संसार के लिए मसीह का प्रतिनिधित्व करती है*
- *संसार के लिए परमेश्वर का प्रेम लाती है*
- *परमेवर की चंगाई और छुटकारा लाती है*
- *लोगों को परमेश्वर के छुटकारे के ज्ञान तक लाती है*

- *उसमें नज़दीक किए गए*

हम जो उसके शत्रु थे एवं उस से दूर थे, उसके लहू के द्वारा "निकट लाए गए" क्योंकि हम उसमें हैं।

इफिसियों 2:13 – "पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो।"

अब हम उसके साथ एक निरन्तर, निकट संगति एवं सहभागिता का आनन्द उठा सकते हैं।

- *एक हो गए*

जब हम उसमें सृजे गए, तो परमेश्वर व हमारे मध्य की सारी शत्रुता नष्ट हो गई। हम दो अचानक एक हो गए।

इफिसियों 2:15 – "और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे।"

नई सृष्टि के मनुष्य को तब तक यीशु से अलग नहीं किया जा सकता जब तक कि वह उस के साथ एक बना रहता या रहती है।

- *एक पवित्र मन्दिर*

उस में हमें एक साथ मिलाकर एक पवित्र मन्दिर बनाया गया है, जो कि स्वयं परमेश्वर का रहने का स्थान है।

इफिसियों 2:20–22 – "और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है; जिसमें

तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो।"

यह कितनी खुशी की बात है कि हमारे साथ इस पृथ्वी पर वास करने का चयन किया है। उसने हमारे अन्दर व्यक्तिगत रुप से तथा अपने चर्च के रुप में सम्मिलित रुप से हम सब में वास करने का चयन किया है।

➢ *हियाव - उसमें भरोसा*

क्योंकि हम उस में हैं, उसके साथ एक हैं, उसके साथ पूरी तरह मिल चुके हैं, एक नई सृष्टि के रुप में जो कुछ वह है तथा जो कुछ उसके पास है हम उस सब में हिस्सा रखते हैं।

उसकी धार्मिकता हमारी धार्मिकता बन चुकी है। उसकी परिणिति हमारी परिणिति बन चुकी है। उसका जीवन हमारा जीवन बन चुका है।

जब हम नई सृष्टि के प्रकाशन को प्राप्त करते हैं तो हम हियाव के साथ कह सकते हैं

" मैं जानता हूँ कि यीशु मसीह में मैं कौन हूँ।
मैं उसके साथ एक बन चुका हूँ!
अब मैं उसकी धार्मिकता, उसकी परिणिति,
और उसके जीवन का हिस्सेदार हूँ।
मैं एक नई सृष्टि हूँ!
पुरानी बातें बीत गई हैं!
सब बातें नई हो गई हैं।"

इफिसियों 3:12 – "जिसमें हम को उस पर विश्वास करने से साहस और भरोसे के साथ परमेश्वर के निकट आने का अधिकार है।"

हम उसकी उपस्थिति में हियाव और पूरे भरोसे के साथ आ सकते हैं क्योंकि हम उसमें हैं, इसलिए हम किसी दोष एवं दण्ड के आधीन नहीं हैं। हम नई सृष्टियाँ हैं। हम यीशु मसीह में परमेश्वर की धार्मिकता हैं।

ज्योति की सन्तान

यीशु शरीर में प्रगट हुआ परमेश्वर था। यीशु को इस आत्मिक रुप से अंधेरे जगत में एक ज्योति के रुप में भेजा गया था, ताकि वह परमेश्वर के प्रेम तथा सामर्थ को उन पर प्रगट करे जो उस पर विश्वास करेंगें

यूहन्ना 8:12 – "यीशु ने फिर लोगों से कहा, "जगत की ज्योति मैं हूँ ; जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।"

1 थिस्सलुनिकियों 5:5 – "क्योंकि तुम सब ज्योति की सन्तान और दिन की सन्तान हो ; हम न रात के हैं, न अन्धकार के हैं।"

विश्वासियों को ज्योति की सन्तान की तरह रहना है। उन्हें परमेश्वर के वचन की ज्योति के प्रकाशन के अनुसार विजयी जीवन बिताना है। पौलूस हमें यह कहते हुए निर्देश देता है,

इफिसियों 5:8 – "क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार में थे परन्तु अब ज्योति में हो, अतः ज्योति की सन्तान के समान चलो।"

धोए गए, पवित्र किए गए, धर्मी ठहराए गए

नई सृष्टि के रुप में हम पाप से आजाद किए गए हैं। हमें धोए गए, पवित्र किए गए, और धर्मी ठहराए गए हैं।

1 कुरिन्थियों 6:10,11 – "न चोर, न लोभी न पियक्कड़, न गाली देने वाले, न अन्धेर करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।"

धोए गए का मतलब है शुद्ध किए गए। परमेश्वर अपनी उपस्थिति में अशुद्धता को अनुमति नहीं दे सकता। पूर्ण न्याय एवं पूर्ण धार्मिकता पाप के साथ वास नहीं कर सकते।

1 यूहन्ना 1:7 – "पर यदि जैसा वह ज्योति में है ; वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक–दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।"

"पवित्र किए गए" उस सम्बन्ध को दर्शाती है जो मसीह मे विश्वास के द्वारा परमेश्वर के साथ रख सकते हैं। इसका अर्थ है हम बुराई से अलग किए गए और मसीह के लिए अलग किए गए, हम संसार से अलग किए गए, तथा उसकी जो धार्मिकता हमारे अंदर डाली गई है उसके आधार पर हमारा परमेश्वर के साथ एक सम्बन्ध है।

हम धोए गए और शुद्ध किए गए। हम धर्मी भी ठहराए गए हैं। धर्मी ठहराए जाने का मतलब है परमेश्वर के द्वारा न्यायानुसार धर्मी घोषित किया जाना। हम धर्मी हैं, हमारी आत्माएं परमेश्वर के सम्मुख सिद्ध हैं। मसीह में हम एक नई सृष्टि हैं। यीशु के बहाए गए लहू के द्वारा हमारे पुराने पाप धो दिए गए–दूर कर दिए गए।

रामियो 3:28 – "इसलिए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से अलग ही, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।"

रोमियो 8:31 ब, 33 – "यदि परमेश्वर हमारी ओर है तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?"

"परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वह ही है जो उनको धर्मी ठहराने वाला है।"

जब शैतान और उसकी भीड हमें हमारा अतीत याद दिलाने के लिए आती है, हमें कहना चाहिए

"शैतान, इसे भूल जा,
मैं धोया जा चुका, पवित्र किया गया एवं
धर्मी ठहराया जा चुका हूँ!
मैं एक नई सृष्टि हूँ!
पुरानी बातें गई हैं!
सब बातें नई हो गई हैं!

हमारी नई नागरिकता

हमारे अधिकार

नई सृष्टि होने के फलस्वरुप हमारी एक नई नागरिकता है।

किसी देश के नागरिक के उस देश के संविधान के अन्तर्गत कुछ निश्चित और कभी न छीने जा सकने वाले अधिकार होते हैं। संविधान देश का सर्वोच्च कानून होता है। देश के समस्त कानून संविधान के द्वारा दिए गए मौलिक अधिकारों के आधीन होते हैं। यदि हम अपने अधिकारों को नहीं जानते तो हम किसी दुष्ट व्यक्ति के द्वारा उन अधिकारों से वंचित किए जा सकते हैं।

नई सृष्टि के रुप में हमें बहुत से ना छिने जा सकने वाले अधिकार दिए गए हैं, लेकिन दुष्ट शैतान के द्वारा हमें उन अधिकारों से वंचित रखा जा सकता है। हमें बिना जरुरत ही कष्ट उठाने के लिए मजबूर किया जा सकता है। नई सृष्टि होना इस बात का आश्वासन नहीं है कि हम सारी आत्मिक आशीषों का आनन्द उठाएंगे, लेकिन यह हमें उनका पुण: दावा करने का कानूनी अधिकार प्रदान करता है।

हमारे हथियार

इस संसार में, शैतान ने नई सृष्टि के रुप में हमारे अधिकारों पर अवैध कब्जा किया हुआ है। लेकिन परमेश्वर ने विशेष हथियार दिए हैं जिससे हमें उन पर फिर से दावा करने की आवश्यकता है।

पौलूस ने लिखा कि हमारे हथियार इस संसार के नहीं हैं, और यह कि उनमें दिव्य शक्ति है, और वे गढों को ढा देने के लिए शक्तिशाली हैं।

2 कुरिन्थियों 10:4 – "क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं पर गढों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।"

एक गढ एक किले की तरह होता है। इसकी परिस्थितियों, विचारों, व्यक्तियों, या संस्थाओं के ऊपर एक मजबूत पकड़ होती है। यह कोई ऐसा दृढगढ हो सकता है जो शैतान ने हमारी सेहत या धन पर स्थापित किया हो। चाहे कोई भी दृढगढ क्यों न हो हमारे पास उन्हें ढा देने के लिए हथियार हैं।

➢ *प्रभावी होने के लिए*

कोई भी हथियार तब तक प्रभावी नहीं होता जब तक की उसका उपयोग न किया जाए।

यदि कोई शत्रु किसी शस्त्रधारी व्यक्ति पर हमला करता है तौ भी वह उसे हानि पहुँचा सकता है यदि वह व्यक्ति अपने हथियारों का उपयोग न करे। जिस व्यक्ति पर हमला किया गया है वह सिर से पैर तक हथियारों से सुसज्जित हो सकता है, लेकिन जब तक वह हथियारों का उपयोग न करे तो उसे हराया जा सकता हे।

एक नई सृष्टि होते हुए भी यही हमारे साथ भी सच हो सकता है। हमारे पास शत्रु के हराने के लिए सारे हथियार हो सकते हैं, लेकिन हमें सीखना होगा कि वे क्या हैं तथा उनका उपयोग कैसे किया जाए।

➢ *वर्णन किया गया*

पौलूस ने इफिसियों की पुस्तक में नई सृष्टि के इन अस्त्रों एवं शास्त्रों का वर्णन किया है।

इफिसियों 6:11–7–"परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खडे रह सको।

क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और माँस से नहीं परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।

इसलिए परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको।

इसलिए सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता की झिलम पहन कर और पाँवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहन कर ; और इन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिससे तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको। और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, ले लो।"

➢ *एक प्रभावशाली हथियार*

दो तरह के सामान्य हथियार होते हैं, रक्षात्मक एवं आक्रमक। कुछ हथियार जब हम पर हमला होता है तो हमारी रक्षा के लिए होते हैं, और एक शत्रु पर आक्रमण के उद्देश्य के लिए होता है।

आत्मा की तलवार–जो परमेश्वर का वचन है–इस वर्णन किए गए भाग में इसे प्रहार का हथियार बताया गया है। जब हम विश्वास के साथ परमेश्वर के वचन को बोलते हैं, तो शैतान को जाना पड़ता है। उसके पास इस हथियार से रक्षा के लिए कोई शस्त्र नहीं होता।

परमेश्वर ने यह हथियार हमें दिया है परन्तु हमें इसे इस्तेमाल करना सीखना चाहिए। एक नई सृष्टि के रुप में हमें उन परिस्थितियों के विरुद्ध जो हमें दबाने का प्रयास करती हैं, परमेश्वर का वचन बोलना चाहिए।

निष्कर्ष में

मसीह में हमारा एक नया स्वरुप है।

नए जन्म के चमत्कार के द्वारा हमारा जन्म परमेश्वर के परिवार में हो चुका है। परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ होने के नाते हम मसीह के साथ संगी वारिस बन गए हैं। जो सब कुछ उसका है वह अब हमारा हिस्सा बन गया है।

हम उस में हैं, और क्योंकि हमारा एक नया स्थान है, इसलिए हमें सारी आत्मिक आशीषों से आशीषित किया गया, चुना गया, पहले से ठहराया गया, ग्रहण किया गया, एवं उसके साथ हम पर मोहर लगाई गई है।

हमें मसीह में इस पृथ्वी पर अच्छे कार्य करने के लिए सृजा गया है। हमें, जो कभी उसके शत्रु थे उसके साथ निकट संगति रखने की अनुमति दी गई है। हम उसके

पवित्र मन्दिर हैं। उसमें हमारे विश्वास के द्वारा हम में एक बिल्कुल नया हियाव एवं भरोसा होता है।

हम जो कभी अन्धकार में थे अब हमारा वर्णन ज्योति की सन्तान के रुप में किया गया है। हम धोए गए, पवित्र किए गए, तथा धर्मी ठहराए गए हैं। नई सृष्टि के रुप में हमारे पास नागरिकता के अधिकार हैं। हमें परमेश्वर के समस्त हथियारों को बाँध लेना चाहिए तथा अपने हिस्से, अपने लाभों तथा अपने अधिकारों का पुनः दावा करना चाहिए जो यीशु मसीह मे एक नई सृष्टि रुप में हमारे लिए हैं।

पुनः विचार के लिए प्रश्न

1. आपके लिए नए जन्म का क्या अर्थ है?

2. "मसीह में होने" का आपके लिए क्या अर्थ है?

3. ज्योति की संतानों का हिस्सा होना आपके लिए क्या अर्थ रखता है?

पाठ सात

नई सृष्टि के अधिकार

अब्राहम की सन्तान के रुप में

प्रेरित पौलूस ने लिखा कि यदि हम विश्वास में हैं, तो हम अब्राहम की सन्तान हैं। यह बड़ा महत्वपूर्ण है क्योंकि अब्राहम की सन्तान होने के नाते, हमारे पास बहुत से अधिकार एवं सौभाग्य है।

गलातियों 3:6,7–"अब्राहम ने तो परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिए धार्मिकता गिनी गई। अतः यह मान लो कि जो विश्वास करने वाले हैं, वे ही अब्राहम की सन्तान हैं।"

अब्राहम की धार्मिकता

परमेश्वर ने अब्राहम को धर्मी गिना उसके अच्छे कार्यों, उसका नमूने दार जीवन, या उसकी बड़ी कीमत की वजह से नहीं, बल्कि इसलिए की अब्राहम के अन्दर विश्वास था। अब्राहम सिद्ध नहीं था, लेकिन वह अपने विश्वास के द्वारा धर्मी था।

हमें परमेश्वर की धार्मिकता पाने के लिए धर्मी होने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन हमें परमेश्वर में विश्वास करना चाहिए तथा उसकी धार्मिकता को विश्वास से ग्रहण करना चाहिए जैसा कि अब्राहम ने किया। शरीरिक दशा में, हम अपने पृथ्वी पर के पिता के द्वारा एक परिवार में जन्में हैं जिसमें उसका नाम चलता है। लेकिन जब हम विश्वास के द्वारा जन्म लेते हैं, तो हम विश्वास के परिवार मे जन्म लेते हैं तथा हमें उस परिवार–अब्राहम का परिवार, का नाम प्रयोग करने का अधिकार होता है।

अब्राहम के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं

जब परमेश्वर ने अब्राम (बाद मे अब्राहम कहा गया) को हारान में से बुलाया, तो उसने उसे बहुत सी प्रतिज्ञाएं दीं ; और चूंकि हम अब्राहम के परिवार में हैं, तो हम उन प्रतिज्ञाओ में हिस्सा रख सकते हैं।

उत्पत्ति 12:1–3–"परमेश्वर ने अब्राम से कहा, "अपने देश और अपने कुटुम्बियों और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।

और मैं तुझ से एक बडी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान करुँगा, और तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आर्शीवाद दें उन्हें मैं आशीष दूँगा ; और जो तुझे कोसे, उसे मैं श्राप दूँगा ; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।"

हम अब्राहम की आशीषें पाने के लिए चुने गए हैं। हम इन प्रतिज्ञाओं का हमारे अपने लिए दावा कर सकते हैं।

उसके वंश

परमेश्वर ने अब्राहम को एक बहुत बड़ा वंश देने की प्रतिज्ञा की। उसका वंश पृथ्वी की रेत के कणों के समान असंख्य होना था–यह उसके शारीरिक वंश के सन्दर्भ में है।

उत्पत्ति 13:16 – "और मैं तेरे वंश को पृथ्वी की धूल के किनकों के समान बहुत करूँगा, यहाँ तक कि जो कोई पृथ्वी की धूल के किनकों को गिन सकेगा वही तेरा वंश भी गिन सकेगा।"

परमेश्वर ने अब्राहम से यह भी कहा कि उसका वंश आकाश के तारों की तरह असंख्य होगा–यह उसके विश्वास के द्वारा उत्पन्न आत्मिक सन्तान के सन्दर्भ में था।

उत्पति 15:5 – "और उसने उसको बाहर ले जा के कहा "आकाश की ओर दृष्टि करके तारागणों को गिन, क्या तू उनको गिन सकता है?" फिर उसने उससे कहा, "तेरा वंश ऐसा ही होगा।"

अनन्त वाचा

परमेश्वर ने अब्राहम एवं उसकी सन्तान के साथ एक अनन्त वाचा बांधी। विश्वास के द्वारा हम उसकी सन्तान हैं तथा हम उसकी अनन्त वाचा का हिस्सा हैं।

उत्पति 17:7 – "और मैं तेरे साथ, और तेरे पश्चात पीढी पीढी तक तेरे वंश के साथ भी इस आशय की युग–युग की वाचा बाँधता हूँ कि मैं तेरा और तेरे पश्चात तेरे वंश का भी परमेश्वर रहूँगा।"

यीशु, अब्राहम की सन्तान

यदि हम यीशु मे हैं तो हम परमेश्वर के द्वारा अब्राहम को प्रतिज्ञा की गई आशीषों के वारिस हैं। विश्वास के द्वारा हम अब्राहम की संतान हैं और हम अनन्त वाचा का हिस्सा हैं।

गतालियों 3:16 – "अतः प्रतिज्ञाएँ अब्राहम की और उसके वंश को दी गईं। वह यह नहीं कहता, "वंशों को" जैसे बहुतों के विषय में कहा, पर जैसे एक के विषय में कि "तेरे वंश को" और वह मसीह है।"

गलातियों 3:29 – "और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।"

अब्राहम में हमारी आशीषें

हम अब्राहम की सन्तान हैं–उसकी आत्मिक सन्तान–और विश्वास के द्वारा हम उसकी आशीषों को प्राप्त कर सकते हैं। यदि हमें इन आशीषों को विश्वास के द्वारा प्राप्त करना है तो, हमें जानना जरुरी है कि वे क्या हैं।

आशीषों की सूचि

व्यवस्थाविवरण 28:1-14 हमें दी गईं आशीषें सबसे पहले अब्राहम को दी गईं, फिर उसकी शारीरिक सन्तानों को, और फिर वे उसकी आत्मिक सन्तानों को दी गईं–जो कि विश्वास के द्वारा हैं।

गलातियों 3:6,7,14 – "अब्राहम ने तो परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिए धार्मिकता गिनी गई। अतः यह जान लो कि जो विश्वास करने वाले हैं, वे ही अब्राहम की सन्तान हैं।

इसलिए हुआ कि अब्राहम की आशीष मसीह यीशु में अन्य–जातियों तक पहुँचे और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा हुई है।"

आज के लिए

याद रखें कि अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञाएं अब के लिए हैं, ना कि तब के लिए जब हम स्वर्ग पहुँचेंगे। वे आज के लिए हैं।

आईए कुछ समय लेकर उन आशीषों में से कुछ के लिए प्रभु का धन्यवाद करें जो नई सृष्टि होने के नाते हमें मिली हैं

"प्रभु मैं तेरा धन्यवाद *करता हूँ कि मैं नगर में आशीषित हूँ*

और मैं देश में आशीषित हूँ।

मैं जहाँ कहीं भी हूँ वहां आशीषित हूँ।

मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मेरे गर्भ का फल आशीषित है, मेरी सन्तान आशीषित हैं

प्रभु मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मेरे पशु तेरे द्वारा आशीषित हैं।

में तेरा धन्यवाद करता हूँ प्रभु कि मेरा टोकरा भरा हुआ है, कि मेरे पास प्रतिदिन के लिए भोजन है।

प्रभु मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि जब मैं बाहर जाता हूँ तो आशीषित हूँ, और जब में अन्दर आता हूँ तो आशीषित हूँ। मैं जानता हूँ कि जब कोई शत्रु मेरे विरुद्ध आने की कोशिश करता है तो वह पहले से ही हारा हुआ है। वह मेरे विरुद्ध एक दिशा से आएगा, लेकिन वह सात दिशाओं में भाग रवडा होगा। प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि जो कुछ मैं करता हूँ वह सफल होगा।

मैं आज, कल और प्रतिदिन अपने जीवन में तेरी राह में चलने वाला हूँ।

मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ प्रभु कि लोग मेरे जीवन के द्वारा देखेंगे कि तू कितना महान है।

मैं तेरा धन्यवाद देता हूँ कि तू मुझे अत्यधिक सम्पन्नता देगा।

प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने स्वर्ग में मेरे लिए बहुतायत के भण्डार खोल दिए हैं तथा यह कि मैं उन्हें पृथ्वी पर प्राप्त कर सकता हूँ

मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने मुझे पूँछ नहीं सिर ही बनाया है-

तू ने मुझे ऊँचे पर रखा है, ना कि नीचे पर।

हे पिता, मैं तेरी सब आशीषों के लिए तेरा धन्यवाद करता हूँ। प्रभु मैं तेरे पीछे चलने से नहीं हटूँगा। मैं अन्य देवताओं की उपासना नहीं करुँगा।

मैं तेरी आज्ञाओं को मानूँगा। यीशु के नाम में, आमीन।"

पाप एवं मृत्यु की व्यस्वथा से आजाद

अनुग्रह से बचाए गए

पौलूस ने कहा है कि जो लोग यीशु को अपना प्रभु एवं उद्धारकर्त्ता अंगीकार करते हैं उन पर पाप का कोई कानूनी नियंत्रण या अधिकार नहीं रहेगा।

हम व्यवस्था के अधीन में नहीं रहे। हम व्यवस्था के द्वारा नहीं, बल्कि अनुग्रह के द्वारा बचा लिए गए-छुडा लिए गए हैं।

रोमियों 6:14 – "क्योंकि पाप तुम पर प्रभुता न करता रहेगा, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं बल्कि अनुग्रह के आधीन हो।"

इफिसियों 2:8 – "क्योंकि अनुग्रह के द्वारा विश्वास ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं बल्कि परमेश्वर का दान है।"

अनुग्रह की परिभाषा है अयोग्यता में दिखाई गई दया-हमें कुछ ऐसा दिया गया जिसके हम योग्य नहीं थे।

न केवल हम परमेश्वर के द्वारा दिखाई गई अयोग्यता में दया के लिए अनुपयुक्त थे बल्कि हम इसके ठीक विपरीत के उपयुक्त थे। स्त्री और पुरुष व्यवस्था को पूरा नहीं कर सकते ; और इस कारण, यह उनके लिए उद्धार नहीं ला सकती-यह उनके लिए सिर्फ मृत्यु ला सकती है।

बचाए गए का अर्थ है किसी चीज से बचाए गए या किसी चीज़ से छुडाए गए। हम किस चीज से छुडाए गए हैं?

हम श्राप से छुडाए गए हैं

अब हम पाप और मृत्यु की व्यवस्था के अधीन न रहे और ना ही हम व्यवस्था के श्राप के अधीन रहे हैं। हम व्यवस्था के श्राप से छुडाए जा चुके हैं; और इसके बावजूद भी, यदि हम एक नई सृष्टि होने के नाते हमारे क्या अधिकार हैं इसे नहीं जानते हैं तो जब शैतान या उसकी दुष्ट आत्माएं हमारे ऊपर श्राप डालने के लिए आती हैं, तो हम हार सकते हैं। जबकि, यदि हम एक नई सृष्टि के रुप में अपने अधिकारों एवं सौभाग्यों को जानते हैं तो हम प्रत्येक युद्ध को जीत सकते हैं।

जब वे चीज़ें जिन्हें श्राप के हिस्से के रुप में प्रगट किया गया है, हमारे विरुद्ध आती हैं, तो एक नई सृष्टि के रुप में हम हिम्मत के साथ कह सकते हैं,

"मैं व्यवस्था के श्राप से छुडाया जा चुका हूँ।"

➢ *यीशु हमारे स्थान पर श्राप बना*

यीशु हमारे बदले में श्राप बन गया। यीशु हमारा विकल्प बन गया एवं इन श्रापों को अपने ही शरीर पर ले लिया ताकि हमें उन से छुडा सके। जब उसने क्रूस पर हमारा दण्ड चुकाया तो उसने हमें हमारे प्रत्येक श्राप से स्वतंत्र किया।

गलातियों 3:13 – "मसीह ने जो हमारे लिए शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुडाया, क्योंकि लिखा है, "जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।"

सिर्फ एक यीशु ही था जिसने कभी व्यवस्था को पूर्ण रुप से पूरा किया। उसने व्यवस्था के अधीन एक सिद्ध जीवन बिताया और इस प्रकार एक सिद्ध बलिदान बन गया।

➢ *श्राप से छुडाए गए*

यह जानना महत्वपूर्ण है कि शाप में क्या शामिल है। यीशु ने हमारे लिए अपने ऊपर क्या ले लिया? व्यवस्था का श्राप क्या है? जब हम इस भाग को पढेंगे तो हमें ज्ञात

होगा कि हम शैतान की ओर से उन बातों को ग्रहण करते रहे हैं, जिन्हें हमें ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं थी।

मूसा ने कई ऐसी बातों की सूची बनाई है जो व्यवस्था विवरण 28:15–68 में श्राप का हिस्सा हैं। (इस पूरे भाग को पढ़ना अच्छा होगा)। मूसा ने उन श्रापों की सूचि भी प्रदान की है जो अनाज्ञाकारिता का परिणाम हैं तथा निम्नलिखित उनका संक्षिप्त विवरण है।

व्यवस्थाविवरण 28:15,20–"परन्तु यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात न सुने, और उसकी सारी आज्ञाओं और विधियों के पालने में जो मैं आज सुनाता हूँ चौकसी नहीं करेगा, तो ये शाप तुझ पर आ पडेंगे।

फिर जिस काम में तू हाथ लगाए, उसमें यहोवा तब तक तुझ को शाप देता, और भयातुर करता, और धमकी देता रहेगा, जब तक तू मिट न जाए, और शीघ्र नष्ट हो जाए: यह इस कारण होगा कि तू यहोवा को त्यागकर दुष्ट काम करेगा।"

व्यवस्था के श्राप क्या हैं? व्यवस्था को ना मानने का दण्ड क्या हैं?

- *बीमारियों से पीड़ित होना*
- *बुखार, सूजन*
- *चुभने वाली गर्मी और सूखा*
- *सुखा रोग एवं गेरुई रोग*
- *पीतल का आकाश*
- *लोहे की भूमि*
- *बारिश की जगह बालू और धूल बरसना*
- *हार*
- *शरीर चिड़ियाओं और पशुओं का आहार बन जाना*
- *फोडे, बवासीर, दाद और खुजली*
- *पागल, अन्धापन, मन का भ्रमित होना*
- *जो कुछ हम करें उसमें असफल होना, दबाए हुए, लूटे हुए*
- *प्रिय जनों, घर को तथा मेहनत के फल को खोना*
- *सम्पत्ति एवं बच्चों को खोना*

यह तो सिर्फ सूचि की शुरुआत है!

व्यवहारिक अनुपालन

अब फिर से समय निकालकर व्यवस्थाविवरण से व्यवस्था के श्रापों को पढें लेकिन इस बार यह याद रखें कि यीशु ने आपको व्यवस्था के श्रापों से आजाद कर दिया है और इन शब्दों को उसमें जोडें,

"यीशु ने मुझे . . . . . . से छुडा लिया है।"

उदाहरण के लिए, "यीशु ने मुझे महामारियों से छुडा लिया है।

यीशु ने मुझे क्षय रोग से छुडा दिया है।

यीशु में मुझे बुखार एवं सूजन से छुडकारा दिया है।

यीशु ने मुझे झुलसाली हुई गर्मी से छुडा दिया है।

यीशु ने मुझे . . . .

व्यवस्थाविवरण 28 की सूचि में से उन चीजों को ढूँढे जिन्हें शैजान आपके ऊपर डालता रहा है। वे व्यवसथा के श्राप का हिस्सा हैं और यीशु ने आपको उस श्राप विशेष से छुडा दिया है।

परमेश्वर के वचन के साथ सहमत होना प्रारम्भ करें।

"मैं यीशु के द्वारा के श्राप से छुडाया गया हूँ।
यीशु ने पाप के बदले मेरा दाम चुका दिया है।
मैं आज्ञा देता हूँ कि इस श्राप का प्रत्येक
लक्षण अभी मुझे छोड़ दें!

जब यीशु को क्रूस पर कीलों से ठोका गया था, वह हमारे लिए एक श्राप बन गया ताकि हम धर्मी बन जाएं उसने न केवल हमें अनन्त जीवन का वरदान दिया, बल्कि उसने हमें इस जीवन में विजयी होने के लिए जो कुछ आवश्यक है वह सब कुछ प्रदान किया।

जब शैतान उन में से किसी भी एक श्राप को लाने की कोशिश करता है तो कहें,

"अरे ओ शैतान, तू ऐसा नहीं कर सकता!
यीशु ने मुझे उस श्राप से दुडा लिया है।"

अतीत से आजादी

अक्सर शैतान हमें इस बात का आश्वासन देकर फन्दे में फसाएगा कि हम किसी एक श्राप को स्वीकार कर लें कि हम ने पाप किया है और यह श्राप उस पाप का दण्ड है। हम सोचने लगते हैं कि जो कुछ वह हम पर डाल रहा है हम उसी के लायक हैं।

शैतान ठीक कह रहा होता है कि श्राप पाप के परिणाम स्वरुप आते हैं। लेकिन कभी वह स्मरण नहीं दिलाएगा कि यीशु ने उस पाप के लिए पहले ही से हमारा दण्ड चुका दिया है तो हमें उस पाप के परिणाम स्वरुप आने वाले श्राप को अब और आगे सहने की आवश्यकता नहीं है।

2 कुरिन्थियों 5:17 – "अब यदि कोई मसीह में है तो वह एक नई सृष्टि है पुरानी बातें बीत गईं, देखो सब कुछ नई हो गई हैं।

विजयी जीवन

एक नई सृष्टि होने के नाते हम पाप और मृत्यु की व्यवस्था से आजाद हैं। हम प्रत्येक पाप, प्रत्येक दण्ड, एवं प्रत्येक श्राप से आजाद कर दिए गए हैं।

रोमियों 8:2 – "क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।"

यदि हम पाप करते हैं तो हमें उसे मान लेना चाहिए तथा उसकी क्षमा प्राप्त करनी चाहिए।

1 यूहन्ना 1:9 – "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है।"

जब हम अपने पापों को मान लेते हैं, तो हम तुरन्त अपने ऊपर से पाप की जो पकड़ होती है उससे आजाद हो जाते हें। हम सारी अधार्मिकता से शुद्ध हो जाते हैं। शैतान हमे दोष एवं दण्ड के दोषारोपणों के द्वारा हरा नहीं सकेगा।

पाप, उसके श्राप, तथा पाप एवं मृत्यु की व्यवस्था के पास कोई कानूनी अधिकार नहीं है कि हमें हरा दे। नई सृष्टि की जो आशीषें हमारे जीवनों के ऊपर हैं उससे हम जीवित रह सकते हैं।

जय पाने की शक्ति के साथ

अब्राहम के पास विश्वास था और वह उसके लिए धार्मिकता गिना गया। जो आशीषें उसे दी गईं थी उन्हें हम विश्वास के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

यीशु आया और उसने व्यवस्था के श्राप को अपने ऊपर ले लिया। विश्वास के द्वारा हम अपने उद्धार को प्राप्त करते हैं। विश्वास के द्वारा, हम इस संसार की चीजों पर जय प्राप्त कर सकते हैं। विश्वास हमें जय पाने की सामर्थ प्रदान करता है।

1 यूहन्ना 5:4 – "क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है ; और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है।"

नई सृष्टि के रुप में हम अपने अन्दर परमेश्वर की विजयी शक्ति को धारण करते हैं। चुनाव हमें करना है कि हम इस शक्ति को कार्य करने की अनुमति देते हैं या कि नहीं। हम परमेश्वर के वचन पर विश्वास करने का चयन कर सकते हैं या हम अपने चारों ओर की परिस्थितियों पर विश्वास करने का चयन कर सकते हैं।

परमेश्वर की विजयी शक्ति तब प्रवाहित होती है जब हम विश्वास करते हैं तथा हिम्मत के साथ इसे बोल देते हें। उसके वचन में जो हमारा विश्वास होता है वह हमें विजय देता है।

शैतान हम से कहता है कि हम दोषी, मूल्यहीन पापी है तथा हम उन बीमारियों, तकलीफों, गरीबी तथा निराशा के प्रति असहाय है जो श्राप का हिस्सा हैं।

- *परमेश्वर कहता है कि हम नई सृष्टि हैं तथा दोष, दण्ड एवं व्यवस्था के पाप के दोष से आजाद हैं।*
- *परमेश्वर कहता है कि हम इब्राहम के लिए प्रतिज्ञा की गई समस्त आशीषों के वारिस हैं।*
- *परमेश्वर कहता है कि जय पाए हुओं के रुप में हम उसकी बहुतायत की आशीषों में चल सकते हैं।*

मसीह यीशु में विश्वासी होने के नाते परमेश्वर ने हमारे लिए जो कुछ प्रदान किया है हम वह सब हो सकते, कर सकते, एवं रख सकते हैं।

- *हमें शैतान के झूठ की बजाय परमेश्वर पर विश्वास करने का चयन करना चाहिए।*

- *हमें स्वयं को ऐसे देखना चाहिए जैसे परमेश्वर हमे देखता है।*
- *हमें उस सब की घोषणा करनी चाहिए जो परमेश्वर ने हमारे बारे में कहा है।*

तब हम मसीह यीशु में एक नई सृष्टि के रुप में अपने अद्‌भुत अधिकारों का आनन्द ले सकते हैं!

पुनः विचार के लिए प्रश्न

1. यह समझना हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है कि हम अब्राहम के परिवार के हैं?

2. परमेश्वर के उन कुछ वायदों की सूचि बनाएं जो उसने अब्राहम से किए थे तथा जो आपके लिए महत्वपूर्ण हैं।

3. व्यवस्थाविवरण 25:15-68 का उपयोग करते हुए एक पृष्ठ लिखिए जिसमें व्यवस्था के श्रापों से आपकी आजादी का जिक्र हो।

<u>पाठ आठ</u>

नई सृष्टि के लाभ

परिचय

एक नई सृष्टि का प्रकाशन तथा यीशु में धार्मिकता यीशु मसीह में विश्वास करने वाले के लिए बहुत से लाभ लाती है।

भजन 68:19अ – "हमारा प्रभु धन्य है, जो प्रतिदिन हमें आशीषों से भरपूर करता है।"

परमेश्वर के साथ संगति

नई सृष्टि होने का एक सबसे बड़ा लाभ यह है कि हम परमेश्वर की महिमामय ज्योति मे हियाव एवं बिना किसी शर्मिन्दगी से चल सकते हैं। हम उसके साथ बात चीत कर सकते हैं, हम उसके साथ निकट एवं अन्तरंग संगति रख सकते हैं।

1 यूहन्ना 1:3 – 7 – "जो कुछ हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिए कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो ; और हमारी वह सहभागिता पिता के साथ और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है। और ये बातें हम इसलिए लिखते हैं कि हमारा आनन्द पूरा हो जाए।

जो समाचार हम ने उस से सुना और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है कि परमेश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं। यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं और सत्य पर नहीं चलते। पर यदि जैसा वह ज्योति में हैं, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।"

इस मामले में मसीहत अन्य प्रत्येक धर्म से भिन्न है कि जब हम मसीह को ग्रहण करते हैं तो परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध (परमेश्वर के अनन्त परिवार का हिस्सा) और संगति (प्रतिदिन बातचीत) रख सकते हैं।

छुटकारे के कार्य में परमेश्वर का उद्देश्य था कि अपने सम्बन्ध को मनुष्यजाति कि साथ पुनः स्थापित कर सके तथा हमारी संगति को उसके साथ पुनः सथापित कर सके।

परिभाषा

बेबसटर अनब्रिज्ड डिक्शनरी के अनुसार संगति की कुछ परिभाषाएं हैं:

- किसी के साथ जुड़े होने की स्थिति
- सहभागिता
- सांझेदारी
- अन्तरंग जान-पहचान
- आपसी हिस्सेदारी

एक बुलाहट

हम परमेश्वर के साथ संगति करने के लिए बलाए गए हैं।

1 कुरिनिथयों 1:9 – "परमेश्वर सच्चा है, जिसने तुम को अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलया है।"

कितना अद्‌भुत विचार है। परमेश्वर ने अपने साथ संगति के लिए हमें बुलाया है। परमेश्वर हमारे साथ संगति करना चाहता है।

परमेश्वर के साथ जो हमारी संगति है उसी स्तर पर हमारी संगति परमेश्वर में जो हमारे बहन और भाई हैं उनके साथ भी होनी चाहिए। प्रेरित यूहन्ना ने लिखा,

1 यूहन्ना 1:3 ,4 – "जो कुछ हम ने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिए कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो, और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।"

आनन्द लाती है

आनन्द परमेश्वर के साथ एवं मसीह यीशु में सहविश्वासियों के साथ एक अन्तरंग, अबाधित संगति के परिणामस्वरुप आता है।

भजन 16:11 – "तू मुझे जीवन का रास्ता दिखलाएगा; तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है।"

परमेश्वर के वचन के द्वारा उसके साथ अंतरंग संगति से अधिक आनन्द की अनुभूति कहीं नहीं है। यिर्मयाह ने लिखा है,

यिर्मयाह 15:16 – "जब तेरे वचन मेरे पास पहुँचे, तब मैंने मानो उन्हें खा लिया, और तेरे वचन मेरे मन के हर्ष और आनन्द का कारण हुए ; क्योंकि, हे सेनाओ के परमेश्वर यहोवा मैं तेरा कहलाता हूँ।"

जो विश्वासी मसीह में एक नई सृष्टि होने का प्रकाशन पा जाता है वह आनन्द पा जाता है।

जो कभी दोष, दण्ड एवं बेकार होने के विचारों से दबे रहते थे, जब वे एक बार धार्मिकता के प्रकाशन को खोज लेते हैं तो बन्धन से मुक्त होकर उमण्डने वाले आनन्द एवं खुशी में प्रवेश करते हैं

सिर्फ वे ही दण्ड के भय के बिना परमेश्वर के साथ अन्तरंग संगति के उमण्डने वाले आनन्द का अनुभव कर सकते हैं जिन्होंने नई सृष्टि के प्रकाशन का अनुभव प्राप्त कर लिया है।

दाऊद ने आनन्द के बारे में लिखा,

भजन 32:1, 2 – "क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढाँपा गया हो। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले।"

टूटी हुई संगति

यदि हम पाप करते हैं तो भी हमारा परमेश्वर के साथ सम्बन्ध अटूट रहता है। हम फिर भी उसकी सन्तान रहते हैं।

पाप के द्वारा हमारी परमेश्वर के साथ संगति टूट जाती हैं। एक बार फिर पाप हमारे एवं परमेश्वर के मध्य बाधा बन जाता है। लेकिन, परमेश्वर ने अपनी महान दया में एक प्रबन्ध किया है जिससे हमारी संगति उसके साथ तुरन्त पुन: सथापित हो जाती है।

यूहन्ना ने लिखा,

1 यूहन्ना 1:8-10,-"यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो हम स्वयं को धोखा देते हैं और हम में सत्य नहीं। यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। यदि कहें कि हमने पाप नहीं तो उसे झूठा ठहराते हैं और उसका वचन हम हमें नहीं है।"

"मान लेने" का अर्थ है नाम लेना। हमें अपने पाप का नाम लेना है, और छिपाने की कोशिश या मना करते हुए कि हमने पाप नहीं किया, स्वयं को धोखा नहीं देना चाहिए। इसके बजाय हमें तुरन्त परमेश्वर के समक्ष मान लेना चाहिए कि जो कुछ हमने किया है वह उसकी दृष्टि तथा परमेश्वर की दृष्टि में भी पाप है।

"पाप" शब्द का अर्थ है "निशाने से चूक जाना"। जब कभी हम परमेश्वर की सिद्ध धार्मिकता के निशान को अपने विचारों या कार्यों के द्वारा खो देते हैं, हम पाप करते हैं।

जिस छण हम यह जानते हैं कि हम "निशाने से चूक गए हैं", हमें तुरन्त ही अपने पाप को मान लेना चाहिए तथा परमेश्वर की क्षमा को तथा उस अधार्मिकता से शुद्धता को प्राप्त कर लेना चाहिए।

➢ *परमेश्वर के अनुग्रह को तुच्छ ठहराना*

बहुत से लोगों के पास धार्मिकता का प्रकाशन नहीं होता और वे परमेश्वर के अनुग्रह को तुच्छ ठहराते हैं। वे गलती से ऐसा सोच चुके हें कि इसका अर्थ है कि वे चाहकर पाप कर सकते हैं जब तक कि वे बाद में उस पाप का अंगीकर कर लें और परमेश्वर की क्षमा को प्राप्त कर लें।

यूहन्ना ने इसे अगले पद में स्पष्ट किया, कि हमें चाहकर पाप को हमारे जीवन में प्रवेश करने नहीं देना चाहिए।

1 यूहन्ना 2:1-"हे मेरे बालको, ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम पाप न करो। और यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह।"

परमेश्वर के द्वारा हमारी बुलाहट पाप से दूर रहने की बुलाहट है।

सम्पन्नता

एक नए जन्मे विश्वासी-एक नई सृष्टि होने का एक और फायदा यह है कि हम सच्ची सम्पन्नता पा सकें। दो तरह की सम्पन्नताएं होती हैं, प्राणों की, तथा आर्थिक क्षेत्र में।

प्रेरित यूहन्ना के द्वारा परमेश्वर ने लिखा कि वह चाहता कि जैसे हमारे प्राण तरक्की कर रहे हैं वैसे ही हम सम्पन्न हों तथा अच्छे स्वास्थ्य मे बने रहें।

3 यूहन्ना 1:2 – "हे प्रिय मेरी यह प्रार्थना है कि जैसे तू आत्मिक उन्नति कर रहा है वैसे ही तू सब बातों में उन्नति करे और भला चंगा रहे।"

परमेश्वर सब से बढ़कर क्या चाहता है? कि जिस तरह हमारे प्राण उन्नति कर रहे हैं, वैसे ही हम सम्पन्न बनें तथा अच्छे स्वास्थय में रहें।

"जैसे तेरा प्राण उन्नति करता है" इसका अर्थ क्या है?

प्राणों की उन्नति

हमारा प्राण हमारी बुद्धिमत्ता, हमारी भावनाएं एवं हमारी इच्छा है। प्राणों की उन्नति-बुद्धि की उन्नति एवं भावनाओं की उन्नति-मसीह को अपने जीवनों को एक जीवित बलिदान के रुप में चढ़ाने के द्वारा तथा परमेश्वर के वचन के द्वारा अपने मनों को नया करने के द्वारा होती है। सम्पन्नता एवं शारीरिक स्वास्थ्य के लिए पहले प्राणों की उन्नति जरुरी है।

रोमियों 12:1,2 – "इसलिए हे भाईयों मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूँ, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढाओ, यही तुम्हारी आत्मिक सेवा हैं।

और इस संसार के सदृश न बनो ; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।"

परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग उसकी नई सृष्टि, प्राण और शरीर में उन्नति करें। नई सृष्टि के लोगों को इस संसार के सदृश नहीं होना है। उन्हें परमेश्वर के वचन के अनुरुप होना है।

- *एक प्रक्रिया*

नई सृष्टि के लोग परिवर्तन की प्रक्रिया में हैं, और यह परिवर्तन तब आता है जब हमारे मन निरन्तर परमेश्वर के वचन के पढ़ने, सुनने, मनन करने, विश्वास करने और उन पर कार्य करने के द्वारा नए होते जाते हैं।

पूर्ण स्वास्थ्य एवं सम्पन्नता की ओर पहला महत्वपूर्ण कदम नई सृष्टि के प्रकाशन में आना हैं। यह प्रकाशन विश्वासी को दोष, दण्ड, एवं बेकार होने के विचारों से आजाद करेगा जिससे वह एक नई सृष्टि के सारे लाभों को पाने के योग्य होगा, तथा सम्पन्नता एवं सिद्ध सेहत में चलना प्रारम्भ करेगा।

- *वर्णन किया गया*

एक सचमुच में "सम्पन्न" परमेश्वर की सन्तान का वर्णन पहले भजन में किया गया है।

भजन 1:1-3 – "क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता ; और न ठट्टा करने वालों की मण्डली में बैठता है। परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता ; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है।"

एक सचमुच में धन्य व्यक्ति वो है जो :

- *परमेश्वर के वचन के प्रकाशन में विश्वास एवं आज्ञाकारिता से चलता है।*
- *प्रेम में चलना एवं परमेश्वर तथा उसके लोगों के साथ गहरी एवं अन्तरंग संगति को महसूस करना।*
- *परमेश्वर जो कुछ करता है उस में उसकी शान्ति एवं सन्तुष्टि महसूस करना।*
- *निरन्तर प्रभु एवं दूसरों की जरुरतों को पूरा करना*
- *उसकी आर्थिक जरुरतें पूरी की गई हैं "ताकि वह प्रत्येक भले कार्य के लिए तैयार रहे"।*
- *वह प्रभु एवं दूसरों की जरुरतें पूरी करने के योग्य है।*

आर्थिक उन्नति

जैसा हमें सिखाया गया है, उसके विपरीत, धन बुरा नहीं है। यह धन का लोभ है जो सब बुराईयों की जड़ है।

महान आज्ञा को पूरा करने के लिए धन एक महत्वपूर्ण जरुरत है। हमें मालूम होना चाहिए कि परमेश्वर की आर्थिक सम्पन्नता को कैसे प्राप्त करें ताकि हम इस संसार के खोए हुओं तक यीशु मसीह के सुसमाचार के साथ पहुँच सकें।

यूहन्ना ने हमें चेतावनी दी है कि हमें सावधान रहना चाहिए कि हम अपना लगाव संसार की वस्तुओं पर न लगाएं। धन का धोखा, या जीवन का घमण्ड जो कि भौतिक वस्तुओं के प्रति लालसा उत्पन्न करता है, या मनुष्यों का आदर, इन सब के प्रति हमें हमेशा चौकस रहना चाहिए

परमेश्वर कहता है कि यदि हम सबसे पहले परमेश्वर के राज्य एवं उसकी धार्मिकता की खोज करें तो वह हमें अन्य वस्तुओं से आशीषित करेगा।

मति 6:33 –"इसलिए पहले तुम उसके धर्म और राज्य की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।"

नई सृष्टि का व्यक्ति जिसने परमेश्वर की धार्मिकता का प्रकाशन प्राप्त किया है वह हमेशा अपनी स्वयं की जरुरत से ऊपर परमेश्वर के राज्य के विस्तार एवं परमेश्वर की धार्मिकता को रखेगा वह परमेश्वर एवं उसकी धार्मिकता को खोजेगा और परमेश्वर उसे "ये सब वस्तुएं" दे देगा।

- *परमेश्वर को देना*

परमेश्वर उन संचय केन्द्रों को नहीं ढूँढ़ रहा है जिनमें वह अपनी आर्थिक आशीषें उण्डेल सके। इसके बजाय वह उन नदियों को खोज रहा है जो कि परमेश्वर के राज्य में देने वाली हों।

यीशु ने कहा,

"लूका 6:38 दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा। लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।"

जब हम विश्वास एवं परमेश्वर की आज्ञाकारिता में देते हैं, वह इसे बहुतायत से बढ़ाकर हमें लौटा देता है ताकि हम निरन्तर उसे देते रहें। नई सृष्टि को जिन लाभों की प्रतिज्ञा की गई है, सम्पन्नता उन में से एक है। परमेश्वर ने अपने लोग जो उसकी मानते हैं उनके लिए आर्थिक आशीषों की एक वाचा की है।

स्वास्थ्य एव संगाई

नई सृष्टि का एक और लाभ है शरीर के लिए चंगाई का प्रावधान।

नई सृष्टि की धार्मिकता का प्रकाशन उन लोगों को आजाद करेगा जो दोष, दण्ड एवं निरर्थकता की भावनाओं से बंधे हुए रहे हैं, ताकि वे हियाव के साथ अपनी चंगाई को परमेश्वर से प्राप्त कर सकें।

हमारे बदले में यीशु के द्वारा किए गए छुटकारे के कार्य में उसने हमारा उद्धार अनन्तकाल के लिए प्रदान कर दिया है तथा उसने हमारे शरीरों की चंगाई भी प्रदान की है।

उसके कोडों के द्वारा चंगाई

यशायाह की मसीह के आगमन के बारे में की गई महान भविष्यवाणी में, उसने हमारी चंगाई के बारे में स्पष्ट कहा है।

यशायाह 53:5 – "परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया, हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोडे खाने से हम चंगे हो जाएं।

पतरस ने यशायाह के सन्देश को दृढ किया जब उसने यीशु के छुटकारे के कार्य के बारे मे इन्हीं शब्दों को लिखा।

1 पतरस 2:14 – ". . .वह आप ही हमारे अपराधों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिए मर कर धार्मिकता के लिए जीवन बिताएं; उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।"

यहोवा-राफा

मिस्र से निकलने के ठीक बाद परमेश्वर ने अपने लोगों पर स्वयं को यहोवा-राफा के रुप में प्रगट किया, ऐसा परमेश्वर जो उनका चंगा कर्ता है।

निर्गमन 15:26 – "यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन-मन से सुने और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करें, और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाएं, और उसकी सब विधियों को माने, तो जितने रोग मैंने मिस्त्रियों पर भेजे हैं उनमें से एक भी तुझ पर न भेजूँगा ; क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा हूँ।"

परमेश्वर कभी नहीं बदलता चंगाई आज के लिए है।

परमेश्वर का वचन चंगाई लाता है

सुलैमान राजा हमसे कहता है कि एक मनुष्य के सम्पूर्ण शरीर के लिए जीवन एवं स्वास्थ्य परमेश्वर के वचन के द्वारा आता है।

नीतिवचन 4:20–22–"हे मेरे पुत्र मेरे वचन ध्यान करके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा इनको अपनी आँखों की ओट न होने दे, वरन अपने मन में धारण कर। क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का, और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं।"

यदि हम परमेश्वर के वचन पर ध्यान दें, तथा सेहत में रहने के बारे में यह क्या कहता है इस पर मनन करें, तो यह हमारे जीवनों में वास्तविकता बन जाता है। जैसे हमारे मन नए हुए हैं, वैसे ही हमारे शरीर भी होंगे।

जब यह प्रकाशन हमारी आत्माओं से हमारे मनों में प्रवेश करता है, तो हम विश्वास के साथ परमेश्वर के वचन को बोलेंगे, तथा चंगाई एवं स्वास्थ्य एक वास्तविकता बन जाएगी।

नोट: चंगाई पर और गहन, अध्ययन के लिए 'गॉडस प्रोविजन फॉर हिलिंग पढें' जो कि ए.एल. तथा जॉयस गिल के द्वारा लिखी गई हैं।

परमेश्वर की सामर्थ

एक नई सृष्टि का एक और फायदा हमारे अन्दर से निकलने वाली पवित्र आत्मा की सामर्थ है।

नाकारात्मक रुकावटें

आत्मा से परिपूर्ण बहुत से विश्वासी परमेश्वर की उस सामर्थ को अपने से निकाल नहीं पाते, जो कि उनमें ही होती है क्योंकि वे अपने विचारों एवं स्वयं के स्वरुप के प्रति नाकारात्मक सोच के द्वारा पीछे हट जाते हैं।

बहुत से लोगों को जिन्हें परमेश्वर की धार्मिकता जो कि नई सृष्टि में प्रगट हुई है, उसका प्रकाशन नहीं होता पाप उनके जीवन मे बने रहने के कारण उन्हें रुकावटें होती हैं। वे धार्मिकता संवेदी होने की बजाय पाप-संवेदी रहते हैं। उन्होंने अपने आप को पापियों के रुप मे देखा तथा अपने जीवनों में कभी विजय नहीं पा सके। उन्होंने पवित्र आत्मा को अपने जीवनों में दुखी होने की, या बुझ जाने की अनुमति दी है

पौलूस ने लिखा,

इफिसियों 4:30,31,–"परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है। सब प्रकार की कड़वाहट, और प्रकोप और क्रोध और कलह, और निन्दा, सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए।"

जो व्यक्ति पाप संवेदी होता है वह पाप करता है, और इसके कारण पवित्र आत्मा को शोकित करता है तथा एक सामर्थरहित एवं हारा हुआ जीवन जीता है।

धार्मिकता का प्रकाशन

जिन विश्वासियों के पास नई सृष्टि का प्रकाशन होता है वे स्वयं को एक धर्मी के रुप में देखेंगे। वे स्वयं को ऐसा देखेंगे जैसा होने के लिए वे बनाए गए थे। वे स्वयं को यीशु के रुप में, परमेश्वर के साथ संगति करते हुए, तथा स्वयं को औरों की सेवा के लिए उपयोग होते हुए देखेंगें

वे स्वयं को उस अभिषेक में कार्य करते हुए देखेंगे जो परमेश्वर ने उनके जीवनों के द्वारा प्रगट किया है। जैसा कि यीशु ने कहा कि जीवन के जल की नदियाँ निर्बाध रुप से उनके जीवनों एवं सेवकाई में बह निकलेंगी।

यीशु ने कहा,

यूहन्ना 7:38 – "जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है, उसके हृदय मे से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी।"

गवाही के लिए सामर्थ

यीशु ने कहा कि जब हम पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाते हैं उस वक्त जो हमें सामर्थ मिलती है उसका उद्देश्य हमें यीशु मसीह का एक प्रभावशाली गवाह बनाना हैं

प्रेरितों के कार्य 1:8 – "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे और यरुशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।"

- *चिन्ह एवं चमत्कार*

खोई हुई आत्माओं तक पहुँचने के लिए परमेश्वर की योजना चमत्कारी सुसमाचार के द्वारा है। जब परमेश्वर का वचन बाँटा या प्रचार किया जाता है तो चिन्ह, चमत्कार तथा आश्चर्यकर्म हमेशा वचन को पूरा करने के लिए होते हैं।

मरकुस की पुस्तक के अनुसार इस संसार को छोड़ने से पूर्व यीशु के अन्तिम शब्द थे,

मरकुस 16:15 – 20 – "और उसने उनसे कहा

"तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो "जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा; विश्वास करने वालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, साँपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राणनाशक वस्तु भी पी जाएँ तौ भी उनकी कुछ हानि न होगी ; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएँगे।"

प्रभु यीशु उनसे बात करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया। और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचाार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ–साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन।

एक नई सृष्टि के प्रकाान के द्वारा विश्वासी पवित्र आत्मा की सामर्थ में यीशु मसीह की गवाही हियाव के साथ देने के योग्य होंगे।

- *भय से आजाद*

वे मनुष्य के भय से फिर कभी अवरोधित नहीं होते।

वे निर्भिकता के साथ कहेंगे,

2 तिमुथियुस 1:7,8अ – "क्योंकि परमेश्वर ने भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है। इसलिए हमारे प्रभु की गवाही से . . . लज्जित न हो . . .।"

नई सृष्टि के प्रकाशन से परिपूर्ण विश्वासी भयरहित होंगे और यीशु की गवाही से लज्जित नहीं होंगे।

वे हिम्मत के साथ कहेंगे,

फिलिप्पियों 4:13 – "जो मुझे सामर्थ देता है उसमे मैं सब कुछ कर सकता हूँ।"

➢ *निर्बाध शक्ति*

जो विश्वासी नई सृष्टि के प्रकाशन को रखते हैं वे परमेश्वर की निर्बाध शक्ति को चिन्ह, चमत्कार एवं आश्चर्यकर्मों के द्वारा प्रगट होने देंगे।

दोष एवं दण्ड उन्हें दुष्टात्माओं को हिम्मत के साथ निकालने या बीमारों पर हाथ रखने एवं परमेश्वर की सामर्थ अपने शरीरों में बहने देने से रोक नहीं पाएंगे।

एक नई सृष्टि के प्रकाशन को पाया हुआ व्यक्ति परमेश्वर के साथ संगतिः आनन्द चंगाई एवं स्वास्थ्य सम्पन्नता, एवं परमेश्वर की अबाधित सामर्थ्य को अनुभव करेगा। ये लाभ सिर्फ विश्वासियों के आनन्द के लिए नहीं होते हैं। इन्हें खोए एवं मर रहे संसार मे बहने देना चाहिए।

पुनःविचार के लिए प्रश्न

1. दोष, दण्ड, एवं निरर्थकता की भावनाएं किस प्रकार एक विश्वासी की परमेश्वर के साथ संगति को बाधित कर सकती हैं, इसका वर्णन कीजिए।

2. एक नई सृष्टि एवं धार्मिकता का प्रकाशन एक व्यक्ति को किस प्रकार स्वतंत्र कर सकता है कि वह परमेश्वर की चंगाई के प्रगटीकरण को अपने लिए प्राप्त कर सके?

3. एक नई सृष्टि का प्रकाशन एक विश्वासी को किस प्रकार स्वतंत्र करेगा कि वह यीशु की गवाही प्रभावशली रुप से दे सके?

पाठ नौ

दिव्य स्वभाव के हिस्सेदार

परमेश्वर का स्वभाव

जब हम यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रुप में ग्रहण करते हैं तो हम एक नई सृष्टि बन जाते हैं। हम एक बिल्कुल नया स्वभाव प्राप्त करते हैं। यह स्वयं परमेश्वर का स्वभाव होता है। यह जानना कितनी खुशी की बात है कि हम वास्तव में परमेश्वर के स्वभाव के हिस्सेदार हैं।

2 पतरस 1:4 – "जिनके द्वारा उस ने हमें बहुमुल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैः तांकि इनके द्वारा तुम उस सडाहट से छूटकर, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती हैं, ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो जाओ।"

परमेश्वर का स्वभाव क्या है?

परमेश्वर के गुणों अर्थात दिव्य स्वभाव के कुछ हिस्से हैं जो सिर्फ परमेश्वर के लिए ही आरक्षित हैं। वे हैं:

- *अनन्त - बिना प्रारम्भ एवं अन्त के*
- *परिवर्तनरहित - न बदलने वाला*
- *सर्वसामर्थी - सर्वशक्तिशाली*
- *सर्वव्यापि - सब जगह उपस्थित*

हमें दिए गए

बावजूद इसके, परमेश्वर के स्वभाव के कुछ हिस्से हैं, जो उद्धार के समय हमें दिए जाते हैं। वे हमारी नई सृष्टि के व्यक्तित्व के अन्तरंग हिस्से बन जाते हैं। हमें दिए गए हैं:

- *धार्मिकता*
- *पवित्रता*
- *प्रेम*
- *भलाई, अनुग्रह एवं दया*

परमेश्वर के स्वभाव के ये हिस्से उद्धार के समय हमारी नई सृजित आत्मा में डाल दिए जाते हैं।

उसके वायदों के द्वारा प्रगट हुए

पतरस ने लिखा कि परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा जीवन और धार्मिकता से सम्बन्धित हमें सभी बातें दी गई हैं। परमेश्वर के वचन के प्रकाशन के द्वारा हम दिव्य स्वभाव के सहभागी बन जाते हैं। ये हमें महान एवं बहुमूल्य प्रतिज्ञाओं के द्वारा दिए गए हैं।

2 पतरस 1:2 – 4 "परमेश्वर की और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा अनुग्रह और शान्ति तुम में बहुतायत से बढ़ती जाए, क्योंकि उसकी ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया, जिसने हमें अपनी महिमा और सद्‌गुण

के अनुसार बुलाया है। जिसके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं: ताकि इनके द्वारा तुम उस सडाहट से छूटकर, जो संसार मे बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो जाओ।"

सहभागी बनना

परमेश्वर के दिव्य स्वभाव के सहभागी बनने का अनुभय प्राप्त किए बिना ही अपनी आत्मा में परमेश्वर के स्वभाव को धारण करना सम्भव है।

प्रेरित पौलूस ने लिखा,

फिलिप्पियों 2:12,13 – "इसलिए हे मेरे प्रियो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आएं हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके जब मेरे दूर रहने पर भी डरते और काँपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ; क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।

उद्धार के क्षण में हम अपनी आत्माओं में परमेश्वर के गुणों को धारण करते हैं लेकिन एक प्रक्रिया के द्वारा समय के साथ वे कार्य करते हैं तथा हमारे मनों एवं शरीरों का हिस्सा बन जाते हैं। सारे विश्वासी अपनी आत्माओं में उसके दिव्य स्वभाव के हिस्सेदार बन चुके हैं। लेकिन सिर्फ नई सृष्टि के प्रकाशन के द्वारा ही हम अपने प्राणों एवं शरीरों में उसके दिव्य स्वभाव के सहभागी बन जाते हैं।

सच्चाई के प्रकाशन के द्वारा जिससे यह प्रगट होता है कि उन्होंने पहले ही परमेश्वर के दिव्य स्वभाव को प्राप्त कर लिया है, विश्वासीगण्, जो कुछ पहले से ही उनका है उसके सहभागी बन सकते हैं और उसका आनन्द उठा सकते हैं।

जब हम परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं और विश्वास के द्वार उसके वचन की प्रतिज्ञाओं का दावा करते हैं तो सिर्फ तब ही हम अपने प्राणों एवं शरीरों में उसके दिव्य स्वभाव के सहभागी वास्तव में बन जाते हैं।

जबकि हमारी नई रुप से सृजित आत्माओं ने दिव्य स्वभाव को प्राप्त किया है, इस पाठ में हम सिखेंगे कि अपने प्राणों एवं शरीरों के क्षेत्र में उस के दिव्य स्वभाव के सहभागी कैसे बन सकते हैं।

उसके समान बनना

हम मसीह में उसके स्वरुप में होने के लिए पहले से ठहराए गए हैं।

रोमियों 8:29अ – "क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरुप में हों. . .।

नई सृष्टि की आत्मा परमेश्वर के स्वरुप में बनाई गई है, तथा मसीही लोग शरीरों एवं प्राणों में उसके स्वरुप में होने की प्रक्रिया में हैं।

बदलाव की प्रक्रिया

प्रेरित पौलूस ने रोमियों को लिखा, रोमियों 12:1,2 – "इसलिए हे भाईयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान

करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।"

नई सृष्टि के रुप में हमें अब इस संसार के सदृश नहीं होना है। जैसे जैसे हम परमेश्वर के पुत्र के स्वरुप मे हो रहे हैं हमें निरन्तर चलने वाली बदलाव की प्रक्रिया में जीवन बिताना है।

- *शरीरों को सौंपना*

हम अपने शरीरों को पूरी तरह से परमेश्वर को सौंप कर बदलाव की प्रक्रिया को प्रारम्भ करते हैं। हमारे शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर हैं और हमें उन्हें "एक जीवित बलिदान" के रुप मे परमेश्वर को सौंप देना चाहिए।

- *मनों का नया होना*

जैसा के हमारे शरीर बदलते जाते हैं, प्राणों को एक प्रक्रिया द्वारा जिसे मनों का नया होना कहा जाता है, नया होते जाना चाहिए।

यह बदलाव की प्रक्रिया जब होती है जब हम निरन्तर रुप से परमेश्वर के वचन को पढ़ते, सुनते, उस पर मनन करते, विश्वास करते, तथा उस पर कार्य करते हैं। यह पवित्र आत्मा का एक अलौकिक कार्य है।

इस अलौकिक प्रक्रिया के द्वारा हमारे शरीर एवं प्राण दिव्य स्वभाव के सहभागी बन जाते हैं।

परमेश्वर हम में कार्य कर रहा है:

पौलूस ने इतनी गहनता के साथ जैसे कोई स्त्री बच्चा जनने की पीड़ा मे होती है वैसे गलातियों के विश्वासीयों के लिए प्रार्थना की कि मसीह का रुप उन में बन जाए।

गलातियों 4:19 – "हे मेरे बालको, जब तक तुम में मसीह का रुप न बन जाए, तब, तक मैं तुम्हारे लिए फिर जच्चा की सी पीड़ाएँ सहता हूँ।

उसने फिलिप्पियों के विश्वासीयों से कहा कि परमेश्वर उन में कार्य कर रहा है।

फिलिप्पियों 2:13 – "क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।"

परमेश्वर तब तक अपनी नई सृष्टि के प्राणियों में कार्य करता रहता है जब तक कि वे उसके पुत्र के स्वरुप में नहीं बन जाते।

जितना हम उसे अपने अन्दर कार्य करने देते हैं उतना ही हम उसके समान बन जाते हैं।

विशेष नोट : हम पहले ही परमेश्वर की धार्मिकता तथा यह हमारे अन्दर किस प्रकार डाली गई इसके बारे में पढ़ चुके हैं। धार्मिकता परमेश्वर का एक गुण है। इस अध्याय में हम यह मानकर परमेश्वर के अन्य गुणों में आगे बढेंगे कि आप उसकी धार्मिकता तथा यह किस प्रकार हमारे उद्धार के क्षण में हम में डाली गई, इसके बारे में जानते हैं।

उसकी धार्मिकता में हिस्सा लेना

परमेश्वर पवित्र है

परमेश्वर की धार्मिकता एक अद्‌भुत, पूर्ण शुद्धता एवं सिद्धता है जो कि वर्णन से परे है। यह पाप एवं अशुद्धता से सम्पूर्ण अलगाव उत्पन्न करती है।

परमेश्वर अपने सम्पूर्ण सार में एवं अपने सारे मार्गों में पूर्णतः पवित्र है। स्वर्गदूत उसकी पवित्रता की घोषणा करते हैं।

यशायाह 6:3 – "वे एक दूसरे से पुकार पुकार कर कह रहे थे:"सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसके तेज से भपूर है।"

पवित्र बनने की आज्ञा दी गई

हमारी नई सृजित आत्मा उतनी ही पवित्र है जितना की परमेश्वर पवित्र है। पौलूस प्रेरित ने लिखा,

इफिसियों 1:4 – "जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम मे पवित्र और निर्दोष हों।"

याद रखें कि हमारे शरीर और प्राण मसीह के स्वरुप मे बनने की प्रक्रिया में हैं। हमें अपने प्रतिदिन के जीवनों में पवित्र होना है। यह व्यवहारिक पवित्रता है।

लैव्यव्यवस्था 19:2ब – "तुम पवित्र बने रहो ; क्यों मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूँ।"

हमें चुनना है कि हम अपने व्यवहार में पवित्र बनें हमें अपने जीवनों को पवित्र पात्रों के रुप में परमेश्वर को समर्पित करना चाहिए। हमें स्वयं को पाप के लिए मरा हुआ एवं यीशु के लिए जीवित समझना चाहिए।

यह एक व्यवहारिक पवित्रिकरण है एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें इस संसार की व्यवस्था से यीशु के लिए अलग होना है। यह हमारे प्रतिदिन के जीवन तथा व्यवहार में यीशु के समान बनना है।

1 पतरस 1:15,16 – "पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल चलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, "पवित्र बनों, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"

हमें पवित्र होने की आज्ञा दी गई है और हम परमेश्वर के पवित्रता के स्वभाव के भागीदार होकर ऐसा कर सकते हैं।

उसके प्रेम में सहभागी

परमेश्वर प्रेम है

परमेश्वर अपने स्वभाव ही से प्रेम है। वह समस्त प्रेम का श्रोत है।

1 यूहन्ना 4:16 – "जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उसको हम जान गए और हमें उसका विश्वास है। परमेश्वर प्रेम है, और जो प्रेम में बना रहता है वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उस में बना रहता है।"

परमेश्वर के प्रेम का मानवजाति के प्रति सबसे बड़ा प्रगटीकरण अपने कीमती पुत्र का उपहार था।

रोमियों 5:8 – "परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।"

यूहन्ना 3:6 – "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, बल्कि अनन्त जीवन पाए।"

चार प्रकार के प्रेम

क्योंकि आधुनिक जगत में "प्रेम" शब्द को बहुधा गलत समझा गया है, यह अच्छा होगा ही यूनानी भाषा प्रेम के लिए प्रयुक्त किए गए चार शब्दों को जाना जाए।

- *इरोज़*

"इरोज़" कामुक प्रेम है। इसका उपयोग नए नियम में ही है। यह उस प्रेम से सम्बन्ध रखता है जिसे परमेश्वर ने पति और पत्नि के बीच में होने के लिए रखा है, जिसका वर्णन श्रेष्ठगीत में किया गया है। परमेश्वर ने पत्नि और पति के अन्तरंग प्रेम सबन्धों के अतिरिक्त कहीं और इसकी मनाही की है।

- *स्टोर्ज*

"स्टोर्ज" काम रहित प्रेम है। यह पारीवारिक प्रेम और लगाव है। यह विशेषण "फिलोस्टोर्गोस" के मूल शब्द के रुप में प्रयुक्त किया जाता है जिसका अर्थ है कोमलता पूर्ण रुप से लगाव रखना।

रोमियो 12:10 – "भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे से स्नेह रखो ; परस्पर आदर करने मे एक दूसरे से बढ़ चलो।"

स्टोर्ज एक ऐसा लगाव है जिसे परिवार के सदस्य एक-दूसरे के लिए स्वाभाविक रुप से परिवार एवं परमेश्वर के परिवार दोनों के बीच दिखाते हैं।

- *फिलिया*

"फिलिया" गहरी गित्रता या किसी के प्रति गहरे जुडाव वाले प्रेम का नाम है। एक सम्बन्ध सूचक संज्ञा "फिलेमा" का अर्थ है "चुम्बन करना"। फिलिया एक बड़ी गर्मजोशी एवं लगाव वाला प्रेम है।

यूहन्ना 5:20अ – "क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखना है और जो जो काम वह आप करता है, वह सब उसे दिखाता है।"

फिलिया शब्द यीशु एवं लाजर के बीच सम्बन्धों का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त किया गया था।

यूहन्ना 11:3 – "अतः उसकी बहनों ने उसे कहला भेजा, हे प्रभु, देख, जिससे तू प्रीति रखता है, वह बीमार है।"

दूसरा सम्बन्ध सूचक शब्द है "फिलोस" जिसका अर्थ है किसी के लगाव में किसी को बहुत ही प्रिय होना।

यूहन्ना 15:13 – "इससे बडा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे।"

यह एक प्रकार का गहरा अन्तरंग प्रेम है जो पति और पत्नि एक दूसरे के लिए रखते हैं (फिलान्ड्रोस)।

यीशु का लाजर से जो निकतम एवं हार्दिक प्रेम सम्बन्ध था उसके अतिरिक्त यह दाऊद और योनातान के प्रेम सम्बन्धों में भी दृष्टिगोचर होता है। यह एक विशेष प्रेम है जो कि कुछ एक बहुत ही निकटतम दो व्यक्तियों के सम्बन्धों तक सीमित रहता है।

- *अगापे*

"अगापे" परमेश्वर का एक कामरहित प्रेम है जो कि आत्मा के एक फल के रुप में विश्वासी के जीवन में प्रगट होता है।

गलातियों 5:22,23 – "पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है ; ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।"

अगापे प्रेम अलौकिक प्रेम है। यह परमेश्वर का प्रेम है जो पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे ह्रदयों में, हमारे जीवनों के द्वारा, एवं दूसरों के प्रति हमारे व्यवहार के द्वारा प्रगट होता है।

क्योंकि यह प्रेम परमेश्वर की ओर से आता है इसलिए संसार इस प्रेम को सिर्फ हमारे–एक नई सृष्टि के द्वारा ही अनुभव कर सकता है। यह प्रेम हमारे पड़ोसियों, हमारे मित्रों एवं संसार को विचित्र प्रतीत हो मगर हमारे शत्रुओं के लिए भी होता है।

1 यूहन्ना 3:16 – "हम ने प्रेम इसी से जाना कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए, और हमें भी भाईयों के लिए प्राण देना चाहिए।"

सारांश

इरोज़ को परमेश्वर की व्यवस्था के द्वारा हमारे जीवनसाथी तक ही सीमित रखा गया है।

स्टोर्ज हमारे स्वाभाविक एवं आत्मिक परिवारों तक सीमित है।

फिलिया हमारे जीवनसाथी या निकतम करीबी मित्र तक सीमित है। जबकि नई सृष्टि के द्वारा परमेश्वर का अगापे प्रेम सबके लिए दिखाया गया है, जिसमें शत्रु भी शामिल हैं।

कार्यरुप में अगापे प्रेम

- *एक दूसरे से प्रेम करो*

परमेश्वर के दिव्य स्वभाव के अलौकिक रुप में हम में डाले जाने एवं आत्मा के एक फल के रुप में, नई सृष्टि की रचनाएं एक दूसरे से प्रेम करने वाले बन गए है।

रोमियों 13:8 – "आपस में प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है।"

यीशु ने कहा,

यूहन्ना 13:34,35 – "मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।"

एक बात जो सबसे बढ़कर यीशु के चेलों को औरों से अलग करती है वह प्रेम है जो वे एक दूसरे के लिए रखते हैं।

➢ *प्रेम का प्रेरित*

शिष्य वह है जो यीशु के अनुशासन के अधीन में आ चुका है। वह सिर्फ एक ईसाई होने से कुछ ज्यादा ही है। वो एक ऐसा व्यक्ति है जो कि विश्वास एवं आज्ञाकारिता के द्वारा यीशु की प्रेमपूर्ण स्वभाव के स्वरुप के अनुरुप हो गया है। एक शिष्य प्रेरित यूहन्ना के साथ यह कहेगा।

1 यूहन्ना 4:7 – "हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है।"

नई सृष्टियाँ, जो कि परमेश्वर के दिव्य स्वभाव की भागीदार हैं वे परमेश्वर के अगापे प्रेम में चलेंगी।

रोमियों 5:ब. . ."क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।

➢ *प्रेम की आज्ञा व्यवस्था में दी गई है*

मूसा की व्यवस्था ने आज्ञा दी है कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें।

लैव्यव्यस्था 19:18 – "पलटा न लेना, और न अपने जाति भाईयों से बैर रखना, परन्तु एक – दूसरे से अपने ही समान प्रेम रखना..."

नए सिरे से बनाए न गए स्त्री एवं पुरुष व्यवस्था को पूरा करने में अयोग्य थे। वे अपने आप में अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम नहीं कर सकते थे।

यीशु ने अपनी नई सृष्टियों को प्रेम की एक नई आज्ञा दी।

रोमियों 13:9 – "क्योंकि यह कि "व्यभिचार न करना, हत्या न करना, चोरी न करना, लालच न करना," और इनको छोड़ कोई भी आज्ञा हो सब का सारांश इस बात में पाया जाता है, "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।"

➢ *प्रेम द्वारा व्यवस्था पूरी की गई*

प्रेम के द्वारा व्यवस्था पूरी हुई।

रोमियों 13:10 – "प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिए प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है।"

पौलूस ने गलातियों को लिखा,

गलातियों 5:14 – "क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।"

अपने शत्रुओं से प्रेम रखना

परमेश्वर ने अपने महान प्रेम के स्वभाव में हमें तब प्रेम किया जबकि हम उसके शत्रु थे। नई सृष्टि के रुप में, हम में भी परमेश्वर के प्रेम का स्वभाव पाया जाता है। हमें

भी इस संसार के खोए हुए लोगों को प्रेम करना चाहिए तथा परमेश्वर के महान प्रेम तथा तरस को उनके साथ बाँटना चाहिए।

क्योंकि हम नई सृष्टि है, इसलिए हम परमेश्वर के प्रेमपूर्ण स्वभाव के भागीदार हैं। पवित्र आत्मा के द्वारा हम उन्हें भी प्रेम कर सकते हैं जो हमारे शत्रु हैं और हमें करना भी चाहिए।

मति 5:44 – "परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूँ कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो।"

यीशु हमें कभी ऐसी आज्ञा नहीं देगा जो हमारे लिए करना असम्भव हो। हमें अपने शत्रुओं को अगापे प्रेम के द्वारा प्रेम करना चाहिए।

- *अगापे प्रेम को प्रगट करना*

यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाया कि वे दूसरों पर – अपने शत्रुओं पर भी अगापे प्रेम को कैसे प्रगट करें।

लूका 6:27 – 30 – "परन्तु मैं तुम सुनने वालों से कहता हूँ कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो; जो तुम से बैर करे, उनका भला करो। जो तुम्हें श्राप दें, उनको आशीष दो; जो तुम्हारा अपमान करें, उनके लिए प्रार्थना करो। जो तेरे एक गाल पर थप्पड मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दें; और जो तेरी दोहर छीन ले, उसको कुरता लेने से भी न रोक। जो कोई तुझ से माँगे, उसे दे; और जो तेरी वस्तु छीन ले, उससे न माँग।"

प्रेरित पौलूस ने लिखा,

रोमियो 12:10, – "परन्तु" यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला, यदि प्यासा हो तो उसे पानी पिला; क्यों ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा।"

- *अगापे प्रेम का उदाहरण*

जब स्तिफनुस को उसके शत्रुओं के द्वारा पत्थरवाह किया तो उसने अलौकिक अगापे प्रेम का एक महान उदाहरण पेश किया।

प्रेरितों के कार्य 7:59, 60 – "वे स्तिफनुस पर पथराव करते रहे, और वह यह कह कर प्रार्थना करता रहा, "हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर।" फिर घुटने टेक कर ऊँचे शब्द से पुकारा, "हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा।" और यह कहकर वह सो गया।"

हम जो कि दिव्य स्वभाव के सहभागी है, पवित्र आत्मा के द्वारा इस अलौकिक प्रेम को दूसरों के लिए, यहाँ तक कि अपने शत्रुओं के लिए भी रख सकते हैं और हमें जरुर रखना चाहिए।

एक व्यक्ति जो अपनी भावनाओं में जीता है वह इस प्रकार के प्रेम का अनुभव कभी नहीं कर सकता। यह सिर्फ उनके द्वारा अनुभव किया और प्रगट किया जा सकता है जिन्होंने परमेश्वर के प्रेम का प्रकाशन अपने अन्दर पाया है।

➢ *प्रेम करने का चयन*

क्योंकि अपने शत्रुओं से प्रेम करना हमारी भावनाओं और हमारी स्वाभिकता के विपरीत है, तो हमें जिनमें परमेश्वर के प्रेम का स्वभाव पाया जाता है ऐसे प्रेम करने का चुनाव करना है जैसे परमेश्वर प्रेम करता है।

1 पतरस 1:22 – "अतः जबकि तुम ने भाई चारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन–मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो।"

परमेश्वर को प्रेम करने वाले

जिन्हें नई सृष्टि का प्रकाशन मिल चुका है कि वे मसीह में हैं, तथा वे उसके दिव्य स्वभाव के सहभागी हो चुके हैं, वे, सबसे बढ़कर परमेश्वर को प्रेम करने वाले होंगे।

वे सभी उसके वचन को मानने के द्वारा परमेश्वर को खुश करेंगे। वे परमेश्वर के आराधक होंगे।

नई सृष्टि के लोग परमेश्वर की सभी अद्भुत आशीषों के लिए उसकी निरन्त आराधना करेंगे। परमेश्वर जो कुछ है वे उसके कारण उसकी आराधना करेंगे। परमेश्वर की स्तूति निरन्तर उनके होठो पर बनी रहेगी।

भजन 42:1,2 – "जैसे हरिणी नदी के जल के लिए हाँफती है, वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिए हाँफता हूँ। जीवते ईश्वर, हाँ परमेश्वर, का मैं प्यासा हूँ, मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुँह दिखलाऊँगा।"

नई सृष्टि मसीह के अगापे प्रेम के साथ साथी अनुयाईयों की ओर अपने शत्रुयों, तथा स्वयं परमेश्वर की ओर आगे बढ़ेगी।

उसकी भलाई एवं दया में भागी होना

परमेश्वर भला है

परमेश्वर अपने स्वभाव ही से भला है।

भजन 52:1 ब – ". . . परमेश्वर की करूणा तो अनन्त है।"

परमेश्वर की भलाई ऐसी है जो कि पूर्णत: सिद्ध है। परमेश्वर की भलाई उसकी दया एवं अनुग्रह के द्वारा उसकी सारी सृष्टि के लिए प्रगट होती है।

परमेश्वर की दया एवं अनुग्रह

परमेश्वर की दया पापमय मनुष्य जाति के प्रति पूर्ण स्पष्ठ रुप से पूरी तरह तब दिखाई दी जब उसने अपने ही पुत्र को हमारे स्थान पर मरने के लिए दे दिया। दया की एक परिभाषा है:

➢ *"किसी व्यवस्था के तोड़ने वाले के दण्ड को सह जाना"*

परमेश्वर की दया परमेश्वर की भलाई है जो कि हमारी जरुरत के लिए प्रगट होती है। परमेश्वर दया में धनी है!

इफिसियों 2:4 – "परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस से उसने हम से प्रेम किया . . .।"

परमेश्वर को दया का पिता कहा गया है।

2 कुरिन्थियों 1:3 – "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जो कि दया का पिता और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है।"

➢ *अनुग्रह से बचाए गए*

अनुग्रह की एक परिभाषा यह है:

➢ *"मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर द्वारा बिना किसी योग्यता के पक्ष करना।*

यह उसके महान प्रेम का अन्य प्रगटीकरण है।

इफिसियों 2:5,8 – "जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है),।"

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है।"

➢ *अनुग्रह का सिंहासन*

अब हम एक नई सृष्टि के रुप में उसके सिंहासन के सम्मुख हियाव से आ सकते हैं।

इब्रानियों 4:16 – "इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बाँधकर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएँ जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।"

उसकी क्षमा के भागी होना

परमेश्वर क्षमा करता है

परमेश्वर के अनुग्रह एवं दया का सबसे बड़ा प्रगटीकरण उसकी क्षमा में पाया जाता है। उसकी क्षमा प्रत्येक पापी के लिए है, जब वे यीशु को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता-अपने व्यक्तिगत विकल्प के रुप में ग्रहण करते हैं।

इफिसियों 1:7 – "हमको उस मे उसके लहू के द्वारा छुटकारा अर्थात अपराधों की क्षमा उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।"

उसकी क्षमा विश्वासियों को तब प्राप्त होती है जब वे अपने पापों का अंगीकार करते हैं।

1 यूहन्ना 1:9 – "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धमी। है।"

परमेश्वर की क्षमा उसकी दया एवं अनुग्रह उसके दिव्य स्वभाव का सबसे बड़ा प्रगटीकरण है।

नए नियम में क्षमा का अर्थ है;

➢ *अपने से दूर भेज देना*

➢ *किसी के कर्ज या गुणाह को पूरी तरह मिटा देना जैसे कि पूरी तरह रद्द कर दिया गया हो।*

> *पापों से या गुणाहों से छुड़ाना या छुटकारा देने के द्वारा बिना शर्त के पक्ष दर्शाना।*

परमेश्वर माफ करता है और वह भूल जाता है। उसकी क्षमा यीशु के छुटकारे के कार्य पर आधारित होती है, जिसने न सिर्फ हमारे पापों का दण्ड चुकाया बल्कि हमारे पापों को हमसे दूर पृथ्वी की गहराईयों में ले गया, ताकि उन्हें कभी याद न किया जा सके या हमारे विरुद्ध रखा न जा सके।

इब्रानियों 8:12 – "क्योंकि मैं उनके अधर्म के विषय में दयावन्त हूँगा और उनके पापों को फिर स्मरण न करूँगा।"

हमें क्षमा करना चाहिए

परमेश्वर के दिव्य स्वभाव के सहभागी होने के नाते, हम जो कि नई सृष्टि हैं, दूसरों की तरफ परमेश्वर की दया एवं अनुग्रह से आगे बढेंगे। हम ऐसे क्षमा करेंगे जैसे परमेश्वर क्षमा करता है।

इफिसियों 4:32 – "एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।"

> *निरन्तर क्षमा करते रहो*

यद्यपि कोई व्यक्ति हमारे विरुद्ध निरन्तर पाप करता रहे, हमें निरन्तर क्षमा करते रहना चाहिए।

मति 18:21,22, – "तब पतरस ने पास आकर उस से कहा, "हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूँ? क्या सात बार तक?"

"यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार तक वरन् सात बार के सत्तर गुने तक।"

नई सृष्टि के रुप में, हम क्षमा कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर के दिव्य स्वभाव के सहभागी हैं। हम क्षमा कर सकते हें और हमें अवश्य क्षमा करना चाहिए, क्योंकि यीशु ने क्षमा कर दिया।

> *क्षमा करने का चयन करना*

क्षमा करना एक चुनाव है। यह परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता का एक कार्य है। जब हम ऐसा करने के लिए महसूस करें, हमें तब तक का इन्तजार नहीं करना चाहिए। हमें परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए तथा क्षमा करने का एक निर्णय लेना चाहिए क्योंकि परमेश्वर ने अपनी दया एवं अनुग्रह में हमें क्षमा किया है।

लूका 23:34अ – "तब यीशु ने कहा, "हे पिता उन्हें क्षमा कर, क्योंकि नहीं जानते कि वे क्या करते हैं।"

यीशु हमारा आदर्श है क्योकिं उसने क्षमा किया और वो हम में है तो हम भी क्षमा कर सकते हैं।

क्षमा किए जाने के लिए क्षमा करें

इसी यीशु ने कहा

मरकुस 11:25 – "और जब कभी तुम खडे हुए प्रार्थना करते हो तो यदि तुम्हारे मन में किसी के प्रति कुछ विरोध हो, तो क्षमा करोः इसलिए कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे।"

मसीह में एक नई सृष्टि होने के कारण परमेश्वर के प्रेम, दया और अनुग्रह के दिव्य स्वभाव को रखते हुए हम भी उन सब को क्षमा करने में सक्षम है जिन्होंने हमारे या हमारे प्रियों के विरुद्ध पाप किया है। हमें क्षमा करने की आज्ञा दी गई है ताकि हमें क्षमा किया जा सके।

निष्कर्श

नई सृष्टियों के रुप में हमारी आत्माओं में परमेश्वर का जीवन एवं स्वभाव पाया जाता है। जैसे जैसे हम उसके पुत्र के स्वरुप की समानता में होते जाते हैं। हमारे प्राण तथा शरीर परमेश्वर के दिव्य सव्भाव के सहभागी होते जाते हैं।

हमारी भूमिका यह है कि हम अपने शरीरों को परमेश्वर के लिए जीवित बलिदान के रुप में समर्पित करें, परमेश्वर के वचन में समय बिताएं, उसके शिक्षकों की सुनें ताकि हमारे प्राण परमेश्वर के वचन के प्रकाशन के द्वारा नए रुप में बदल जाएं।

हमें परमेश्वर की धार्मिकता, पवित्रता, प्रेम एवं भलाई के सहभागी बनना है। हमें उसके अनुग्रह एवं दया के तब तक सहभागी बनना है जब तक कि हम उसके समान दूसरों को क्षमा करने वाले न बन जाएं।

नई सृष्टि के रुप में, हमारी आत्माओं ने परमेश्वर के दिव्य स्वभाव के हिस्से को प्राप्त किया है। हमारे जीवनों में परमेश्वर के वचन की बदल देने वाली शक्ति के कारण, हमारे प्राण एवं शरीर परमेश्वर के दिव्य स्वभाव के सहभागी बन रहे हैं।

पुनः विचार के लिए प्रश्न

1. उस प्रक्रिया का वर्णन करो, जिसके द्वारा हम परमेश्वर के दिव्य स्वभाव के सहभागी बन सकते हैं।

2. जब आप परमेश्वर के दिव्य स्वभाव के सहभागी बन जाते हैं तो आप अपने व्यवहार, सम्बन्धों तथा दूसरों के प्रति प्रतिक्रिया में किस प्रकार के बदलावों की अपेक्षा करेंगे?

3. यह क्यों महत्वपूर्ण है कि जितने लोगों ने हमारे विरुद्ध पाप किया है हम उन उबको क्षमा करें?

<u>पाठ दस</u>

परमेश्वर का वचन एवं नई सृष्टि

परमेश्वर का वचन

परिचय

नई सृष्टि का प्रकाशन परमेश्वर के वचन में पाया जाता है। उसका वचन यीशु तथा उसमें हमारी स्थिति को प्रगट करता है। हमारे प्राणों का नया बनाया जाना सिर्फ परमेश्वर के वचन की सामर्थ के द्वारा हमारे मनों के नया किए जाने के द्वारा ही होता है।

यह नया बनाए जाने की प्रक्रिया तब आती है जब हम परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं तथा स्वयं को ऐसा ही देखते हैं जैसे परमेश्वर हमें देखता है। हम अपने ऊपर परमेश्वर के वचन की घोषणा जैसे जैसे बार बार करते जाते हैं, हमारी कल्पनाएं परमेश्वर के स्वरुप के समान बनना प्रारम्भ हो जाएंगी। हमारा विश्वास बढेगा, तथा हम अपने आप को एक नई सृष्टि के रुप में वह सब करते एवं रखते हुए देखना प्रारम्भ कर देंगे, जो परमेश्वर हमारे विषय में कहता है।

यीशु, जीवित वचन

यीशु एवं वचन एक हैं। उसके वचन को जानना उसे जानना है।

यूहन्ना 1:1, 14–"आदि मे वचन था, और वचन परमेश्वर था।. . . और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।"

यीशु परमेश्वर का वचन है, और वचन यीशु का प्रकाशन है। यीशु बाईबल की प्रत्येक पुस्तक में प्रगट किया गया है। वचन पर मनन करना यीशु से मुलाकात करना है।

जब यीशु हम पर प्रगट होगा तो हम उसके समान हो जाऐंगे।

1 यूहन्ना 3:2–"हे प्रियो, जब हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे। इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।"

परमेश्वर के वचन को समझने के द्वारा ही हम नई सृष्टि के जीवन बदल देने वाले प्रकाशन को खोज पाते हैं।

प्रेरणा के द्वारा दिया गया

बाइबल परमेश्वर के द्वारा लिखी गई हैं। यह मात्र एक ऐसी पुस्तकों का सग्रह नहीं है जो विभिन्न युगों में भिन्न-भिन्न मनुष्यों के द्वारा लिखी गई, बल्कि यह परमेश्वर की श्वाँस एवं परमेश्वर की प्रेरणा है।

2 तीमुथियुय 3:16,17–"सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणो से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने और धर्म की शिक्षा के

लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"

जो मूल शब्द जिसका अनुवाद "परमुश्वर की प्रेरणा" हुआ है उसका अर्थ है "परमेश्वर की श्वाँस"।

जब परमेश्वर ने अपनी श्वॉस को आदम में फूँका, तो आदम एक जीवित प्राणी बन गया। आदम के अन्दर स्वयं परमेश्वर का ही जीवन था।

उसी प्रकार परमेश्वर ने अपना श्वॉस अपने वचन में फूँक दिया। परमेश्वर का वचन पूर्ण एवं सिद्ध है क्योंकि यह पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित है।

2 पतरस 1:20,21,–"पर पहले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।"

जीवित एवं शक्तिशाली

परमेश्वर का वचन परमेश्वर के जीवन के द्वारा जीवित है। वचन परमेश्वर की पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा हमारे जीवनों को बदलने की सामर्थ रखता है।

इब्रानियों 4:12–"क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है; और प्राण और आत्मा को, और गाँठ–गाँठ और गूदे–गूदे को अलग करके आर–पार छेदता है और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।"

परमेश्वर का जीवन पाया जाता है

परमेश्वर का जो जीवन परमेश्वर के वचन में फूंका गया था वह परमेश्वर की उपस्थिति एवं सामर्थ के द्वारा आज भी उतना ही जीवित है जितना यह अपने लिखे जाने के समय था। परमेश्वर का जो जीवन उसके वचन में है, उनके जीवनों में निरन्तर प्रवाहित होता रहता है जो इसमें अपना समय बिताते हैं।

नीतिवचन 4:20–22–"हे मेरे पुत्र, मेरे वचन ध्यान धर के सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा। इनको अपनी आँखों की ओट न होने दे; वरन अपने मन में धारण कर। क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का, और उनके शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं।"

वचन के द्वारा जीवित रहना

नई सृष्टि परमेश्वर के वचन के द्वारा जीवित रहती है।

मति 4:4–"यीशु ने उत्तर दिया, "लिखा है, 'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।"

नई सृष्टि को वचन में जीवित रहना है, इसमे दिन और रात बने रहना है।

यहोशू 1:8–"व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"

प्रबल होने वाला वचन

जब हम परमेश्वर के जीवित वचन को पढ़ते मनन करते, विश्वास करते, मान लेते और उस पर कार्य करते हैं तो यह ऐसे ही प्रबल होगा जैसे यह इफिसुस नगर में हुआ था।

पौलूस ने टायरेनुस के स्कूल में परमेश्वर के वचन को प्रतिदिन सिखाया।

प्रेरितों के कार्य 19:10–12–"दो वर्ष तक यही होता रहा, यहाँ तक कि आसिया के रहने वाले क्या यहूदी क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया।

परमेश्वर पौलूस के हाथों से सामर्थ्य के अनोखी काम दिखाता था: यहाँ तक कि लोग रुमाल और अंगोछे उसकी देह से स्पर्श करा कर बीमारों पर डालते थे, और उनकी बीमारियाँ जाती रहती थीं; और दुष्टात्माएँ उनमें से निकल जाया करती थीं।"

जैसे जैसे पौलूस इफिसुस में वचन को सिखाता अैर प्रचार करता रहा, सामर्थ्य की बातें लगातार होती रहीं।

प्रेरितों के कार्य 19:17–20–"यह बात इफिसुस के रहने वाले सब यहूदी और यूनानी भी जान गए, और उन सब पर भय छा गया; और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई हुई। जिन्होंने विश्वास किया था, उन में से बहुतेरों ने आकर अपने अपने कामों को मान लिया और प्रगट किया। जादू करने वालों में से बहुतों ने अपनी–अपनी–पोथियाँ इक्ट्ठी करके सब के सामने जला दीं, और जब उनका दाम जोडा गया, तो पचास हजार चाँदी के सिक्कों के बराबर निकला। इस प्रकार प्रभु का वचन बलपूर्वक फैलता और प्रबल होता गया।"

यदि हम परमेश्वर के वचन में बने रहें इसे पढ़े और इस पर रात और दिन मनन करें, विश्वास करें, बोलें तथा इस पर हियाव के साथ कार्य करें, तो परमेश्वर के वचन का प्रकाशन सामर्थ्य के साथ बढ़ेगा तथा हमारे जीवनों एवं शहरों में प्रबल होगा जैसा कि यह इफिसुस और एशिया माइनर में हुआ।

हमारे जीवनों में परमेश्वर के वचन का महत्व

आत्मा को भोजन देता है

परमेश्वर का वचन हमारी आत्माओं में विश्वास को डालता है, और यह परमेश्वर के लिए तथा एक दूसरे के लिए हमारे प्रेम को निर्मित करता है। परमेश्वर का वचन जो कि हमारी नई सृष्टि की आत्मा को भोजन देता है वह शरीर को पोषण देने वाले भोजन से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।

अय्यूब 23:12–"उसकी आज्ञा का पालन करने से मैं न हटा, और मैं ने उसके वचन अपनी इच्छा से कहीं अधिक काम के जानकर सुरक्षित रखे।" यिर्मयाह 15:16अ–"जब तेरे वचन मेरे पास पहुँचे, तब मैंने उन्हें मानो खा लिया, और तेरे वचन मेरे मन के हर्ष और आनन्द का कारण हुए. . .।"

मति 4:4 – "यीशु ने उत्तर दिया:"लिखा है, मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।' "

स्वीकृति लाता है

जैसा कि पौलूस ने तीमुथियुस को करने की आज्ञा दी ठीक वैसे ही परमेश्वर चाहता है कि हम उनके वचन का अध्ययन करें और उसके वचन को जानें।

2 तीमुथियुस 2:15 – "अपने आप को परमेश्वर के वचन का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"

हमारे विश्वास को निर्मित करता है

विश्वास परमेश्वर के वचन को पढ़ने एवं सुनने के द्वारा आता है।

रोमियों 10:17 – "अत: विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।"

परमेश्वर के वचन पर मनन करना

यह महत्त्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर के वचन पर मनन करें ना कि हमारी पृष्ठभूमि, कमजोरियों, योग्यताओं की कमी परिस्थितियों या समस्याओं पर। यदि हम निरन्तर अपने विचारों को इन्हीं नाकारात्मक सोचों पर केन्द्रित रखेंगे तो हमारे मन नए नहीं होंगें

फिलिप्पियों 4:8,9 – "इसलिए हे भाईयों, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं और जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात जो भी सद्‌गुण और प्रशंसा की बातें हैं उन पर ध्यान लगाया करो। जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं, और ग्रहण कीं, और सुनीं, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा।"

परमेश्वर के वचन पर मनन करना हमारे मनों के नए हो जाने के द्वारा परिवर्तित होते जाने की कुंजी है।

भजन 1:1–3 – "क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता ; और न ठट्‌ठा करने वालों की मण्डली में बैठता है। परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है। वह उस वृक्ष के समान है जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है, और अपनी ऋतु मे फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिए जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है।"

जब नई सृष्टि का व्यक्ति दिन और रात परमेश्वर के वचन पर मनन करता है तो उसके जीवन में एक बदलाव आता है।

पद तीन में ऐसे चार परिणाम दिए गए हैं जो कि उस व्यक्ति के जीवन मे आते हैं जो कि निरन्तर परमेश्वर के वचन पर मनन करता रहता हैं

- **स्थिरता** - *उनकी जड़ों को निरन्तर पानी की आपूर्ति मिलती रहेगी।*
- **फलवन्ता** - *वे अपनी उपयुक्त ऋतु मे फल लाएंगे।*
- **भरोसे के लायक** - *उनके पत्ते नहीं मुर्झाएंगे*
- **सम्पन्नता** - *जो कुछ वे करते हैं वह सफल होगा।*

हमारे मनों को नया करने के लिए

जैसे जैसे हम परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं हम अपने मनों के नए हो जाने के द्वारा बदलते जाते हैं।"

रोमियों 12:2अ – "इस संसार के सदृश न बनों ; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए. . . ।"

परमेश्वर के वचन पर मनन करने के द्वारा बदलाव आता है। हमारे प्राण (बुद्धि, भावनाएं, और इच्छाएं) वह बनने के लिए बदलती जाती हैं जो हमारी आत्माएं उद्धार के समय बन गई थीं।

राजा सुलेमान ने लिखा

नीतिवचन 23:7अ – "क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है . . .।"

जब हम परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं तो एक रुपान्तरण होता है। हमारे पुराने शरीरिक स्वभाव का कीडा बदल कर एक सुन्दर तितली में रुपान्तिरित होकर मसीह के स्वरुप में हो जाता है।

मनन का अर्थ है

- *ध्यान केन्द्रित करना*

जब हम परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं, तो परमेश्वर ने जो शब्द कहे हैं हम अपना पूरा ध्यान उन पर केन्द्रित करते हैं। हम बार-बार अपने आप के लिए दोहराते हैं।

1 तीमुथियुस 4:15 – "इन बातों को सोचता रह और इन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह, ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हों"

- *मानसिक चित्रण करना*

जब हम परमेश्वर के वचन पर निरन्तर मनन करते रहते हैं, तो हम नई सृष्टि का मानसिक चित्रण करने लगते हैं। हम स्वयं को ऐसे देखने लगते हैं जैसे परमेश्वर हमे देखता है।

- *जो वो हमारे विषय में कहता है कि हम हैं वो होना*
- *जो वो कहता है कि हम कर सकते हें उसे करना*
- *जो वो हमारे विषय में कहता है कि हम रख सकते हें उसे रखना*

प्रेरित पौलूस ने तीमुथियुस को लिखा कि जब वो वचन पर मनन करता है तो उसकी उन्नति सब पर प्रगट होगी।

1 तीमुथियुस 4:15 – "इन बातों को सोचते रह और इन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह, ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो।"

यहोशु ने कहा कि सबसे पहले हमें दिन और रात उसके वचन पर मनन करना है, और फिर हमें जो वो कहता है उसे करना है, और अन्ततः हमारे मार्ग सम्पन्न होंगे और हमें अच्छी सफलता मिलेगी।

यहोशू 1:8 – "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी मे दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे ; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"

जब हम यीशु को वैसा ही देखना प्रारम्भ कर देते हैं जैसा कि वो है, यह समझते हुए कि हम उसमें एक नई सृष्टि हैं, तो हम स्वयं को ऐसा देखना प्रारम्भ कर देंगे जैसा कि वह स्वयं है। यूहन्ना ने लिखा कि हम उसके समान होंगे। क्या ही अद्‌भुत प्रतिज्ञा है।

1 यूहन्ना 3:2 – "हे प्रियो, अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे। इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह हैं।"

जब हम मनन करते हैं हम अपने आप से बार-बार परमेश्वर के वचन को जो वो हमारे विषय में कहता है तब तक बोलते रहते हैं जब तक कि वो हमारे जीवनों में एक सच्चाई नहीं बन जाती।

➢ *मूँह से कहना*

मनन के लिए इब्रानी शब्द का अर्थ है "मूँह में कहना"। जब हम परमेश्वर के वचन को बार-बार अपने आप पर कहते, या घोषित करते हैं तो यह परमेश्वर के वचन की सामर्थ्य को कार्य रुप में हमारे जीवनों में छोड़ देता है।

यशायाह 59:21 – "यहोवा यह कहता है, "जो वाचा मैंने उनसे बाँधी है वह यह है कि मेरा आत्मा तुझ पर ठहरा है, और अपने वचन जो मैंने तेरे मुँह में डाले हैं अब से लेकर सर्वदा तक वे तेरे मूँह से और तेरे पुत्रों और पोतों के मुँह से भी कभी न हटेंगे।"

जब हम परमेश्वर के वचन को अपने आप पर कहते, या घोषित करते हैं तो हम पाएंगे कि वह हमारे मनों पर ऐसी अमिट छाप छोडता है कि हम इसे कण्ठस्य कर लेते हैं।

➢ *कल्पना करना*

जब हम निरन्तर रुप से नई सृष्टि से सम्बन्धित परमेश्वर की सच्चाईयों पर मनन करते हैं तो यह हमारी कल्पनाओं को परमेश्वर जैसा स्वरुप निर्मित करने के लिए स्वतंत्र कर देता है। हम परमेश्वर के विचारों को सोचना प्रारम्भ कर देते हैं तथा स्वयं को परमेश्वर की आँखों के द्वारा नई सृष्टि के रुप में देखना प्रारम्भ कर देते हैं।

यशायाह 55:8,9 – "क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में आकाश और पृथ्वी का अन्तर है।"

➢ *आत्मसात करना*

हम परमेश्वर की बुद्धि एवं प्रकाशन को आत्म सात करना या समझना प्रारम्भ कर देंगें

इफिसियों 1:17,18 – "कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे और तुम्हारे मन की आँखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसकी मीरास की महिमा का धन कैसा है।"

परमेश्वर का वचन

नए नियम में ऐसे दो महत्त्वपूर्ण शब्द पाए जाते हैं जिनका उपयोग परमेश्वर के वचन के लिए हुआ है।

पहला है लोगोस, जो कि परमेश्वर का लिखित वचन है। और दूसरा रेमा है, जो कि परमेश्वर का कहा हुआ वचन है।

➢ *लोगोस*

लोगोस ऐसा शब्द है जो सम्पूर्ण बाईबल के लिए प्रयुक्त हुआ है। ये परमेश्वर के सामान्य वचन हैं जो सभी लोगों के लिए दिए गए हैं।

➢ *रेमा*

रेमा परमेश्वर का व्यक्तिगत रुप से मुझसे बोला गया वचन है। रेमा एक अलौकिक प्रकाशन है जो कि व्यक्तिगत रुप से हमारे पास पवित्र आत्मा के प्रकाशन के द्वारा आता है जब कि हम लोगोस पर मनन कर रहे होते हैं।

जब रेमा आता है तो यह ऐसा होता है जैसे कि कोई प्रकाश हमारी आत्माओं में प्रवेश करता है। हम जानते हैं कि परमेश्वर ने हम से व्यक्तिगत रुप से बात की है। यह रेमा वचन है जो कि हम पर पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकाशित हुआ लोगोस वचन है, जो कि हमारे विश्वास को स्वतंत्र करता है।

परमेश्वर के वचन की घोषणा करने की सामर्थ्य

प्रेरित पौलूस ने लिखा कि विश्वास सुनने से और सुनना परमेश्वर के वचन से होता है। हम परमेश्वर के वचन को अपने लिए पढ़ने के द्वारा, अपने ऊपर दोहराने के द्वारा तथा अच्छी शिक्षाओं के द्वारा सुनते हैं।

यदि हम अपने जीवनों में किसी जरुरत को पाते हैं तो हमें उस आवश्यक्ता का उत्तर देने वाले पद को बाईबल में से प्राप्त करना चाहिए तथा उन्हें बार-बार पढ़ना चाहिए। विश्वास सुनने से और सुनना परमेश्वर के रेमा वचन से आता है। जब हम इन वचनों को बार बार पढ़ते या उद्धृत करते हैं तो अचानक हम जिस परिस्थिति में होते हैं वे वचन उससे अधिक वास्तविक हो जाते हैं। विश्वास आ जाता है।

जब पवित्र आत्मा के द्वारा हमारी आत्माओं में इसे प्रगट किया एवं डाला जाता है तो लोगोस वचन हमारे लिए परमेश्वर का व्यक्तिगत रेमा वचन बन जाता है। जिस पल हम इस प्रकाशन को प्राप्त करते हैं, तभी विश्वास हमारी आत्माओं में उछल पड़ता है।

रामियों 10:17 – "अत:विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।"

जब परमेश्वर के रेमा से हमारी समझ प्रकाशमान होती है तो हम इस ज्ञान को प्राप्त करते हैं कि वास्तव में हम यीशु में कौन हैं। हम नई सृष्टि में बदलते जाएंगे।

परमेश्वर के वचन की घोषणा करना

परमेश्वर के रेमा वचन की घोषणा करने का कार्य परमेश्वर के वचन को अंगीकार करना भी कहलाता है। अंगीकार करने के लिए जो यूनानी शब्द प्रयोग किया गया है वह है "होमो-लोगियो"। परमेश्वर के वचन को अंगीकार करने का अर्थ है:

- *ठीक वही बात कहना*
- *सहमत होना*
- *किसी के साथ एक मत होना*

हम में से प्रत्येक के साथ यही होता है जब हम सुसमाचार के रेमा प्रकाशन को प्राप्त कर लेते हैं। हम ने यह विश्वास किया एवं अंगीकार किया है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है कि वह हमारे स्थान पर मारा गया, और यह कि वह मृतकों में से जी उठा।

रोमियो 10:9,10 – "कि यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुँह से अंगीकार किया जाता है।"

- *मैं विश्वास करता हूँ-मैं बोलता हूँ*

जिस क्षण हम विश्वास करते हैं, हमें कहना है, हमें वह अंगीकार करना है जो हम पर प्रगट किया गया है। विश्वास की एक आत्मा होती है जो कि कहती है कि मैं विश्वास करता हूँ इसलिए मैं बालता हूँ।

2 कुरिन्थियों 4:13 – "इसलिए कि हम में वही विश्वास की आत्मा है, जिसके विषय लिखा है, "मैंने विश्वास किया इस लिए मैं बोला।" अत: हम भी विश्वास करते हैं, इसी लिए बोलते हैं।"

- *गलत समझा गया अंगीकार*

बहुत से लोगों ने इसे गलत समझा है तथा जिस चीज की उन्होंने चाह की है उसका बार-बार अंगीकार करने की कोशिश की है। उन्होंने एक ऐसे पवित्र वचन को अपनी चाहत को समर्थन देने के लिए खोज लिया जिस से वे परमेश्वर पर अपनी स्वयं की चाहत पूरी करने के लिए दबाव डाल सकें।

यह रेमा होता है जो परमेश्वर हम पर व्यक्तिगत और विशेष रुप से प्रगट करता है, जो हमारे विश्वास को बढ़ाता है जिसके द्वारा हम उसको अंगीकार करते और दया

करते हैं जो उचित रुप से हमारा है। यह रेमा ही होता है जिसे हमें नई सृष्टि के रुप में हिम्मत के साथ घोषित करना है। जब हम परमेश्वर प्रदत्त इन वचनों को बोलते हैं तो सामर्थ्यपूर्ण बातें होना प्रारम्भ हो जाती हैं।

परमेश्वर ने बोलने के द्वारा सृष्टि की

हम परमेश्वर के स्वरुप मे बनाए गए हैं। परमेश्वर सृष्टिकर्त्ता है तथा उसने वचन बोलने के द्वारा सृष्टि की है।

इब्रानियों 11:3 – "विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के ववन के द्वारा हुई है। पर यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।"

हम परमेश्वर की रचनात्मक शक्ति के क्रियात्मक रुप को उत्पत्ति के प्रथम अध्याय में देखते हैं जहाँ "और परमेश्वर ने कहा," वाक्यांश कई बार दोहराया गया है।

हम बोलने के द्वारा रचना करते हैं

हम भी जो कि नई सृष्टि हैं, जो वचन हम बोलते हैं उसके द्वारा सृष्टि करते हैं।

नीतिवचन 18:20–"मनुष्य का पेट मुँह की बातों के फल से भरता है; और बोलने से जो कुछ प्राप्त होता है उससे वह तृप्त होता है।"

- *जीभ की ताकत*

हमारे शब्द ऐसे हो सकते हैं जो हमारे ऊपर श्राप लाते हैं, या वे जीवन के वचन भी हो सकते हैं।

नीतिवचन 18:21–"जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं, और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा।"

जिसे परमेश्वर ने बनाया है हम एक ऐसी नई सृष्टि होने के कारण हम शब्दों के द्वारा रचना करते हैं। जीभ की शक्ति के द्वारा या तो हम जीवन के शब्द निकाल सकते हैं या मृत्यु के शब्द।

एक नई सृष्टि होने के नाते, हमें अपने मूँह की चौकसी करनी चाहिए और सावधान होना चाहिए कि हम क्या बोलते हैं। हमे अपने बोलने के तरीके को बदलने की जरुरत पड़ सकती है। हमें अपने मूँह से मृत्यु या बुराई के नाकारात्मक शब्द अब आगे को नहीं आने देने चाहिए।

वचन की घोषणा करना

जब हम परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं तो, हमारी आत्माओं में विश्वास जाग्रत हो जाएगा; और परमेश्वर अपने वचन हम पर प्रगट करेगा। तब हम हियाव के साथ वह घोषित करेंगे जो परमेश्वर ने अपने वचन में कहा है।

1 पतरस 4:11अ–"यदि कोई बोले तो ऐसा बोले मानों परमेश्वर का वचन है।"

- *पर्वतों से कहो*

यीशु ने एक ऐसे विश्वास के महत्व को बताया जो बोलता है, और परमेश्वर के वचन की घोषणा करता है।

मरकुस 11:22–24–"यीशु ने उस को उत्तर दिया, परमेश्वर पर विश्वास रखो। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे, 'तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड, और अपने मन में सन्देह न करे, वरन प्रतीति करे कि जो कहता हूँ वह हो जाएगा, तो उसके लिए वही होगा।"

"इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके माँगो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिए हो जाएगा।"

- *विश्वास करो कि हमे मिल गया*

जब हमने परमेश्वर के रेमा के प्रकाशन को अपनी नई जन्मी आत्माओं में प्राप्त कर लिया होता है तो हम यह विश्वास करेंगे कि जो कुछ परमेश्वर ने हमसे कहा है हम वो प्राप्त करेंगे। हम अपने जीवन की परिस्थितियों के पहाड़ों से बोलना प्रारम्भ कर देंगे। नई सृष्टि के व्यक्ति के पास जो वह कहता है वो होगा।

नई सृष्टि की घोषणाएं

जिन्होंने नई सृष्टि के प्रकाशन को प्राप्त कर लिया है वे अपनी नई सृष्टि के अधिकारों एवं सुअवसरों की घोषणा करना प्रारम्भ कर देंगे।

हियाव के साथ घोषणा करें

"मैं जानता हूँ कि मसीह में मैं कौन हूँ!
मैं एक नई सृष्टि हूँ!
पुरानी बातें बीत गई हैं
सब बातें नई हो गई हैं!
मैं मसीह यीशु में परमेश्वर की धार्मिकता हूँ।
इसलिए अब कोई दण्ड की आज्ञा नहीं क्योंकि मैं मसीह यीशु में हूँ।
मैं अब्राहम के विश्वास का बीज हूँ। अब्राहम को प्रतिज्ञा की गई समस्त आशीष मेरी हैं।
परमेश्वर ने मुझे भय का आत्मा नहीं दिया है, बल्कि सामर्थ्य, और प्रेम और संयम का आत्मा दिया।
मसीह यीशु जो मुझे सामर्थ्य देता है उसके द्वारा मैं सब कुछ कर सकता हूँ। जो कार्य यीशु ने किए, वे मैं भी कर सकता हूँ।
प्रभु का आनन्द मेरी ताकत है। वचन कहता है कि, "दुर्बल कहे कि वो शक्तिशाली है।"
इसलिए मैं शक्तिशाली हूँ! निश्चित रुप से यीशु ने मेरी बीमारियों, रोगों, एवं पीडाओं को उठा लिया है, ताकि आगे को उन्हें कभी सहना न पड़े।
यीशु के कोडों के द्वारा मैं चंगा हो गया हूँ।
इनमें से कोई भी बीमारी मुझ पर नहीं आएगी।
परमेश्वर की सबसे बढ़कर यह इच्छा है कि मैं सम्पन्न बनूँ और अच्छे स्वास्थ्य में रहूँ।

मेरा परमेश्वर अपने महिमा के धन के अनुसार मेरी सारी
आवश्यकताएं पूरी करेगा!
परमेश्वर ने ही मुझे सम्पत्ति प्राप्त करने की ताकत दी है!
मैंने वापस परमेश्वर को दे दिया है और वह वापस अपनी आर्थिक
आशीषों को बढ़ा कर उमण्डती हुई माप में मुझे दे देगा!
जो कुछ भी मैंने बोया है, उसे मैं काटूँगा भी!
मैं अन्दर आते समय आशीषित हूँ, और बाहर जाते समय आशीषित
हूँ!
मैं अपने हाथों को जो भी कुछ करने के लिए लगाऊँगा उसे
परमेश्वर के द्वारा आशीषित किया जाएगा!
मैं यीशु मसीह में एक नई सृष्टि हूँ!"

निष्कर्य

जब हम परमेश्वर के वचन को पढ़ते, सुनते, अध्ययन करते एवं मनन करते हैं तो हमारे हृदयों में विश्वास निर्मित होता है। नई सृष्टि के रुप में हम परमेश्वर की सृजनात्मक शक्ति को निकालना प्रारम्भ कर देते हैं। जब हम बोलते हैं तो विश्वास के द्वारा हम उस वचन की घोषणा करते हैं।

परमेश्वर का वचन जीवित और शक्तिशाली है। इसमें परमेश्वर का जीवन पाया जाता है। जब हम नई सृष्टि के प्रकाशन की घोषणा करते हें तो हम परमेश्वर के स्वभाव के सहभागी बन जाते हैं।

जैसे जैसे हम परमेश्वर के वचन के प्रकाशन की घोषणा करते रहते हैं, हम स्वयं को नई सृष्टियों के रुप में पाते हैं,

"जो कुछ परमेश्वर हमारे विषय में कहता है कि हम हैं,
वो होना, जो कुछ परमेश्वर कहता है कि हम कर सकते हैं,
उसे करना, जो कुछ परमेश्वर कहता है कि हम प्राप्त कर सकते हैं,
उसे प्राप्त करना!
नई सृष्टि का प्रकाशन हमारे जीवनों में एक वास्तविकता बन जाता है।"

पुनः विचार के लिए प्रश्न

1. हमें कैसे परमेश्वर के वचन पर मनन करना है, इसका वर्णन करें।

2. लोगोस और रेमा में अन्तर का वर्णन करो।

3. अपने मुँह से परमेश्वर के वचन की घोषणा करना बोलना और अंगीकार करना क्यों महत्वपूर्ण है?